डा0 इक़तिदा हुसैन जाफ़री ''आमिर''
जदीद
मदारे आज़म
मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़
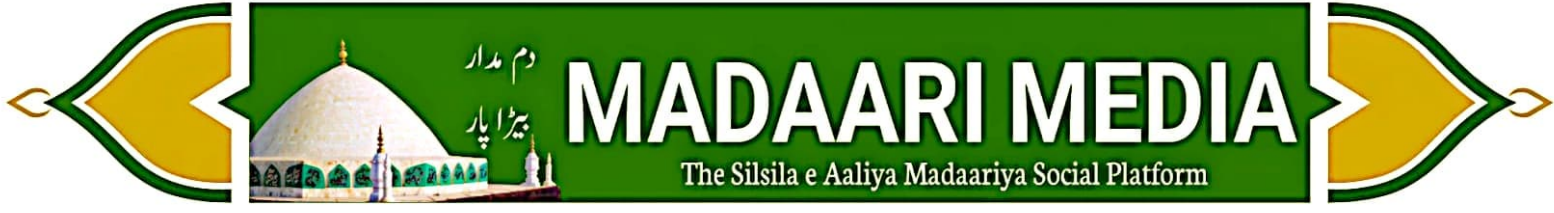
سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

اِنَّ الْمَدَارَ مِصْبَاحُ الْهُدٰى وَ سَفِيْنَةُ النِّجَاتِ

बेशक मदार हिदायत के चराग़ और निजात की कश्ती हैं

जदीद मदारे

डा० आई० एच० जाफ़री "आमिर"

मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़
कानपुर नगर

E-mail: shoaib.a.jafri@gmail.com

Mob. 8090273226

तस्नीफ़ो तालीफ़

डा० आई० एच० जाफ़री ''आमिर''
dr.ih.jafri@gmail.com
Ph N0. 9450137958

नाशिर

मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़
कानपुर नगर
E-mail: shoaib.a.jafri@gmail.com
Mob. 8090273226

किताबत

फ़ैज़ ग्राफ़िक्स मकनपुर शरीफ़

तबाअत

फ़ैज़ ऑफ़सेट मकनपुर शरीफ़

========================

HINDI
BY-Dr.I.H.Jafri amir

इन्तिसाब

मिन्नत सिपासी के जज़बात और अक़ीदतो एहतराम के साथ उन मासूम सिफ़त वालिदैन के नाम जिनकी मुशफ़िक़ाना तवज्जोहात और आला तरबियत ने ज़िन्दगी के हर मैदान में रहनुमाई फ़रमाकर जीने का सलीक़ा बख़्शा। उन नेक नफ़सों के नाम जो इस्लाम के हर रुक्न पर दिलो जान से अमल पैरा हैं औलियाए कराम से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते हैं और आख़िरत की जवाब देही के लिये हर वक़्त तैयार रहते हैं।

मुसन्निफ़

मुआरिफ़े तदय्युन

ज़ेरे नज़र किताब की तस्नीफ़ो तालीफ़ का मक़सद हर तबक़े के अफ़राद को मदारुल आलमीन सूफ़ी सैयद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार जिन्दा शाह मदार ﷺ की इस्लामी तालीमात और हमागीर शख़्सियत से वाक़िफ़ कराना ही नहीं और न ही मुताल्लेक़ा उमूर पर सिर्फ़ वज़ाहती तबसिरा करना है बल्कि हर मतलूबा मौज़ू के हर पहलू पर जामेय और तहक़ीक़ी रौशनी डाल कर आम आदमी की ज़िन्दगी से जोड़ना है ।

मैंने देखा है कि सिलसिलए आलिया मदारिया के अफ़राद को पेच दर पेच मसाइल से दो चार होना पड़ता है जहॉं तक इस सिलसिलए मदारिया का ताल्लुक़ है तो सारे का सारा माहौल ही नासाज़गार है रेडियो के तबसिरे हों या टेलीविज़न के प्रोग्राम, अख़्बारात और रसायल में शाये होने वाले मज़ामीन हों या दर्सी कुतुब, उल्मा की तक़ारीर हों या शोअरा के कलाम अव्वल तो ये सिलसिलये मदारिया का तज़किरा ही नहीं करते और करते भी हैं तो ग़लत अन्दाज़ से अक्कासी करते हैं बल्कि बसा औक़ात जानबूझ कर ऐसा किया जाता है अलावा अज़ीं बाज़ दूसरे सलासिल के लोग इस नाज़ुक पोज़ीशन से नाजायज़ फ़ायदा उठाने की भी कोशिश करते हैं ताकि वो बरगश्ता होकर दूसरे सलासिल में दाख़िल हो जायें इसके अलावा जिन्दगी में ऐसे बहुत से तहरीस के सामान भी मौजूद हैं जो लोगों की तवज्जोह अपनी तरफ़ मुन्अतिफ़ करके सीधे और सच्चे रास्ते से हटाने में कामयाब हो जाते हैं आले रसूल ﷺ से मुख़ास्मत का ये नया पैंतरा होता है ।

फिर इस सूरते हाल का हल हमें ईमानदारी से तस्लीम करना होगा कि ये सूरते हाल अगर्चे इन्तिहाई अलमनाक है ताहम किसी तरह भी मायूस कुन नहीं हैं । बाज़ हज़रात जो ना दानिस्ता जब्र और दबाव, लालच और गुमराही, धोके बाज़ी और बदगुमानी का शिकार होते हैं वो भले बुरे से बे नियाज़ अपनी ही ज़ात में गुम होकर रह जाते हैं और नतीजतन सिलसिलये आलिया मदारिया के मुताल्लिक़ तरह तरह के सवाल उठाते हैं और अपनी आक़्बत ख़राब कर लेते हैं । जबकि सिलसिलये आलिया मदारिया के पास मौजूद अल्लाह की निशानी हय्युल मदार की शक्ल में मौजूद है जो एक अज़ीम शाहकार की हैसियत की हामिल है और जो अल्लाह तआला के दायमी पैग़ाम की तौसीक़ और दीनी हक़्क़ानियत का मेआर है । यही वजह है कि मदारी अपने को बलन्द तर मक़ाम पर फ़ायज़ समझते हैं जो एक ज़िन्दा हक़ीक़त है मगर वो दूसरे अफ़्राद को आला और अदना दर्जात में तक़सीम नहीं करते नही मातूबो मलाऊन काफ़िरो मुश्रिक व मुर्तिद गर्दान्ते हैं हमारा ये मक़सद हरगिज़ नहीं है कि हम मुसल्मानो को अन्धे मज़हबी जुनून फ़रसूदा अक़ायद और तंग नज़री में मुब्तिला रहने दें हमने तो इस तवक़्क़ो पर क़लम उठाया है कि हक़ीक़त से ग़ाफ़िल, कम इल्म और नाआशना लोगों को सिलसिलये आलिया मदारिया की पेशकर्दा सदाक़त से आशना करदें और उन्हें इस सिलसिले के मुताल्लिक़ रूहानी बसीरत का सामान मुहय्या कर दें ।

चन्द इज़्ज़त मआब हज़रात की मुझ नाचीज़ पर मेहरबानी के सबब क़दीम कुतुब दस्तियाब हुयीं जिसे मैं अपनी ख़ुश क़िस्मती समझता हूँ.. और आप का क़ीमती वक़्त इस किताब के लिये लेना चाहिता हूँ उम्मीद है कि वक़्त निकाल कर किताब का मुताला ज़रूर करेंगे । .

मैंने मज़कूरा तहक़ीक़ और तहरीर में हर क़िस्म की एहतियात से काम लिया है फिर भी अगर कोई कमी महसूस की जाये तो वो मेरी बे बसीरती नहीं बल्कि मसलये इज़हारे ख़्याल में इल्मो फ़हम की कमी या ये कि ...... اَلْاِنْسَانُ مُرَكَّبٌ مِّنَ الْخَطَاءِ وَالنِّسْيَانْ की ख़ुसूस्यात में समझा जाये ।

(ان اللہ لا یضیع اجر المحسنین)

डा०आई०एच०जाफ़री "आमिर"

महसूसात !

ज़ेरे नज़र किताब जदीद मदारे आज़म का मसव्वेदा पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि यह एक ऐसी तहक़ीक़ी तारीख़ी स्लामी दस्तावेज़ है जिस को पढ़ने के बाद हज़रत मदारुल आलमीन सैयद बदी उददीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ी0 के हालात जानने के लिये किसी दूसरी किताब की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती । मौसूफ़ ने लफ़्ज़ लफ़्ज़ पर निहायत जामेए रौषनी डाली है ....!

अहक़र यह बात कहने में हक़ ब जानिब है कि इस दौर में यह किताब अपनी नोइयत की वाहिद किताब है जिसमें मुकम्मल हयाते तययबा को मुसतनद तारीख़ी शवाहिद की रौशनी में पेश करके समन्दर को कूज़े में बन्द करने का काम किया है जो लायक़े तहसीन और इन्तिहाई काविशों का हामिल है ।

मेरी दुआ है कि अल्लाह जल्लेशानहू अपने हबीब जनाबे मुहम्मदुर्ररसूल अलल्लाह स्ल0 के सदक़े में हज़रत ममदूह की मसाई जमीला को मक़बू – लियत का शरफ़ बख़्शे और यह कि अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा।

नासिर अली नदीम
तमन्नाई, बक़ाई, चिष्ती
एडीटरः– स्लामो पयाम और सबकी ख़ैर ख़बर
41/1 नारो भास्कर जालौन

वो किताबें !

जिन में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० का कही तफ़सीली और कहीं अजमाली तज़किरा है और इन तमाम किताबों से हालात लेकर इस किताब को मुरत्तब किया गया है ।

तारीख़ ख़ुल्फ़ाय अरब व स्लाम ,गुलज़ारे अबरार, सब्रह मजालिस, बहरुल मुआनी, अख़बारुल अख़ियार , बहरे ज़ख़ार , मदारे आज़म, तज़क्रतुल मुततक़ीन, तज़क्रतुल कराम, तजक्रतुल फुक़रा, बदीउल अजायब मज़हरुल गुरायब, जुलफुक़ारे बदी, अन्नूरुल बहा, सईदे अज़ल, तारीख़े फ़रीदी ,गुल ज़ारे बदी, सब्रहवीं शरीफ़, मदार का चाँद, मदारे आलम ,गुलज़ारे मदार, ईमाने महमूदी, दुर्रुल मुआरिफ़, जमाले बदी, फ़तूहाते मक्किया, अलमुजाहि दीन, हययुल मदार, तोहफ़तुल अबरार, सिराजुल औलिया, गुलिस्ताने सैयदुल फुक़रा, बोस्ताने अहमदी, रिसालय ख़्वाजा, ख़ुमख़ानय तसव्वुफ़, तारीख़े बदी, आईनय तसव्वुफ़, अलकवाकेबुद्दरारिया, फ़ुसूले मसूदिया , मेराजुल विलायत, तज़क्रातुल आशिक़ीन, सफ़ीनतुल औलिया, रूहुलबयान, कशफ़ुन्नेमात, उसूलुल मक़सूद, कशफुल महजूब, मसालेकुस्सालेकीन,सैरुल अक़ताब, तफ़सीरे अज़ीज़ी, ख़ज़ीनतुल असफ़िया, लतायफ़े अशरफ़ी,इसरार मदारियत, फ़ख़रुल वासेलीन, सैरुल मदार, समरतुल क़ुदस, तोहफ़तुल मदारिया, अनवारुल आरेफ़ीन, रिसालय इलियास, क़ौलुल जमील सिवाउस सबील ख़्वाजा बन्दा नवाज़, सीरते क़ुतबुल आलम, आफ़ताबे औलिया , रियरटी, मुनतख़िबुल अजायब, सिलसिलतुल मशायख़, मिनहाजे तरीक़त,

The chinese Origin of the words kimiya,Sufi,Dervish &qalandar.
Hbibullah Amozkar, Farhang-i Amozkar,TEHRAN
James W Redhouse, Turkish&English Lexicon.Beirut
The IslamicMystic Tradition in India. The Madari Sufi Brotherhood
by--

अर्ज़दाश्त !

मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़ इस्लाम के ज़बरदस्त मुफ़क्किर डा० इक़तिदा हुसैन जाफ़री ''आमिर'' की यह अज़ीम पेशकश जदीद मदारे आज़म के नाम से शाया करने का एज़ाज़ हासिल कर रहा है ।

जदीद मदारे आज़म की ख़ास मक़बूलियत ने इसका यह ख़ास एडीशन शाए करने पर फ़ख़्र महसूस कर रहा है ।इसका अन्दाज़े ब्यान मुदल्लल, साइन्टिफिक और आम फ़हम है ।

हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के सिलसिले में फैलाई गई ग़लत फ़हमियों का मुदल्लल और मसकत जवाब दिया है । इस तरह इस किताब ने समन्दर को कूज़े में बन्द कर दिया है । यही वजह है कि इसकी सैर करने वालों ने कहा है कि इस किताब का नाम जदीद मदारे आज़म न होकर ''समन्दर कूज़े में'' होना चाहिये था ।

उम्मीद है कि किताब क़ारईने कराम को मक़सद पा लेने में पूरी मदद देगी ।

मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़

बे इस्मे अल बदीइल अलीम

अल्लाह तआला ﷻ ने हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह ﷺ की ज़ाते ग्रामी को कायनाते आलम की हर शए का मदार ठहराया (ये मर्तबा बातिने नबुव्वत ﷺ का है जो आप ﷺ के वुरसे के लिये ख़ास है)और हज़रत मुहम्मद ﷺ ने वास्ते मदारिज के लफ़्ज़ कुतबुल मदार के साथ ख़िताब फ़रमाया ।

इससे पेशतर कि हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार अल मारूफ़ मदारुल आलमीन ज़िन्दा शाह मदार ؓ के हालात से वक़्फ़ियत हासिल करें लफ़्ज़ ''मदार'' का जानना ज़रूरी है । मदार अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसके लुग्वी मानी गर्दिश की जगह या धुरी के हैं । इस्तेलाही मानी में जिस पर कायनाते आलम का इन्हिसार हो और इस्तिलाहे फ़ुक़रा में (म/मीम) मदद माँग (द/दाल) दिल से (आ/अलिफ़) अल्लाह की तरफ़ (र/रे) रिया के बग़ैर रसूल ﷺ के साथ यानी मदार मददगार है दिल से माँगी गई उन दुआओं का जो रसूल ﷺ के तवस्सुल से अल्लाह की जानिब बग़ैर रिया के हों ।

लफ़्ज़ **मदार** का तअर्रुफ़

अल्लाह तआला ने अपने महबूब जनाबे मुहम्मद रसूल ﷺ को हर शए का मदार ठहराया और रसूले कायनात सल्ल० ने इस ज़ाते कुतबुल मदार के बाबत इरशाद फ़रमाया المدار هوالقرار मदार वह है कि इसी से क़रार है आलम का المدار كل كل मदार कुल आलम का है कुल आलम मदार का ह० अबू बक्र सिददीक़ रज़ी० ने फ़रमाया المدار كفخر الله ولاغيره الا الله मदार वह है कि उसको फ़ख्र है अल्लाह का और नहीं है सिवा उसके मगर अल्लाह ह० उमर फ़ारूक़ रज़ी० ने इरशाद फ़रमाया المدار محافظة العلم بيد المدار मदार वह है जो इल्मो आलम का मुहाफ़िज़ है जो मदार के क़ब्ज़े में है المدار جميل كمثل الجمال मदार जमील है मिस्ल जमाल के हज़रत उसमान ग़नी रज़ी० फ़रमाते हैं المدار كل الاشياء मदार कुल है हर शय का ह० अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं المدار كمظهر العجائب درجة الوهيت يوصل الربوبة मदार मज़हर है अजायबात का और दर्जय उलूहियत में जो परवरदिगार तक ले जाता है ।

(आफ़ताबे औलिया नं० पाक)

एक तआरुफ़ **क़ुतबुल मदार** رضي الله عنه

तमाम आलम के मौजूदात का वुजूद कुतबुलमदार के वुजूद के साथ होता है क़यामे मौजूदात अलवी व सफ़ली उसके वुजूद के ताबे होते हैं और उसी के ज़रिये हुज़ूर पुर नूर सल्ल० का फ़ैज़ाने रहमत दुनिया में पहुँचता रहता है । कुतबुल मदार के दो वज़ीर होते हैं वज़ीरे यमनी०(अब्दुल मुल्क) वज़ीरेमेआरी (अब्दुर्रब) । अब्दुलमुल्क हर वक़्त कुतबुलमदार की रूह से फ़ैज़याब रहता है और अब्दुर्रब उसके दिल से, अब्दुल मुल्क आलमे अलवी से और अब्दुर्रब

आलमे सफ़ली पर मुतसर्रफ रहता है । इसके अलावा 12 कुतुब और हैं जो अपने अपने नबी के क़ल्ब से फ़ैज़याब होते हैं ।
1—यह हज़रत नूह عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह यासीन का विर्द करता है 2—यह हज़रत इब्राहीम عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह इख़्लास का वज़ीफ़ा पढ़ता है 3—यह हज़रत मूसा عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह इज़ाजा का विर्द रखता है 4—यह हज़रत ईसा عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह इन्ना फ़तहना का वज़ीफ़ा पढ़ता है 5—यह हज़रत दाऊद عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह इज़ाज़ुलजलाल का विर्द रखता है 6—यह हज़रत सुलेमान عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह वाक़्या का विर्द रखता है 7—यह हज़रत अय्यूब عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह बक़्र पढ़ता है 8—यह हज़रत इलियास عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह कहफ़ पढ़ता है 9—यह हज़रत लूत عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह नमल का विर्द रखता है 10—यह हज़रत हूद عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह इनआम पढ़ता है 11—यह हज़रत स्वालेह عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह त्वाहा का विर्द रखता है 12—यह हज़रत शीस عليه السلام के क़ल्ब पर होता है और सूरह मुल्क का वज़ीफ़ा करता है । .

मगर कुतबुल मदार सरकारे दो आलम ﷺ के क़ल्ब से इस्तिफ़ादा हासिल करता है इसका फ़ैज़ तमाम आलमे अलवी व सफ़ली पर होता है बाक़ी मान्दा पॉच यमन में रहते हैं उन्हें कुतबे वलायत कहते हैं इनका फ़ैज़ आलम के वलियों को पहुँचता है । जानना चाहिये कि वली तरक़्क़ी करके कुतबे वलायत बन जाता है और कुतबे वलायत तरक़्क़ी करके कुतबे अक़लीम बन जाता है क़फतबे अक़लीम मन्सबे अब्दुर्रब पर जो कुतबुल मदार के जानिब चुप रहता है फ़ाएज़ हो जाता है । इस तरह अब्दुर्रब अब्दुल मुल्क के दर्जे पर पहुँच जाता है और अब्दुल मुल्क तरक़्क़ी करके कुतबुल मदार के दर्जे तक पहुँच जाता है । कुतबुल मदार का इस्मेग्रामी अब्दुल्लाह होता है और वह अर्श से

लेकर तहतुस्सरा तक मुतसर्रफ़ रहता है ग़रज़ कुतबुल मदार का दर्जा अज़ीमुश्शान है कुतबुल मदार अगर चाहे तो किसी कुतुब को माजूल कर सकता है अर्शो कुर्सी को मुन्बदिल और लौहे महफ़ूज़ के लिखे को मिटा सकता है कुतबुल मदार को सैयदुल अब्दाल भी कहते हैं और सैयदुल अब्दाल को हयाते इस्तेमरारी हासिल होती है । ग़ौस कुतुब अब्दाल सभी कुतबुल मदार के ताबे होते हैं कुतबुल मदार इन सब का सरदार होता है ।

नक़्शा अहले ख़िदमात बातनिया

अक़्ताबे अदलिया:- जुलूदे जमाली, वित्द सादा, कुत्बे यमनी, कुतबुल कौन, कुत्बे कौन नज़री, कुतुब सादा, कुतुबुल कौन सादा, कुतुबुल असग़र, कुतुबुल अकबर, कुतुबुल कौन अकबर, कुतुबुल कौन अकबरुल कबायर, कुतुबुल आज़म, कुतुबुल कौन अकबरुल आज़म, कुतुबुल अक़्ताब ।

अग़वासे इन्तिज़ामिया:- जुलूदे जलाली, बदल सादा, ग़ौस यमनी, ग़ौसुस्सूर म्यारी, ग़ौस बदरी, ग़ौसुस्सूर बदरी, ग़ौस सादा, ग़ौसुल असग़र, ग़ौसुल अकबर, ग़ौसुस्सूर अकबर, ग़ौसुस्सूर अकबरुल कबायर, ग़ौसुलआज़म, ग़ौसुल अकबरुल आज़म, ग़ौसे आलम, ग़ौसुल अग़वास ।

सिलसिलये अक़्ताब जुलूदे जमाली से शुरू होकर कुतुबुल अक़्ताब पर ख़त्म हो जाता है । सिलसिलये अग़वास जुलूदे जलाली से शुरू होकर ग़ौसुल अग़वास पर ख़त्म हो जाता है । कुतुबुल अक़्ताब और ग़ौसुल अग़वास दोनों कुतबुल मदार के मातहत होते हैं ।कुतबुल मदार को ही फ़रदुल अफ़्राद और कुतबुल इरशाद कहते हैं और यह बराहे रास्त क़ल्बे नूरे मुजस्सम ﷺ से मुस्तफ़ीद होता है ।

(फ़ुतूहाते मक्किया,दुर्रुल मुनज़्ज़म,लतायफ़े अशरफ़ी,मिर्रतुल असरार वग़ैरह)

जाय पैदाइश का तारीख़ी पसमंज़र

शाम (सीरिया) अरब का पड़ोसी मुल्क है अरब जज़ीरे नुमा है जिसके तीन तरफ़ पानी और एक सिम्त पर खुश्की का इलाक़ा है मग़रिब में बहरे कुलिज़्म आबनाये स्वेज़ और बहरे रूम है । मश्रिक़ में बहरे हिन्द ख़लिज फ़ारस और बहरे अम्मान है । जुनूब में बहरे हिन्द शुमाल के हुदूद ईराक़ और शाम से जुड़े हुए हैं । बहरे अहमर के किनारे किनारे शाम की सरहद से यमन तक का जो हिस्सा है उसे हुज्जाज़ के नाम से याद किया जाता है । मदीना मक्का तायफ़ वग़ैरह इसी हुज्जाज़ के शहर हैं और इन मुक़द्दस शहरों से हुज़ूर ﷺ की हयाते मुक़द्दसा का गहरा ताल्लुक़ है । ऑहज़रत ﷺकी उम्र शरीफ़ जब 12 साल की थी तब आप ﷺ ने अपने चचा अबूतालिब के साथ शाम का पहला सफ़र किया था और इसी सफ़र में आपको बहरे राहिब का वाक़्या पेश आया था । सन् 13 हिजरी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़رضي الله عنهने असहाबे किबार के मशविरे से शाम पर फ़ौजकशी का फ़ैसला लिया । लेकिन शाम की फ़तेह सन् 14 हिजरी अहदे फ़ारूक़ी में हुई और 17 हिजरी मुताबिक़ 638 ई० में शाम पर मुसल्मानों का मुकम्मल क़ब्ज़ा हो गया عن عمر بن الخطاب قال قال رسول الله ﷺ رايت عمودا من نور خرج من تحت راسى ساطعا حتى استقر بالشام हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताबرضي الله عنهरवायत फ़रमाते हैं कि फ़रमाया रसूलल्लाहﷺकि मैंने अपने सरहाने से एक नूर का सुतून निकलते हुए देखा यहाँ तक कि वह शाम चला गया । शाम की अहमियत इस हदीसे मुक़द्दसा से और बढ़ जाती है ।

عَنِ الْحَسَنِ الْبَصْرِي رضي الله عنه قَالَ: لَنْ تَخْلُوَ الْاَرْضُ مِنْ سَبْعِيْنَ صِدِّيْقًا وَهُمُ الْاَبْدَالُ لَا يَهْلِكُ مِنْهُمْ رَجُلٌ اِلَّا خَلَفَ اللّٰهُ مَكَانَهُ مِثْلَهُ اَرْبَعُوْنَ بِالشَّامِ وَثَلَاثُوْنَ فِى سَائِرِ الْاَرْضِيْنَ ابن عساكر हज़रत हसन बसरी ब्यान करते हैं कि यह ज़मीन कभी भी 70 सिद्दीक़ीन से ख़ाली नहीं होती और वह अब्दाल हैं उनमें से कोई आदमीं फ़ौत नहीं होता मगर ये कि अल्लाहسبحانه وتعالىउसकी जगह उसी तरह

का कोई और बन्दा ले आता है उनमें से 40 शाम में रहते हैं और 30बाक़ी तमाम ज़मीन के मुख़्तलिफ़ टुकड़ों पर । (इब्ने असाकर)

हलब:-(अलप्पो)सीरिया में हलब शहर का वो मक़ाम है जो हिन्दुस्तान में कश्मीर और हैदराबाद का है हलब की वजह तस्मिया भी ख़ूब है अहले अरब हलब के मानी दूध दूहने के लेते हैं एक मर्तबा इस शहर के एक टीले पर हज़रत इब्राहीमعليه السلامठहरे थे और यहीं अपनी बकरियों का दूध दुहा था इस लिये इस जगह का नाम हलब पड़ा ।

चिनार:-शाम के शहर हलब से कोई तीस किलो मीटर दरियाए नील के क़रीब एक ख़ूबसूरत कुदरती हुस्न से आरास्ता कस्बा चिनार है (इसका आज का नाम नहीं मालूम) फ़तेह शाम से पहले यहाँ ईरानियों का एक वफ़्द ठहरा था जिन्हों ने अपने साथ लाये हुए पौधे यहाँ लगाये थे जिनमें चिनार के भी दरख़्त थे इस सबब से इस जगह का नाम चिनार पड़ा । यही वो मुक़द्दस मुक़ाम है जहाँ हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदारرضي الله عنهकी वलादत ब सआदत हुई ।

ख़ानदान

शहर हलब में उमवी ख़ानदान के ख़वारिज का सताया हुआ एक घराना था जो उमवी ख़ानदान के ज़ुल्मो तशद्दुत से तंग आकर मदीनतुर्रसूलﷺसे हिजरत फ़रमाकर यहाँ आबाद हुआ था । इस घराने में सैयद बहाव उद्दीन के चार बेटे सैयद अहमद,सैयद मुहामिद,सैयद महमूद और सैयद अली हल्बी मौजूद थे

अली हल्बी:- हज़रत सैयद क़िदवत उद्दीन अली हल्बीرضي الله عنهपंज शम्बा 17 रजबुलमुरज्जब सन् 219 हिजरी मदीने मुनव्वरा ब वक़्त सुब्ह सादिक़ दुनिया में तशरीफ़ लाये आपرضي الله عنهख़ानदाने फ़ात्मी के चश्मो चराग़ अहले बैत में वलिये कामिल अज़ीम बुज़ुर्गी के मालिक ज़ोहदो तक़्वा परहेज़गारी नेकी व शराफ़त और बुज़ुर्गी में यक्ताये ज़माना थे । दसवीं पुश्त पर आपका नसब आँहज़रत

ﷺसे मिल जाता है । आपने 13 बरस की उम्र में तमाम उलूमे ज़ाहिरी व बातनी में दस्तरस हासिल कर ली 227 हिजरी में अब्बासी ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह तख़्त पर बैठा यह बहुत नेक और दीनदार था जहाँ उसने अपने अहद में तमाम उल्मा को अच्छे ओहदों पर फ़ायज़ किया वहीं हज़रत क़िदवत उद्दीनअली हल्बीؓकी शोहरत और इल्मोफ़ज़ल का शोहरा सुनकर ब इसरारे तमाम दरबारे शाही में बुला लिया 232 हिजरी में ही वासिक़ का इन्तेक़ाल हो गया और उसका भाई मुतवक्कल अली उल्लाह मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाएज़ हुआ कुछ अर्से के बाद मुतवक्कल अलवियों का सख़्त दुश्मन हो गया यहाँ तक कि हसनैने पाक के मज़ारात को मुन्हदिम कराके उसपर खेती करने का हुक्म दे दिया अली की औलाद से दोस्ती रखने पर भी सज़ा देता था लोगों के हाथों पर अंगारे रखवाता हाथ न जलने पर क़त्ल कर देता। हज़रत अली हल्बीؓ ने अल्लाह से दुआ की कि "ऐ अल्लाह तू हम से ये सिफ़त उठा ले।" अल ग़रज़ जब उसकी दुश्मनी का रुख़ हलब की तरफ़ हुआ तो हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हल्बी को राहे फ़रार इख़्तियार करना पड़ी और आप क़रिया चिनार में अबू इसहाक़ के मकान में पनाह गुज़ीं हुए जो लावलद थे।

(आफ़्ताबे आलम,अल्कवाकिबुद्दरारिया,हुसूले समदियत)

हाजरा तबरेज़ी:-आप बदी उद्दीन अहमदؓकी वालिदा मोहतरमा हैं आप बचपन से ही इबादते इलाही की पाबन्द पाकीज़ा अख़्लाक़ और साहिबे सरवत ख़ातून थीं नर्मख़ू रफ़ीक़ुलक़ल्ब ज़ोहदोदरा की मुजस्सम पैकर और इस्लाम की सच्ची तस्वीर थीं शौहर के हुक़ूक़ और बच्चों की परवरिश को एक खुशगवार फ़रीज़ा समझती थीं तवक्कुल उनका शेयार था।

दोनों ज़नो शौहर उलूमे ज़ाहिरी व बातनी से आरास्ता व पैरास्ता थे वो अपनी निस्बतों पर नाज़ाँ थे इनको वो वक़ार हासिल था जो दूसरों को मयस्सर न था इनको निहायत अदबो एहतराम की नज़र से देखा जाता था इनके चार साहबज़ादे हुए।

1.सैयद अहमद बदीउद्दीन ज़िन्दाने सौफ़ 242 से 838
2.सैयद निज़ाम उद्दीन मुहम्मद ख़्वाजा बक्ताश वली 244 से 277
3.सैयद मतलूब उद्दीन क़ाज़ी महमूद 246 से 296
4.सैयद शाह बद्र उद्दीन मक़सूद 248 से 311

सैयद शाह बद्र उद्दीन मक़सूदः-आपकी उम्र शरीफ़ 63 बरस की हुई आपने कमाल के तमाम मरातिबो मदारिज तय फ़रमाये दीनदार, स्वालेह, मुत्तक़ी और परहेज़गार थे। अल्लाहﷻने आप में इल्मो अमल नूअ ब नूअ ख़ूबियाँ जमा फ़रमा दी थीं आपकी इबादतो रियाज़त किसी जलीलुलक़द्र वली अल्लाह से कम न थी आप अपनी सांसें पूरी करने के लिये आबाई वतन मदीने मुनव्वरा शरीफ़ ले गये और 311 हिजरी में रेहलत फ़रमाई आपका मदफ़न शरीफ़ हिसार में मदीने तय्यबा के वाक़े है।

सैयद मतलूब उद्दीन क़ाज़ी महमूदः-आपने 50 बरस की उम्र शरीफ़ पाई जिन्नोइन्स को तस्ख़ीर में लाये कलेमा لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ और इस्मेआज़म الحی والقیوم का ज़िक्र तमाम उम्र करते रहे یَا سُبّوحُ یا قدوس के वज़ीफ़े में मशग़ूल रहे आप तमाम रात में 1000 रक्अत नमाज़ अदा फ़रमाते थे आपका विसाल 12 मुहर्रम 292 हि० को हुआ शाम (सीरिया) में मस्जिदे ख़लीलुर्रहमान के पहलू में मदफ़न हैं।

सैयद मुहम्मद ख़्वाजा बक्ताश वलीः- आप 244 हिजरी में दुनिया पर तशरीफ़ लाये 33 बरस तक दीने मतीन की ख़िदमत में कोशाँ रहे आपकी ग़िज़ा सिर्फ़ 4 छुआरों की थी आप हर रोज़ कूज़े में पानी पर इस्मे आज़म दम करके नोश फ़रमाते थे 12 बरस तक الحی والقیوم اللہ اکبر के ज़िक्र गुज़ार दिये विलायत रूम ख़ास शहर कुसतुनतुनिया में मज़ार शरीफ़ है।

ज़िन्दा शाह मदार आलमे ज़हूर से क़ब्ल

मुतवक्कल अली उल्लाह के दौरे हुकूमत में जिस क़दर क़हरे ख़ुदा वन्दी का ज़हूर मुमलिकते इस्लामिया पर हुआ इस से पहले देखने को नही मिला मसलन सन् 236 हि० में ही ईराक़ में ऐसी भयानक गर्म हवा चली कि खेतियाँ जल भुन कर राख हो गयीं बाज़ार और रास्ते वीरान हो गये कूफ़ा, बसरा, बग़दाद वग़ैरह इसकी चपेट में थे हमदान तक इस ख़ौफ़नाक हवा का असर रहा। सन् 240 हि० में बलात में एक भयानक चीख़ सुनाई दी जिसकी दहशत से बेशुमार

अर्फ़ाद हलाक हो गये। ईराक़ में ज़बरदस्त ओला पड़ा जिस से खेतियाँ तबाह व बरबाद हो गयीं। दमिश्क़ से अन्ताकिया तक ऐसा ख़तरनाक ज़लज़ला आया कि इमारतें मुन्हदिम हो गयीं और हज़ारों लोग दब कर मर गये। फ़ारस यमन खुरासान और शाम भी इसकी ज़द में आ गये। सन् 242 हि० में ट्यूनसरे, खुरासान, नेशापुर, तबरिस्तान और असफ़हान वग़ैरह में में भी बहुत ख़तरनाक ज़लज़ला आया जिससे बड़े बड़े पहाड़ दर्रे खा गये। शहर हलब भी अजीबो ग़रीब कशमकश में मुबतिला था सन् 242 हि० माह रमज़ानुल मुबारक हलब के चिनार क़स्बे में एक सफ़ेद परिन्दा ज़ाहिर हुआ 40 मर्तबा इस तरह सदा लगाई "يا معشر الناس اتقوالله الله الله الله"और उड़ गया 3 दिन बराबर ज़ाहिर हुआ सदा लगाई और ग़ायब हो गया हज़ारों लोग इस परिन्दे को देखते और इसकी बात सुनते। (तिबरी हमारी बादशाही तारीख़े बदी फ़रिश्ता)

बशारत:-हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी ने फ़ात्मा सानी उर्फ़ बीबी हाजरा तबरेज़ी से सन् 237 हि० में निकाह फ़रमाया अर्से 4बरस कोई औलाद न हुई तो आपने बारगाहे खुदा वन्दी में औलाद के लिये मुनाजात की और जब मुतवक्कल अली उल्लाह के ज़ुल्मो तशद्दुद ने ज़ोर पकड़ा तो आप चिनार में आकर अबू इसहाक़ शामी के मकान में पनाह ली। यहाँ आपने अपनी पेशानी पर वलायत का नूर लामा और दुरख़्शाँ देखा और परवर दिगारे आलम के हुक्म से एक रात आलमे रोइया में नबी करीमﷺकी ज़्यारत बा बरकत से सरफ़राज़ हुए। नबी मोहतरमﷺने इरशाद फ़रमाया''ऐ अली ख़ातिर जमा रखो और फ़्यूज़े रहमानी के उम्मीदवार रहो, अल्लाह तआला तुम्हें एक फ़र्ज़न्द मुक्तिदाये वक़्त इनायत फ़रमाये गा जो दुनिया में एक रूहानी इन्क़िलाब बरपा कर देगा तमाम आलम इससे फ़ैज़याब होगा और बेशुमार अफ़्राद मंज़िले मक़सूद को पहुँचें गे इस से बेशुमार तसर्रुफ़ातो करामात ज़हूर पिज़ीर होंगे वो लोगों को राहे हक़ दिखाये गा ऐ अली इस बच्चे की परवरिश और तालीमो तरबियत में कोताही और ग़फ़्लत न करना'' इस हिदायत के बाद आपकी आँख खुल गई इस बशारत से जो खुशी हासिल हुई उसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है।

हैरत अंगेज़ वाक़्यात :-चन्द यौम के बाद फ़ात्मा सानी उर्फ़ बीबी हाजरा

तबरेज़ी फ़रमाती हैं कि अजीबो ग़रीब वाक़्यात रूनुमाँ होते अजीब तरह के ख़्वाब दिखाई देते कभी एक नूर आकर घेर लेता कभी दिल आवेज़ ख़ुशबू महसूस होती जिससे दमाग़ मोअत्तर हो जाता कभी ऐसा महसूस होता कि एक रौशनी है जो अन्दर चक्कर लगा रही है और रौशनी कभी नाफ़ से ऊपर को जाती है कभी नाफ़ से नीचे कभी अजीब क़िस्म की आवाज़ें सुनाई देतीं कभी हैरत अंगेज़ तजल्लियाँ ज़ाहिर होतीं।

साहबे हुसूले समदियत लिखते हैं कि आप फ़रमातीं मैं अगर मुश्तबाह लुक़्मा मुँह में रखती तो हलक़ के नीचे न उतरता और शिकम में दर्द शुरू हो जाता फ़रमाती हैं कि घर में एक बूढ़ी बकरी थी जो अर्से से दूध देना बन्द कर चुकी थी उसने दूध देना शुरू कर दिया। आलमे ख़्वाब में बुज़ुर्गों का तांता लगा रहता और मुबारक बाद दी जाती वग़ैरहुम।

आलमे ज़हूर

सन् 242 हिजरी बरोज़ दो शम्बा वक़्त सुब्ह सादिक़ यकुम शव्वालुल मोअज़्ज़म क़रिया चिनार शहर हलब (अलप्पो) मुल्क शाम (सीरिया) क़ाज़ी क़िदवतउद्दीन अली हलबी व फ़ात्मा सानिया उर्फ़ बीबी हाजरा तबरेज़ी के यहाँ एक हसीनो जमील पुरकशिश बच्चे ने जन्म लिया। फ़ात्मा सानी फ़रमाती हैं कि पैदाइश के वक़्त ब कसरत अनवारो बरकात का नुज़ूल हुआ एक ऐसा नूर देखने में आया कि जिसने तमाम मकान को घेर लिया अनवारे ग़ैबी ब कसरत ज़ाहिर हुए ज़मीन से आस्मान तक नूर ही नूर नज़र आ रहा था। मैंने और तमाम घर वालों सुना ग़ैब से निदा आई هٰذا ولی الله और पैदा होते ही आपने माबूदे हक़ीक़ी के हुज़ूर सजदा अदा फ़रमाया वहदानियतो रिसालत की ब आवाज़ बुलन्द गवाही दी। हरीमे समदियत में है कि मुहम्मद रसूल ﷺ मय अइमय किबार व अतहार और सहाबा के तशरीफ़ लाये और मुबारक बाद दी।फ़रमाती हैं कि आपने एक हफ़्ते तक दूध न पिया मालूम करने से पता चला कि पड़ोसी बज़ाहिर जो परहेज़गार नज़र आता है सूदख़ोर हो गया है मकान बदलते ही दूध पीना शुरू कर दिया। फ़रमाती हैं एक मर्तबा आपके वालिद साहब ने दूध पिलाने के लिये एक अन्ना को मुक़र्र कर दिया उसने घर लेजाकर दूध पिलाना

तो आपने न पिया वह आजिज़ होकर वापस ले आई मेरी गोद में आते ही दूध पीना शुरू कर दिया। आप अज़ान बग़ौर समाअत फ़रमाते अगर दूध पीने में अज़ान की सदा आती फ़ौरन छोड़ देते तिलावते कुरआन सुनते तो चेहरे पर ख़ुशी के आसार नमूदार होते । आप के वालिदैन आप की इन हरकतों पर मुताज्जुब और ख़ुश होते। उन्होंने इस शाहकार का नाम ''अहमद'' रखा आप के वालिद का इरशादे ग्रामी है कि चन्द यौम के बाद निहायत हसीनो जमील नूरानी बुज़ुर्ग घर पर तशरीफ़ लाये और मुझ से पूछा मेरे नौमौलूद दोस्त बदी उद्दीन किधर हैं? मैं उन्हें बच्चे के पास ले गया उन बुज़ुर्ग ने बच्चे को गोद में उठा कर दस्त बोसी की और रुख़्सत हुए इस दिन से आपका नाम बदी उद्दीन अहमद हो गया। अहले क़लम के नज़्दीक यह बुज़ुर्ग हज़रत ख़िज़्र عليه السلام. थे जानी मुहम्मद इब्ने अहमद क़ानी अलकवाकिबुद्दरारिया में कहते हैं कि बदी उद्दीन अहमद की वलादत हुई लोग मुबारकबाद पेश करने आते जो मॉगते सो पाते इस तरह मुसलसल छेः माह गुज़र गये यहॉ तक कि घर का सभी कुछ तक़सीम हो गया।इसी असना में मुतवक्कल अली उल्लाह के सिपाही भी चिनार पहुॅच गये एक मर्तबा फिर अली हल्बी को हिजरत करना पड़ी और रातों को जगा देने वाली भूख व प्यास की मुसीबत आनपड़ी। एक तवील अर्से की भूख प्यास और रंजो ग़म ने बिलकुल निढाल कर दिया ज़ब्तो तहम्मुल और सब्रो इस्तेक़लाल का गला घुॅटने लगा। आपके वालिदैन ने अपना मुआमला उस ज़ात के सुपुर्द कर दिया जो मुसीबतों को राहतो में बदल देता है। बेटे को यके बाद दीगरे गोद में लेते और मंज़िल की तरफ़ बढ़ते रहे। चलते-चलते बोझल हो चुके थे कि इल्हाम हुआ''भरोसा रक्खें अपने परवरदिगार पर और औलाद का मुआमला उसके सुपुर्द कर दें और बच्चे को लिटा दें ऐसे दरख़्त के नीचे जो हमेशा फलों से ख़ाली रहता है (चिनार) फिर फ़ारिग़ुलबाल हो जायें ग़मोअन्दोह से। आपके वालिदैन ने ऐसा ही किया। अल्लाह तआला ने बदल दिया उस जगह को सब्ज़ो शादाब ज़मीन बेहतरीन ख़ुशगवार आबोहवा फलों और बरकतों से। जानी कहते हैं कि जब आप गहवारे में मिट्टी के बिस्तर पे थे तभी आप को अपनी फ़ितरत का एहसास हो गया था।

आपकी कमसिनी का एक वाक़्या आप तन्हा थे कि''बदी उद्दीन मेरी तरफ़ आओ '' की आवाज़ पर चल दिये और रास्ता भटक गये और रात हो

हो गई कब्रिस्तान में ठहरना पड़ा जहॉ आपने खण्डरातो टीलों के भूखे दरिन्दों की भयानक आवाज़ें सुनीं फिर आपने एक बुज़ुर्ग को देखा जो निहायत ख़ूब-सूरत हसीनो जमील इन्तिहा रोबो जलाल वाले थे आप ﷺ के क़रीब आकर निहाएत शफ़्क़त से कहा,''साहब ज़ादे आप कौन हैं? आप ने फ़रमाया,'' मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और वो सामने जो टीला है वो मेरी अस्ल है।'' बुज़ुर्ग ने फिर पूछा,'' आप के मॉ बाप कौन है? आपने एक चट्टान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा,'' ये चिकना पत्थर मेरी मॉ है और आसमान बाप।'' बुज़ुर्ग ने फिर सवाल किया,'' आपके रिज़्क़ का क्या मुआमला है? आपने फ़रमाया,'' मैं नफ़्स की निजासत से पाक हूँ।'' ये हज़रते ख़िज़्र عليه السلام थे जब उन्हों ने अपने सवालों के जवाब फ़सीह पाये तो फ़रमाया,'' ऐ साहब ज़ादे! बिला शुब्ह आपकी अस्ल मुहम्मदी है मिट्टी फ़ात्मी है और नस्ल अलवी है और पैदाइश हल्बी है अनक़रीब ख़ुदा वन्द क़ुद्दूस आपको करामतों का मदार और अलामतों का महवर बनायेगा फिर हज़रत ख़िज़्र عليه السلام ने आपके ठिकाने की निशान्देही की और चले गये। उधर आपके वालिदैन आपकी मुफ़ारिक़त में बेचैनो परीशान तलाश करते करते थक कर चूर हो गये थे कि अल्लाह ने मिला दिया वालिदैन से ऐन इश्तियाक़ो बेक़रारी में दोनों की ऑखे ठण्डी हुयीं। (अलकवाकिबुद्दरारिया)

इस्म शरीफ़:-वालिदैन ने नाम ''अहमद'' रखा और हज़रत ख़िज़्र ने ''बदी उद्दीन'' ख़िताब फ़रमाया।

इस्मे तरीक़त :-अब्दुल्लाह ज़िन्दाने सौफ़

अलक़ाब :-क़ुतबुल मदार, क़ुतबल अक़्ताब, क़ुतबल इरशाद, क़ुतबे आलम मदारे आज़म, मदारे दो आलम, मदारुल आलमीन, शेख़े कबीर, शाहे ज़िन्दॉ, ज़िन्दाने सौफ़, ज़िन्दा शाह मदार, हय्युल मदार, हयातुल वली, ज़िन्दा शाह वली ज़िन्दा पीर, फ़रदुल अफ़्राद, मदार साहब, दादा मदार, दाता मदार, मदार बाबा सरकारे सरकारॉ वग़ैरहुम।

कुन्नियत :- अबू तुराब

आपके 99 नाम

يا قطب الذی لا قطب بدیع الدین الا هو

बदीउन, करीमुन, नूरुन, एनुन, ईनुन, क़वामुन, रिवाजुन, इस्मुन, रहीमुन, मजीदुन, हिसामुन, सालेकुन, वलीयुन,रफ़ीउन, इरतिक़ाउन, शमालुन, आमिलुन, हमीदुन, इमादुन, ख़ैरुन, फ़ज़लुन, मदारुन, मालिकुन, महीयुन, सलामुन, मुसल्लिमुन, मुहीमुन, फ़ातेहुन, मुफ़्तहुन, मरकूमुन, मुर्शिदुन, स्वालेहुन, तौफ़ीकुन, ज़िब्दतुन, तश्रीफ़ुन, ग़यासुन, वाहिदुन, ज़ाहिरुन, मज़हरुन, ताहिरुन, मुतहर्रुन, नसीरुन, मुहनुन, आलिउन, मुतालिउन, इशारुन, हकीमुन, ख़ादिमुन, नजमुन, सिराजुन, मुनीरुन, शम्सुन, नाफ़िउन, सादिकुन, सिद्दीकुन, मुसददिकुन, हादिउन, मेहदिउन, मुक़ामुन, ज़्याउन, सुल्तानुन, तकूमुन, माहियुन, हाफ़िज़ुन, शाग़िलुन, इमामुन, नासिरुन, क़िदवतुन, नुसरतुन, निज़ामुन, दवाउन, शिफ़ाउन, बक़ाउन, कमालुन, जलालुन, हुज्जतुन, शहाबुन, शाहिदुन, साबितुन, अहियाउन, सआदुन, सईदुन, बहाउन, रुकनुन, मुईनुन, लतीफ़ुन, रफ़ीकुन, शफ़ीकुन, कबीरुन, मुजतमाउन, फ़तहुन, मुफ़तहुन, क़दीरुन, मुहीनुन .

आप को मलायका आसमानों पर मख़्सूस असमा से पुकारते हैं पहले आसमान पर ज़ैनुल्लाह दूसरे पर नज्मुल्लाह तीसरे पर मुज्तमाउल्लाह चौथे पर फ़तेहउल्लाह पॉचवें पर सिफ़तुल्लाह छओ पर मुरीदुल्लाह और सातवें पर बदीउल्लाह .

तारीख़े बदी

اَلنَّاسُ اٰمِنَاء عَلٰی اَنُسَابِہِمُ ْ (اشرف المؤید)

हर शख़्स अपने नसब पर ख़ुद अमीन है

नसब नामा पिदरी

हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ ؓ हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी ؓ हज़रत सैयद बहाउद्दीन ؓ हज़रत सैयद ज़हीर उद्दीन ؓ हज़रत सैयद अहमद उर्फ़ इस्माईल सानी ؓ हज़रत सैयद मुहम्मद ؓ हज़रत सैयद इस्माईल ؓ हज़रत सैयद इमाम जाफ़र सादिक़ ؓ हज़रत सैयद इमाम मुहम्मद बाक़र ؓ हज़रत सैयद इमाम ज़ैनुल आब्दीन ؓ हज़रत सैयद इमाम हुसैन علیہ السلام हज़रत सैयद अली करमुल्लाह वज्हुलकरीम .

नसब नामा मादरी

हज़रत बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार ؓ सैयदा बीबी हाजरा तबरेज़ी उर्फ़ फ़ात्मा सानी ؓ हज़रत अब्दुल्लाह जाफ़र तबरेज़ी ؓ हज़रत सैयद मुहम्मद ज़ाहिद ؓ हज़रत सैयद अबू मुहम्मद हसन आबिद ؓ हज़रत सैयद अबू स्वालेह मुहम्मद अब्दुल्लाह सानी ؓ हज़रत सैयद अबू यूसुफ़ अब्दुल्लाह ؓ हज़रत सैयद अबुल क़ासिम मुहम्मद मेंहदी ؓ हज़रत सैयद अब्दुल्लाह महज़ ؓ हज़रत सैयद हसन मुसन्ना ؓ हज़रत सैयदना इमाम हसन علیہ السلام ह० सैयदना मौला असद उल्लाह हैदरे कर्रार अली मुर्तिज़ा रिज़्वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन .

बचपन : आप का बचपन आम बच्चों से बिलकुल अलग था आप बच्चों के साथ खेल में मसरूफ़ नहीं होते थे ऐसा मालूम होता जैसे किसी फ़िक्र में मुस्तग़रक़ हों। शेख़ जमीरी कहते हैं कि आप अक्सर फरमाया करते अगर मैं तन्हा या बच्चों के साथ निकल जाता तो ये आवाज़ सुनाई देती"बदी उद्दीन मेरी तरफ़ आओ मुड़ कर देखता कोई नज़र नहीं आता" । बचपन ही से आसारे बुज़ुर्गी नुमायाँ थे और ख़वारिक़ो आदात का ज़हूर होने लगा था। जब आपकी उम्र शरीफ़ 4 साल 4 माह 4 दिन की हुई तो आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने मवाफ़िके सुन्नते नबवी ﷺ आपकी बिस्मिल्लाह की रस्म बड़े तज़्को एहतशाम के साथ की। जिसमें आमिलो सूफ़ी ब कसरत शरीक हुए। .

ज़ाहिरी तालीम : बिस्मिल्लाह के बाद आपके वालिद ने आपको हुज़ैफ़ा शामी मरअशी के सुपुर्द फ़रमाया जो अपने वक़्त के सबसे बड़े मुदर्रिस,आलिमे बाअमल, इल्मो फ़ज़्ल में यक्ताए रोज़गार एक साहिबे दिल बुज़ुर्ग थे। मौलाना हुज़ैफ़ा शामी की निगरानी में आपकी ज़ाहरी तालीम शुरू हुई। आप अक्सर ऐसी बारीक बात ब्यान फ़रमाते कि हुज़ैफ़ा शामी भी हैरान रह जाते और कहते هذا سعید ازل، هذا ولی الله ये सईदे अज़ल हैं ये अल्लाह के वली हैं। .
हज़रत हुज़ैफ़ा शामी رضی اللہ عنہ ने आपके वालिद मोहतरम से वही अर्ज़ किया जो हज़रते ईसा علیہ السلام की वालिदा से उनके उसताद ने कहा था कि इस बच्चे को उसताद की ज़रूरत नहीं। अलग़रज़ आप ने बहुत जल्द तमाम उलूमे ज़ाहिरी में दस्तरस हासिल कर ली और आपका शुमार उँगलियों पर गिने जाने वाले उल्माओ मुहद्दिसीन में किया जाने लगा । (तारीख़ खुलफ़ाय अरबो इस्लाम बग़ैरह)

हज्जे बैतुल्लाह शरीफ़

ग़ार में क़याम : हज़रत बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ رضی اللہ عنہ वालिदैन से इजाज़त लेकर हरमैनो शरीफ़ैन के इश्क़ में पा पयादा घर से रवाना हुए और यके तन्हा मंज़िले मक़सूद की राह ली सन् 257 हिजरी माह सफ़र आप तन्हा चले जाते थे कि राह में अब्दुल वहाब रफ़ीक़े सफ़र हुए असनाए राह में एक ग़ार में क़याम फ़रमाया फिर यहाँ से आप सबसे पहले मशदुल हुसैन तशरीफ़ ले गये । इसे पहले मशदुल नुक़्ता कहा जाता था ये वो मुक़ाम है

जहाँ हज़रते इमाम हुसैन عليه السلام का सरे अक़दस रखा गया था और इस पत्थर में आपका ख़ून जज़्ब हो गया था । ये मुक़ाम हलब (अलप्पो) जो ईराक़ की सरहद रक़्क़ा जिसकी छोटी सी ख़ानक़ाह मारूतो मरूसा है ये जबले हरबी से औजान के साथ नहरे क़बीज़ में वाक़ए है पहुँच कर पत्थर से लिपट गये और अपने अजदाद का ख़ून देख कर आपकी भूख प्यास नींद सब रफ़ा हो गयी अब आपका मामूल था आप कसरत से रोज़ा रखते जब शाम होती तो ग़ैब से दो रोटियाँ ज़ाहिर होतीं एक आप तनावुल फ़रमाते और एक मफ़लूकुलहाल को दे देते । (मिफ़्ताहुत्तवारीख़ बग़ैरह)

बदी उद्दीन मदार बायज़ीद बुस्तामी के हुज़ूर में : आवाज़े ग़ैबी पर बदी उद्दीन अहमद رضي الله عنه ने अपने सफ़र का रुख़ दारुस्सलाम की जानिब मोड़ दिया दारुस्सलाम पहुँच कर बैतुलमुक़द्दस की ज़्यारत की हज़रत सुल्तानुल आरफ़ीन ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी رضي الله عنه से मुलाक़ात हुयी जिन्हों ने आपकी पेशानी और आँखों को बोसा देकर फ़रमाया मैंने तक़रीबन अट्ठारह बरस पहले एक नूर का सुतून देखा था तुम्हें देख कर ये महसूस हुआ कि वो नूर का सुतून तुम ही हो फिर आपको सहने बैतुल मुक़द्दस में शबे जुमा दस शव्वालुलमुकर्रम सन् 259 हि० को सिलसिलए तैफ़ूरिया में दाख़िल किया और निस्बते सिद्दीक़िया से सरफ़राज़ फ़रमाकर शाह ज़िन्दाने सौफ़ का ख़िताब इनायत फ़रमाया ।

मदीने मुनव्वरा में हाज़री और उलूमें बातनी की तकमील : शाह ज़िन्दाने सौफ़ बदी उद्दीन अहमद رضي الله عنه अपने पीरो मुर्शिद हज़रत बायज़ीद बुस्तामी से इजाज़त लेकर हज्जे बैतुल्लाह के लिए मक्के मोअज़्ज़मा हाज़िर हुए हज से फ़राग़त के बाद मदीने तय्यबा हाज़िर हुए एक शब बेख़ुदी में बैठे हुए थे कि हुज़ूर ﷺ ने जमाले अतहर की ज़्यारत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और बग़रज़ तालीमें रूहानी हज़रत अली करम उल्लाह वज्हु के सुपुर्द फ़रमाया हज़रत अली عليه السلام की रूहे पुरफ़ुतूह ने आपको तमाम उलूमें अलवी व सफ़ली और उलूमे मुक़्तेयात से बहरावर फ़रमाया और बग़रज़ तरबियते ख़ास रूहे पाक हज़रत

इमाम मुहम्मद मेहदी عليه السلام के सुपुर्द फ़रमाया रूहे इमाम मुहम्मद मेहदी ने आपको सहायफ़े आस्मानी व कुतुब समावी की तालीम दी । फ़राग़त के बाद आपने फ़रमाया انا مفتاح العلوم और انا مفتاح الغوامض मैं तमाम उलूम की कुन्जी हूँ मैं असरार का जानने वाला हूँ । तकमीले उलूम के बाद सरवरे आलम ﷺ ने फ़रमाया ,''बदी उद्दीन'' हिन्दुस्तान जाइए और मख़लूक़ की हिदायत में कोशिश कीजिए ।

वतन को वापसी और हुक्म की तामील : इसके बाद आप अपने वतन अज़ीज़ वापस पहुँचे आपके वालिदैन ने जब हुजूर ﷺ का हुक्म सुना तो तो ये कहते हुए रुख़्सत किया ,''ऐ मेरे बेटे मेरी ऑखों की ठंडक काश ! ख़ुदावन्द कुद्दूस अपनी रहमत को तुम्हारी बरकत से तमाम आलम में फ़ैला दे ।'' (अलकवाकिबुद्दरारिया) आप ने अपने वालिदैन से इजाज़त हासिल की और सन् 269 हि० में हिन्दुस्तान के लिए पा पयादा रवाना हुए और ताशक़न्द की जानिब निकल गये जहॉ से लौटना पड़ा जब आप समरकन्द होते हुए आ रहे थे तो हूदों के एक गॉव से गुज़र हुआ वो मुस्लिम किबार पर लानत करने लगे आपने उन्हें इल्मी गुफ़्तुगू से क़ायल किया इनमें बेशतर मुसलमान हो गये और आप के साथ हो लिए इसके बाद ख़ुसरून क़ाफ़िले के लोगों से आप की मुलाक़ात हुई जिनका शीरख़्वार बच्चा मर गया था आपने बच्चे को तलब किया और दुआ की बच्चा ज़िन्दा हो गया ये देख कर क़ाफ़िले के लोग मुन्सलिक ब सिलसिला हुए जो राह में तौस तक आपके साथ रहे ।

अहमद बिन मसरूक़ को ख़िलाफ़तो इजाज़ते सिलसिला : ख़ुरासान से गुज़रने के दौरान अहमद बिन मसरूक़ मिले जो चन्द रोज़ सोहबत में रहकर मुतास्सिर हुए आपकी दावते ख़ास का एहतमाम किया इसी मौक़े पर मुरीद हुए और ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए । यहॉ से आप बग़दाद पहुँचे जहॉ अब्दुल क़ादिर ज़मीरी बग़दादी ने आपकी दावत की जिसमें अहमद बिन मसरूक़ ख़ुरासानी और उनके रफ़ीक़ बूअली रूदबारी जो सिलसिलए तमसीदा शाह कफर्रा से हैं शरीक हुए यहॉ आपने अब्दुल क़ादिर ज़मीरी और बू अली रूदबारी को सिलसिले में दाख़िल किया हिन्दुस्तान के सफ़र में अब्दुल क़ादिर ज़मीरी आपके हम राह हो लिए ।

हिन्दुस्तानी ताजिरों से मुलाक़ात : बदी उद्दीन मदार ﷺ बग़दाद से बसरा के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे हर दो बुज़ुर्ग हज़रत शिब्ली और हज़रते मन्सूर से मुलाक़ात हुई । जब आप बसरा पहुँचे जो इन अय्याम में क़हतसाली का शिकार था लोगों के इसरार पर आपने दुआ की इसक़दर पानी बरसा कि पानी की शिकायत जाती रही लेकिन आप जिस मक़सद से बसरा तशरीफ़ ले गये थे पूरा न हो सका हिन्दुस्तान के लिए कोई भी बेड़ा न था इत्तेफ़ाक़न आपकी मुलाक़ात हिन्दुस्तानी ताजिरों से हो गयी जो बसरा की क़हत साली सुन कर अनाज लाये थे उन्होंने आपको हिन्दुस्तान ले जाने का वादा किया लेकिन इनका जहाज़ जद्दा की बन्दरगाह पर लंगर अन्दाज था इस लिए आप जद्दा मय मुरीदीन के तशरीफ़ ले गये ।

हिन्दुस्तान का पहला सफ़र

फ़रीज़य अव्वल : आप ﷺ सन् 281 हि० में 24 मुरीदीन को हमराह लेकर बसरा की बन्दरगाह से हिन्दूताजिरों के जहाज़ पर सवार हुए जहाज़ रवाना हुआ साहबे अलकवाकिबुद्दरारिया कहते हैं कि जब आप ने मुक़ामें इब्राहीम की तरफ़ तवक़्क़ुफ़ किया तो रिफ़ाक़त में हज़रते नूह अलै० को पाया और फिर उनकी उम्मत यानी हिन्दुओं से मुख़ातिब हुए और रसूलल्लाह ﷺ की बड़ाई और फ़ज़ाइल ब्यान किये जो आपका फ़रीज़ए अव्वल था ।

क़हरे ख़ुदावन्दी : आपने उनको दीन में दाख़िल होने का मशवरा दिया कुफ़्फ़ार थे बरहम हो गये क़हरे ख़ुदा वन्दी का नुज़ूल हुआ जहाज़ दो हिस्सों में तक़सीम हो गया फिर पाश पाश हो गया बुज़ुर्गों का यह जत्था जहाज़ के टूटे तख़्तों पर बहता था कि सात अफ़राद शहीद हो गये बदी उद्दीन अहमद ﷺ ने साहिल पर सलामत पहुँचने की दुआ की जो मक़बूल हुई और 17 अफ़्राद पर मुशतमिल ये क़ाफ़िला मालाबार गुजरात के साहिल पर फ़रोकश हुआ।और इस नारे की बुनियाद पड़ी “ दम मदार बेड़ा पार ।

नूरानी महफ़िल : आपने दो रकअत नमाज़ शुकराना अदा की नक़ाहत का ये आलम था कि खड़े होने की भी ताब न थी सजदे से सर उठाया तो हज़रते ख़िज़्र ﷵ को खड़े पाया जो आपको लेकर वहाँ गये जहाँ कददो निगार में ज़रनिगार महल के अन्दर आलमे मिसाल में मुशाहीर अम्बिया व मुरसलीन के साथ जलवा गर होकर हुज़ूर ﷺ ने बदीउददीन मदार को अपनी गोद में बिठाया और चेहरे पर हाथ मस फ़रमाकर नूरानी फ़रमा दिया जिससे तबक़ाते अर्ज़ो समावात का हाल आइना हो गया और कुतबुल मदार मुक़ामे बहबूबियत पर पहुँच कर मस्जूदे ख़लायक़ हो गये फिर बेहिशती लिबास ज़ेब तन फ़रमाकर लिबासे बशरियत से बेनियाज़ कर ताहिरे बेमिसाल और पैकरे नूरो जमाल कर दिया फिर नौ 9 लुक़मे शीरो बृंज के खिलाये जिससे कुतबुल मदार ने 9 आलम फ़तेह किये मसलन नासूत मलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाहूत सियाहूत महमूद शाही और नसीर अनाक हुज़ूर ﷺ ने इन आलमीन का मदार ठहराकर मक़ामे समदियत व फ़रदानियत अता फ़रमाकर मदारुल आलमीन का ख़िताब इनायत फ़रमाया । यही नहीं हुज़ूर ﷺ ने सौमे विसाल की नेमते उज़्मा की इजाज़त अता फ़रमा कर निस्बते ख़ास का महवर बना दिया । कुदरत की अलामतें वलायत की अमारत करामत के दलायल इल्म के फ़ज़ायल आफ़ताब की तरह रौशन हो गये बख़शिश के ख़ज़ानों की कुंजियाँ आपके क़ब्ज़य इक़तिदार और दस्ते इख़्तियार में देदी गयीं औलियाय वक़्त आप के हुक्म के ताबेय बनाये गये वाज़ेह हो कि इस नूरानी महफ़िल में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की वह जमात मौजूद थी जिनका ज़िक्र कुरआन में मरकूम है अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने अपनी निस्बतों और मोजिज़ात के तोहफ़े इनायत फ़रमाये किसी ने तख़्त इनायत फ़रमाया किसी ने दम किसी ने नक़ाब इनायत फ़रमाये किसी ने पैराहन किसी ने असा इनायत फ़रमाया तो किसी ने हयाते अबदी की दुआ फ़रमायी। फिर हुज़ूर ﷺ ने पूरी दुनिया में सामी और ग़ैर सामी अक़वाम में रुश्दो हिदायत का हुक्म फ़रमाया और रुख़्सत हुए। क़दमें रसूल के निशान, हज़रत बदी उद्दीन मदार ؓ का चिल्ला शरीफ़ आपके नूर से मन्सूब मस्जिदे नूरी ज़र निगार महल खम्बात में आज भी मौजूद है ।

नूरानी महफ़िल : आपने दो रकअत नमाज़ शुकराना अदा की नक़ाहत का ये आलम था कि खड़े होने की भी ताब न थी सजदे से सर उठाया तो हज़रते ख़िज़्र عليه السلام को खड़े पाया जो आपको लेकर वहाँ गये जहाँ कददो निगार में ज़रनिगार महल के अन्दर आलमे मिसाल में मुशाहीर अम्बिया व मुरसलीन के साथ जलवा गर होकर हुज़ूर ﷺ ने बदीउददीन मदार को अपनी गोद में बिठाया और चेहरे पर हाथ मस फ़रमाकर नूरानी फ़रमा दिया जिससे तबक़ाते अर्ज़ो समावात का हाल आइना हो गया और कुतबुल मदार मुक़ामे बहबूबियत पर पहुँच कर मस्जूदे ख़लायक़ हो गये फिर बेहिशती लिबास ज़ेब तन फ़रमाकर लिबासे बशरियत से बेनियाज़ कर ताहिरे बेमिसाल और पैकरे नूरो जमाल कर दिया फिर नौ 9 लुक़्मे शीरो बृंज के खिलाये जिससे कुतबुल मदार ने 9 आलम फ़तेह किये मसलन नासूत मलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाहूत सियाहूत महमूद शाही और नसीर अनाक हुज़ूर ﷺ ने इन आलमीन का मदार ठहराकर मक़ामे समदियत व फ़रदानियत अता फ़रमाकर मदारुल आलमीन का ख़िताब इनायत फ़रमाया । यही नहीं हुज़ूर ﷺ ने सौमे विसाल की नेमते उज़्मा की इजाज़त अता फ़रमा कर निस्बते ख़ास का महवर बना दिया । कुदरत की अलामतें वलायत की अमारत करामत के दलायल इल्म के फ़ज़ायल आफ़ताब की तरह रौशन हो गये बख़शिश के ख़ज़ानों की कुंजियाँ आपके क़ब्ज़य इक़तिदार और दस्ते इख़्तियार में देदी गयीं औलियाय वक़्त आप के हुक्म के ताबेय बनाये गये वाज़ेह हो कि इस नूरानी महफ़िल में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की वह जमात मौजूद थी जिनका ज़िक्र कुरआन में मरकूम है अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने अपनी निस्बतों और मोजिज़ात के तोहफ़े इनायत फ़रमाये किसी ने तख़्त इनायत फ़रमाया किसी ने दम किसी ने नक़ाब इनायत फ़रमाये किसी ने पैराहन किसी ने असा इनायत फ़रमाया तो किसी ने हयाते अबदी की दुआ फ़रमायी। फिर हुज़ूर ﷺ ने पूरी दुनिया में सामी और ग़ैर सामी अक़वाम में रुश्दो हिदायत का हुक्म फ़रमाया और रुख़्सत हुए। क़दमें रसूल के निशान, हज़रत बदी उद्दीन मदार رضي الله عنه का चिल्ला शरीफ़ आपके नूर से मन्सूब मस्जिदे नूरी ज़र निगार महल खम्बात में आज भी मौजूद है ।

क़दीम

हिन्दुस्तान पर तायराना नज़र

मुसल्मानों का यह पुख़्ता अक़ीदा है कि हज़रते आदम عليه السلام बेहिश्त से हिन्दुस्तान जन्नत निशान में उतारे गये और हिन्दुस्तान को ही सबसे पहले अल्लाह का पैग़ाम सुनने का फ़ख़्र हासिल है निशान देही के ऐतबार से कोह सरानद्वीप पर आठ फुट लम्बा आपके क़दम का निशान आज भी मौजूद है (इब्ने बतूता)

आज से तक़रीबन चार हज़ार बरस पहले हिन्दुस्तान में आर्या घुस आये और यहाँ के अम्नो अमान को ख़ासा नुक़सान पहुँचाया द्राविणों को ग़ुलाम बनाया ये आग, सूरज और मौत की पूजा करते थे । हिन्दुस्तान पर 527 बरस कब्ल अज़्मसीह महावीर की हुकूमत रही 483 कब्ल अज़्मसीह बौद्ध मज़हब के मोज्जिद गौतम बुद्ध का दौर रहा । मौर्या ख़ानदान ने 321 कब्ल अज़्मसीह से लेकर 150 कब्ल अज़्मसीह तक हुकूमत की । चन्द्र गुप्त मौर्या चूँकि मौर्या नाम की शूद्र औरत से पैदा हुआ था इस लिए उसके दौरे हुकूमत को मौर्या दौर कहते हैं और उसका ख़ानदान मौर्या ख़ानदान कहलाता है इसी ख़ानदान में अशोक वर्धन की हुकूमत क़ायम हुई अशोक ने बौद्ध मज़हब को बहुत फ़रोग़ दिया । महाराजा हर्ष वर्धन के अहदे हुकूमत तक़रीबन 900 बरस तक बुद्ध मज़हब हिन्दुस्तान का वाहिद मज़हब रहा ह्यानसांग कहता है कि बुद्ध मज़हब हिन्दुस्तानी ब्रह्मनी मज़हब में शामिल हो गया और अपनी इंफ़्रादियत खो दी इसमें भी औतारों की भरमार और मूरत परस्ती का दौर दौरा नज़र आने लगा । अगर अरब सैकड़ों बुतों की परस्तिश कर रहे थे तो हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान में हज़ारों बुतों की पूजा हो रही थी । अगर अरब अपनी बेटियों को ज़िन्दा दरगोर कर रहे थे तो हिन्दुस्तानी अपनी औरतों को ज़िन्दा जला रहे थे अगर अरब का एक गिरोह काबे का उरयाँ तवाफ़ कर रहा था तो हिन्दुस्तान में बरहना मर्द और औरतें अपनी परस्तिश करा रहे थे । ग़रज़ कि अरब और हिन्दुस्तान में किसी भी ऐतबार से कमी नहीं थी हिन्दुस्तान और अरब ज़मानये क़दीम से बाह्मी ताल्लुक़ात बनाये हुए थे आपस में तिजारत के क़दीम सुबूत भी मिलते हैं । इसके अलावा एक चलती हुयी रवाएत है कि

हज़रत तमीमदारी सन् 9 हि० में मुसलमान होने के बाद हिन्दुस्तान चले आये जुनूबी हिन्दुस्तान के इलाक़े मदारस के नवाह में आपकी मज़ारे मुबारक है। (ख़िलाफ़ते रशीदा) हिन्दुस्तान की अज़मत में चार चाँद उस वक़्त और लग गये जब पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ ने फ़रमाया,'' मैं हिन्दुस्तान से आती हुयी अल्लाह की मुआर्फ़त की भीनी भीनी खुश्बू सूँघ रहा हूँ।'' हज़रत अली عليه السلام ने फ़रमाया ,''सबसे पाकीज़ा और खुश्बूदार मुक़ाम हिन्दुस्तान है।''(सजस्तये मरजान) ये हिन्दुस्तान की पाकीज़गी की ज़बरदस्त दलील है। हज़रते उमर رضي الله عنه के ज़माने में अरबों ने जब अपनी शर्क़ी सलतनत में नये मराकिज़ क़ायम किये तो हिन्दुस्तान को भी अपने अहाते में ले लिया। हज़रते उसमान رضي الله عنه ने अपने अहद में हकीम बिन जबाला को हिन्दुस्तान भेजा और हालात मालूम किये। हज़रते उसमान رضي الله عنه के दौरे ख़िलाफ़त में ही बहरीन के एक वाली ने गुजरात और काठियावाड़ पर दरिया के रास्ते से हमला किया। हज़रत अली عليه السلام के अहद में सीस्तान की जानिब से कुछ मुसल्मानों ने पेश क़दमीं की तक़रीबन सन् 15 हिजरी में मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिंध को फ़तेह किया। उस वक़्त से लेकर मोतसिम अब्बासी की ख़िलाफ़त के ज़माने तक ख़लीफ़ा की जानिब से कोई न कोई हाकिम आकर यहाँ हुकूमत करता। सुलेमान, शहरयार, इब्नेहौक़िल और अस्तसख़री के सफ़रनामों के ऐतबार से ऐसे सुबूत भी मिलते हैं कि इसी ज़माने में मुस्लिम सूफ़ियों का रुख़ भी हिन्दुस्तान की तरफ़ हुआ। इन सूफ़ियों को बाज़ मुवर्रिख़ीन ने सौदागर कहकर भी ख़िताब किया है। इन बा अज़मत सूफ़ियों में हज़रत बदी उद्दीन अहमद मदारुल आलमीन सरे फ़ेहरिस्त हैं। हज़रत क़ुतबुल मदार رضي الله عنه 17 बुज़ुर्गों के साथ मालाबार के साहिल पर उतरे यहाँ आपने गुजरात के बल्हर राजाओं और मालाबार के सामुरी राजाओं को मोहसिन और मेहरबान पाया।

तबलीग़े दीन के नये रास्ते : हिन्दुस्तान के इस ख़ित्ते में यूँ तो कोई ख़ास तब्दीली नहीं हुयी थी ऋषियों और मुनियों का बोलबाला था शोब्दे बाज़ों का डंका बज रहा था जो जितना बड़ा शोबदे बाज़ था वो उतना ही बड़ा देवता

था ऋषियों की इबादत का तरीक़ा ये था कि वो अपनी इंद्रियों को बस में करके अपनी सांस पर क़ाबू पा लेते थे इस तरह उनका एहतराम ज़्यादा होता था ऋषि अक्सर जंगलों और पहाड़ों में में रहते थे । इब्ने बतूता के ऐतबार से यहाँ के जोगी अपनी सिद्धी की बिना पर हवा में मोअल्लक़ होजाते थे यहाँ नुजूम का बड़ा दख़्ल था नेक और बद शकुन पर लोगों का ऐतक़ाद ज़्यादा था इल्मे नुजूम जानने वालों की क़द्र ज़्यादा होती थी। अलग़रज़ मदारुल आलमीन रज़ी० ने भी ज्ञानी ध्यानी और रूहानी फ़लसफ़े का इस्तेमाल किया हब्स दम,शग़्ले नफ़ी अस्बात,शग़्ले दम बहाल,शग़्ले पासनिफ़ास वग़ैरह शुरू किया जंगलों और पहाड़ों में जाकर अपना मिशन चलाया लोग जुड़ने लगे जनेउ धारी आये तो उनके 1 बद्धी और डाल दी जाती ,कड़ाधारी आये तो दूसरे हाथ में फुन्दना बान्ध दिया गया, मालाधारी आये तो गले में कलीदा डाल दिया गया, फिर वह सब कुछ जो इस्लाम की लासानी तालीमात के लिये ज़रूरी होता मुहइया किया जाता । जब तालीम पूरी हो जाती और आने वाला मुत्तफ़िक़ और मुतमईन हो जाता तो बद्धी,फुन्दना,कलीदा बढ़ा दिया जाता और वह अपने गुनाहों का बोझ सर मुण्डा कर उतार देता । हिन्दुस्तानी रिवाज के मुताबिक़ जब लोग पूछते तो वह कहता ,"आज कुफ़्र का देहान्त हो गया है।" इनमें से बेशतर साहबे बुज़ुर्ग हुए और जब इनको निशान दिया गया तो बाज़ ने शगुन तलाश किया और जब माह यानी चाँद को बुर्जेहौत यानी माही में पाया तो नेकशगुन जानकर अलम उठाया और तबलीग़ के लिये निकल गये इस तरह बग़ैर दिल आज़ारी के तबलीग़ का सिलसिला जारी रहा। जब आप अतराफ़ो जवानिब में तबलीग़ फ़रमा रहे थे कि कुछ फ़िरक़े जैसे महाकालिया, चन्द्र भक्तिया, विक्रान्तिया, आवतिया भक्तिया, गंगायात्रा, राजपुत्रिया वग़ैरह के एहतिजाज पर आपको मज़ाहमतों का सामना करना पड़ा बाज़ फ़िरक़े चाहते थे कि आप से कुछ ऐसा ज़ाहिर हो जो उनकी फ़हमो अदराक से बाला तर हो । चूँकि अल्लाह तआला ने हज़रत बदीउद्दीन अहमद कुतबुल मदार ﷻ को जिस मिशन के लिये तफ़वीज़ फ़रमाया था वह हिदायत की राह पर चल कर नेकी करने और ज़ब्ते नफ़स के ज़रिए जामिद ज़ेहनों को हरकत में लाना मक़सूद था यह काम दर अस्ल अल्लाह के सच्चे दीन को जो नूह عليه السلام लाये थे और जिस पैग़ामे वही को ग़लत तहरीफ़ाते मानवी के ज़रिये मस्ख़ कर दिया गया था

इस्लाम की रौशनी में पेश करना था । लिहाज़ा अल्लाह तआला ने ऐसे मौक़े पर आप की हौसला अफ़ज़ाई के लिये एक तख़्त इनायत फ़रमाया जब आप इस पर बैठ कर परवाज़ करने लगे तो ये लोग मुतहय्यर हुए और बेशतर इस्लाम में दाख़िल हो गये । यह तख़्त भी इशाअते दीन में कारगर साबित हुआ ।

ज़बरदस्त इस्तेक़बाल : जब लोगों से राब्ता क़ायम हुआ तो लोगों ने दो अज़ीम ज़्यारतगाहों से रूशिनास कराया आप बेचैन हो उठे और अपने साथियों के साथ गुजरात के लिए रवाना हुए । दरियाये चुनब और तूमी के क़रीब बसने वाले क़स्बा टांडा पहुँच कर मनु मेहरिस्त (हज़रते नूह عليه السلام) के मज़ारे मुबारक की ज्यारत से मुस्तफ़ीद हुए । जब आप आदम की चोटी की ज़्यारत के लिए रवाना हुए तो कंगानूर के बन्दरगाह में राजा चैरोमन पैरोमल सामुरी ने आपका ज़बरदस्त इस्तेक़्बाल किया और 36,000 अफ़्राद के साथ मुसल्मान हो गया । चैरोमन ने शाही फ़रमान के ज़रिये मुसल्मानों को मस्जिदें बनाने की इजाज़त दी इसी फ़रमान के तहत मालाबार में कई जगह मस्जिदें बनाई गयीं और समन्दर के किनारे किनारे नव मुस्लिम बस्तियाँ क़ायम हो गयीं (इनमें कई बुज़ुर्गों ने नव मुस्लिम लड़कियों से शादियाँ भी करलीं जिनकी नस्ल दमोफला मालाबार में और हटिया के नाम से कोकिन में मशहूर हुयी) मशहूर मोवर्रिख़ बिलाज़री ने भी इन हालात का तज़किरा किया है इसके अलावा बुज़ुर्ग बिन शहरियार और सौदागर सुलेमान जो तीसरी सदी हिजरी में हिन्दुस्तान आये थे ने लिखा है कि यहाँ के राजाओं के दिलों में बेहद हुस्नेज़न मौजूद था । सन् 305 हिजरी में आप अपने तमाम मुआमलात अब्दुल क़ादिर ज़मीरी पर छोड़ कर राजा चैरोमन पैरोमल सामुरी के बेहद इसरार पर हज्जो ज़्यारते हरमैनो शरीफ़ैन के लिए रवाना हुए मदीने पहुँच कर राजा आप से जुदा हो गया फिर उसका कहीं पता न चला और आप अपने वतने अज़ीज़ तशरीफ़ ले गये वालिदैन की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुए मुफ़ारिक़त का ग़म दूर हुआ मगर आपके वालिदैन तीनों जवान बेटों के ग़म से निढाल हो चुके थे उनकी ख़्वाहिश थी कि आप उन्हें छोड़ कर न जायें और बुढ़ापे का सहारा बनें आप अपने वालिदैन को लेकर शहर हलब में मस्जिदे ख़लील के क़रीब एक मकान में मुन्तक़िल हो गये ।

शाम क़राम्तियों के जगह जगह हमले से दो चार था ही कि अचानक एक बुरी ख़बर ने झिंझोड़ कर रख दिया सन् 316 हिजरी के क़रीब क़राम्तियों ने संगे असवद को चोरी कर लिया जो तक़रीबन चालीस ऊँटों पर यके बाद दीगरे लाद कर बहरीन ले जाया गया ये ख़बर हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हल्बी ﷺ के लिये भी शाक़ गुज़री और दिल का दौरा पड़ने से आप वासिले बेहक़ हो गये । हज़रते कुतबुल मदार के वालिद की क़ब्र के फूल अभी मुरझाए भी न थे कि आपकी वालिदा जनाब बीबी हाजरा तबरेज़ी उर्फ़ फ़ात्मा सानी भी जन्नत नशीन हो गयीं वालिदैन का साया सर से उठ जाने के बाद आप अपने भतीजों का सहारा बने ।कई मर्तबा आपने संगे असवद के लिए हाथ पॉव मारे मगर नतीजा सिफ़र रहा । तारीख़ की औराक़ गर्दानी से पता चलता है कि सन् 336 हिजरी के क़रीब अबू ताहिर से एक मुहायदा हुआ जिसमें यह तय पाया गया कि जो शख़्स अब्दुल्लाह बिन मैमून जो कि अन्धा हो गया था की आखों की बीनाई वापस कर दे उसको संगे असवद दे दिया जाये गा । आप ﷺ ने संगे असवद को गुस्ल देकर उसका पानी ऑखों पर मलवा दिया अब्दुल्लाह बिन मैमून की बीनाई वापस आ गयी । तारीखे तेहरान के हवाले से शाह शम्स उद्दीन नौरोज़ क़ादरी अपनी ग़ैर मतबूआ किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि संगे असवद का बेशतर हिस्सा टूट गया था उस वक़्त के मोअज़्ज़िज़ हज़रात ने मिल कर दोबारा उसी मुक़ाम पर नसब किया जहॉ से निकाला गया था । (मज़ीद तहक़ीक़ जारी है) आप ने ये ख़ुश ख़बरी अपने वालिदैन की क़ब्र पर जाकर सुनाई फिर मुख़्तलिफ़ दयारो इम्सार में होते हुए अपने पीरो मुरशिद हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी के मज़ार पर हाज़री दी जहॉ से आवाज़ आयी ‘‘हिन्दुस्तान आपका मुन्तज़िर है ’’ ये सुनते ही आप ने दुआए बश्मुख़ का विर्द शुरू किया जिसकी बरकत से एक तख़्त ज़ाहिर हुआ और आप हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुए ।

हिन्दुस्तान का दूसरा सफ़र

जिन बादशाह :हज़रत ज़िनदा शाह मदार ﷺ तख़्ते हवाई पर सैर करते हुए हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला रहे थे कि राह में जिन्नों के बादशाह इमादुल मुल्क से मुतास्सिर होकर ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपने हमजलीसियों के साथ सिलसिले में दाख़िल होकर तमाम उम्र साथ रहने का अहद किया ।

तारा गढ़ अजमेर :आज के अहमदाबाद में आपका क़याम हुआ दरियाए साबरमती के क़रीब हुआ जहॉ आपके फ़ैज़े करामत से मुतास्सिर होकर छत्तीस हज़ार अफ़्राद इस्लाम में दाख़िल हो गये यहॉ से आप का क़ाफ़िला अजमेर में कोकला पहाड़ी पर फ़रोकश हुआ वहॉ के रहने वालों ने आपको मना किया मालूम करने से पता चला कि ख़िंग्सवारों की लाशें जंगल में बे गोरो कफ़न पड़ी हुयी हैं जिनसे रात में चीख़ने की आवाज़ें आती हैं और लोग परीशान हो जाते हैं आपने उन लाशों दफ़्न करवा दिया कुछ लोग इस्लाम में दाख़िल हो गये लेकिन 52 लोगों ने रात के अंधेरे में आप के क़ाफ़िले पर धावा बोल दिया जब क़रीब पहुँचे तो सब अन्धे हो गये सरकार की दुआ से इनकी बीनाई वापस आ गयी सब इस्लाम में दाख़िल हो गये ये लोग आज भी बावन गोत्र के नाम से मशहूर हैं इनमें एक चौहर सुद्ध भी थे इनका इस्लामी नाम इस्लाम नबी रखा गया । बाज मुवर्रिख़ीन ने इस वाक़्ये को कोहे अरावली पर होना बताया है ।

अधर नाथ :अधर नाथ आपका शोहरा सुनकर जादू के चनों का एक थाल लेकर हाज़िर हुआ जिसको आपने अपने साथियों में तक़सीम करा दिया और एक चना ज़मीन में गाड़ दिया जो फ़ौरन उग आया(बाद में वह 15फुट ऊँचा हो गया जो अभी तक मौजूद था) अधर नाथ ये सब देख कर मुसल्मान हो गया और यह मिसाल क़ायम हुयी "फ़क़ीरी क्या लोहे के चने चबाना है ।"

राजा जस्वन्त सिंह :अजमेर से आप ﷺ भटिण्डा तशरीफ़ ले गये जहॉ आपकी मुलाक़ात बाबा रतन साहू सहाबिये रसूल ﷺ से हुयी । यहॉ से आप गुजरात के नवाह में तबलीग़ो इशाअत फ़रमाते हुए खम्माच में रौनक़ अफ़्रोज़

हुआ राजा जस्वन्त सिंह ने इस्लाम में दाख़िल होने का एलान किया इनका इस्लामी नाम जाफ़र ख़ॉ रखा गया ।

बाद तमाम अर्से दराज़ आप के दिल में हरमैनो शरीफ़ैन का शौक़ मोजेज़न हुआ आप अरब के लिए रवाना हुए जब आप सूरत से बैतुल्लाह तशरीफ़ ले जा रहे थे कि सहराए अरब में एक खोपड़ी से आपका पैर टकरा गया। साहबे अलकवाकिबुद्दरारिया कहते हैं कि आपने उसका हाल पूछा फ़िर दुआ की देखते की देखते उस पर गोश्त चढ़ गया और वह ज़िन्दा हो गया आपने नेक अमल करने की हिदायत की और आगे बढ़े ।

वतने अज़ीज़ की ज़्यारत : हज़रत ज़िनदा शाह मदार मक्का पहुँचे हज के फ़राएज़ अंजाम दिये इसके बाद मदीने तय्यबा हाज़िर हुए बाद अर्से तवील आपने काज़मैन पहुँच कर हज़रत इमाम मूसा काज़िम हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी और हज़रत इमाम हसन असकरी वगैरहुम के मज़ारात की ज़्यारत से फ़ैज़याब हुए जितने दिन क़याम रहा हज़रत अली عليه السلام के फ़्यूज़ो बरकात से माला माल हुए ।इसके बाद अपने पीरो मुर्शिद हज़रत बायज़ीदे पाक के मज़ार पर एक अर्से तक मोत्तकिफ़ रहे और श़ग्ले हयाते अबदी व श़ग्ले सुल्तानुल अज़कार में महव रहे और बहुत सारी इमारतें भी तामीर करायीं । नजफ़ अशरफ़ से आप अपन वतन शहर हलब पहुँच कर अपने भाई महमूद उद्दीन के बच्चों से मुलाक़ात की । चन्द रोज़ क़याम के बाद आप तुर्की के लिए रवाना हो गये ।

शेख़ अता :हज़रत जिन्दा शाह मदार رضي الله عنه का क़याम इस्तम्बोल में हुआ जहॉं एक यहूदी से आपकी मुलाक़ात हुयी वह मोजज़य क़ुरआन का मुतमन्नी था आपने एक सूखे दरख़्त के पास ले जाकर तिलावते क़ुरआन फ़रमाई दरख़्त ने भी दोहराया ये देख कर वह ईमान की दौलत से माला माल हो गया और सिलसिले में दाख़िल होकर मर्तबा पाया आपने इनका नाम अब्दुल्लाह अताउल हक़ रखा यह शेख़ अता और तक़ी उद्दीन के लक़ब से मशहूर हुए ।

क़बालतुन्निज़ामिया में है कि जामए निज़ामिया में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه को बुलाया गया हज़रत शेख़ निज़ाम उद्दीन हसन फ़रमाते हैं कि शेख़े मोअम्मर हज़रत बदी उद्दीन मदार को दुआ के लिए बुलाया गया अल्लामा इब्ने जूज़ी

वग़ैरह ने मिसाली पज़ीराई फ़रमायी। आपﷺयहाँ से बग़दाद के लिए रवाना हुए

काज़मैन,बग़दाद,करबला,नजफ़ और इसराईल का मुक़द्दस सफ़र :

साहबे काशिफ़े असरार रक़म तराज़ हैं कि शाह अहमद ज़िन्दाने सौफ़ ﷺ ने अपने मुरीदीन व मोत्तक़िदीन के साथ काज़मैन शरीफ़, बग़दाद शरीफ़, करबला शरीफ़ वग़ैरह में ख़ूब इरफ़ान की दौलत लुटाई ।

इस मुक़द्दस सफ़र की सबसे बड़ी आलाई यह है कि आपने एक नज़्म कही (बाज़ मुसन्निफ़ीन ने इस नज़्म को हिन्दुस्तान के आख़री सफ़र में तहरीर किया है) राक़िमुल हुरूफ़ जिसका मन्ज़ूम तर्जुमा पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है ।

मैं अपने वक़्त का उनक़ा हूँ कोहे क़ाफ़ महवर है
है नादिर कर दिया रब ने ये उसका ख़ास मज़हर है
न बेची आख़िरत अपनी न दुनिया ही ख़रीदी है
जो उक़बा बेच कर दुनिया ख़रीदे सबसे कमतर है
ख़ुदा का शुक्र मेरी शाएराना फ़िक्र ऐ लोगो !
हसद से बुग़्ज़ो कीना हिर्से दुनिया से जो ताहिर है
सुनो मैं वो कबूतर हूँ जो दाने के लिए यारो
न उतरा ग़ैर की छत पर ये ख़ुद्दारी का जौहर है
ज़माने दो गुज़ारे दारे फ़ानी में मगर अब तक
कभी दस्ते तलब फैला न ख़ुम मेरा हुआ सर है
मय हुब्बे मुहम्मद जिसने पी उस रिन्द के आगे
दो आलम का न होना और होना सब बराबर है
ख़ुदा ही राज़िक़े मुतलक़ है सब का पालने वाला
अगर इसके सिवा सोचे तो दीने हक़ से बाहर है
ज़माना नेअमते दुनिया पे कितना ख़ुश नज़र आया
ये मेरी समदियत मेरे लिये उक़बा का गौहर है
वो जाहिल है जो दुनिया के लिए दर दर भटकता है
वो आक़िल है जो उक़बा के मुक़द्दर का सिकन्दर है
ये दुनिया मेरी नज़रों में जो हूरे ऐन बन जाए
न डालूँ गा नज़र ये जज़्बा मेरे दिल के अन्दर है
मेरी ऑखें न मोती हों न सोने सा हो ये चेहरा
ख़ता गर दीने अहमद के लिए मुझ से जो अज़बर है
है गुदड़ी जब तलक फ़क़्रो फ़ना की जिस्म पर मेरे
क़ुबूले बन्दगी तौक़े बला मानिन्दे अम्बर है
ये संगो ख़िश्त सर का ताज हैं बस मेरी तुरबत के
है बाद अज़ मौत बे मानी लगा जो ज़र्री बिस्तर है
ख़ज़ाना सब्रो उल्फ़त का क़िनाअत का सिकन्दर हूँ
कि ताजे बाद शाहत से मेरी टोपी ही बेहतर है
मैं उस जाए मुक़द्दस का त्यूरे आस्मानी हू
जहाँ के आइने में न हक़ीक़त माहो अख़्तर है
भला मैं शाहबाज़े इश्क़ उस पर क्या तवज्जेह दूँ
कि है नाचीज़ दुनिया और मिस्ले मुर्ग़े अहक़र है
दुआओं की रवाना कर रहा हूँ फ़ौज हर जानिब
हमारे पास फ़क़्रे सल्तनत का ख़ूब लश्कर है
हमारी जिन्स ही मिलती नहीं इन दुनिया वालों से
तआल्लुक़ ही नहीं दुनिया से कोई बस ये बेहतर है
मैं नस्ले फ़ात्मी औलादे ज़ैनुल आब्दीं यारो
मेरी मिल्लत मुहम्मद मुस्तफ़ा है दीन जाफ़र है

जो लेकर रोज़ए फ़िरदौस मुझको जायेगा उस दिन | इमामे ख़ल्क़ है वो मूसा काज़िम मेरा रहबर है
रज़ा है नाम जिनका वो अली हाजत रवा ऐसे | तवाफ़ उनके मकॉ का गर करूँ मैं हज्जे अकबर है
तक़ी के और नक़ी के मासिवा तुम नाम मत लीजो | है उनकी ज़ात शरीअत की मुआविन कॉपे काफ़िर है
गुलामाने इमामे असकरी में मैं भी शामिल हूँ | ये बन्दा भी है असकर जानिये जो उनका लश्कर है
गुज़र जब दारे फ़ानी से सुए उक़बा मेरा होवे | तो मेहदी आख़िरी आयें दुआ ये मेरे लब पर है
जमीनों आसमा जिनकी सताइश हर घड़ी करते | वो हैं शब्बीरो शब्बर जिनका चर्चा आज घर घर है
मैं अपने वक़्त का ईसा हूँ मुर्दा दिल ये दुनिया है | ये जिन्दा इस लिए है दम जो मेरी रूह परवर है
कि ये एजाज़ है मेरी फ़साहत और बलाग़त का | इमामे वक़्त है ये ज़ात शोअरा की पयम्बर है
तेही दस्ती नहीं रखता मैं मिस्ले शाएरे ज़ाहिर | मेरा हर लफ़्ज़ यारो कुल्जुमे वहदत का गौहर है
जो की तहक़ीक़े गौहर और गरीबॉ झॉक कर देखा | हमारे शौक़ ने समझा दिया वो शाफ़े महशर है
मैं जब बहरे फ़ना फ़िल्लाह में ग़ोता लगाता हूँ | हर एक राज़े हक़ीक़त मुनकशिफ़ हो जाता मुझ पर है
हुआ ग़र्क़ाब जब मेरी ख़ताओं का सफ़ीना है | सिमट कर आ गया पहलू में जो ईमॉ का जौहर है
फंसा है दिल मेरा गरदाबे दुनिया के शिकंजे में | मगर ये पाक तीनत रूह दो आलम की यावर है
मैं अपनी अस्ल की जानिब सदा परवाज़ करता हूँ | मगर आलूदगीए जिस्म रोढ़ा बनती अकसर है
सुनो ये गर्दिशे चर्ख़े कोहन से मैं परीशॉ हूँ | वगर्ना हासिले मक़सद को मेरी एक ठोकर है
मैं करता हूँ सदा जेहदे मुसलसल दीनो दुनिया में | मगर ख़ाली अभी असबाबे दीनीं से ये दफ़्तर है
मैं पैरोकार हूँ आले मुहम्मद और मुहम्मद का | क़िनाते फ़क़रो फ़ाक़ा पर ज़मीर अपना मुफ़ख़्ख़र है
नबी के बाद अली को ही इमामे हक़ समझता हूँ | मेरी नज़रों में कोई भी नहीं अब उनके हमसर है
अक़ीदत पाक रखता हूँ शहन्शाहे नजफ़ पर मैं | वो कुल उम्मत का मौला है ज़माना उस पे शशदर है
अली व मुस्तफ़ा एक जिस्मो जॉ हैं बिलयक़ीं लोगो | मैं महबूबे मुहम्मद हूँ मेरा महबूब हैदर है
अगर बुग्ज़ो हसद हो मेरे मौला से तो लानत है | ब्रादर भी मेरा गर हो तो वो दुश्मन से बढ़ कर है
अली के इश्क़ का है बीज हमने बो दिया दिल में | फ़सल ये काटने का आख़री दिन रोज़े महशर है
जज़ा के रोज़ जब सब अलअतश चिल्ला रहे होंगे | नबीए पाक से मुझको उम्मीदे आबे कौसर है
मदद के वास्ते कोई भी निकले गा न महशर में | बजुज़ आले नबी ज़ाते अली के कौन यावर है
जो दरवाज़ा हैं शहरे इल्म का उन्हीं ने बख़्शा है | मुझे मिफ़्ताहे इल्मे बातनी है और ज़ाहिर है
अमीरुल मोमिनी की जब भी मैं तारीफ़ करता हूँ | तो ऐसी तक़वियत पाता हूँ जो हर शय से बेहतर है
सुनो जो फ़ातहे ख़ैबर है मैं उसका हूँ शैदाईं | गुलामें क़म्बरी भी मेरे हक़ में सबसे बेहतर है
"बदी" को भी गिरोहे सादिक़ीं में अपने शामिल कर | कि बख़्शिश का यही सामान "आमिर" को मयस्सर है

आस्मान से खाना ज़ाहिर हुआ :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ का क़याम इसराईल के घने जंगल में हुआ एक दिन आप एक सब्ज़ दरख़्त के नीचे ज़रनिगार तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ थे क़रीब ही चश्मा बह रहा था उस वक़्त आप बिलकुल तन्हा थे कि मुहम्मद बिन अली और अबू बक्र वारिक़ आ पहुँचे फिर तक़रीबन 40–50 अफ़्राद जमा हो गये आप ने मुहम्मद बिन अली के कहने पर आपने आस्मान की जानिब इशारा किया आस्मान से खाने की नेअमतें ज़ाहिर हुयीं जिसको तमाम हाज़रीन ने सैर होकर खाया। फिर मुहम्मद बिन अली ने एक सवाल किया जिसका आपने फ़सीह जवाब दिया जिसको हाज़रीन समझने से क़ासिर रहे । (इस वाक़ए की तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है)

वली अल्लाह की हड्डी : अस्फ़हान से आपका गुज़र हुआ जो इस वक़्त क़हत साली का शिकार था यहाँ एक ईसाई रहबर कर्तब दिखा रहा था जब वह आस्मान की तरफ़ हाथ उठाता बारिश शुरू हो जाती जिससे वहाँ के मुसल्मानों के अक़ीदे लरज़ गये आपने माज़रा सुना और उस राहिब को कर्तब दिखाने के लिए लोगों से कहा राहिब आया आस्मान की तरफ़ हाथ बुलन्द किये आपने एक शख़्स से उसके हाथ में दबी शय को छिनवा कर लोगों को दिखाते हुए कहा ये एक वली अल्लाह की पसखुर्दा हड्डी है जब जब ये ज़ेरे आस्मान आयेगी बारिश होगी फिर आपने दुआ फ़रमाई कि बारिश की शिकायत न रही ।

कुछ अर्से के बाद हज़रत ज़िनदा शाह मदार ﷺ आज़िमे हिन्दुस्तान हुए

हिन्दुस्तान का तीसरा सफ़र

भौंकने वाला कुत्ता : बंगाल में बाकड़ा के करीब आपका क़याम हुआ यहाँ के रहने वाले जादूगर लोगों को भौंकने वाला कुत्ता बना देते थे । जानी मुहम्मद इब्ने अहमद क़ानी अलकवाकिबुद्दरारिया में लिखते हैं कि आप ने यहाँ के जादूगरों को दावते इस्लाम दी तो उन्हों ने आप पर जादू किया जब असर न हुआ तो माफ़ी माँगी और इस्लाम में दाख़िल हुए ।

बकरी बना दिया : लेकिन जब आप का क़ाफ़िला मुर्शिदाबाद पहुँचा और

आपने क़रीब के गॉव में जब अपने एक ख़ादिम को सुकून की जगह तलाश करने के लिए भेजा तो वहॉ के जादूगरों ने उस ख़ादिम को बकरी बना दिया जब आप को मालूम हुआ तो आप वहॉ पहुँचे नज़र पड़ते ही इनकी उधार लायी हुई बॉदियों के अजसाम बदल गये और ख़ादिम ठीक हालत में हो गया ये देख कर थोड़ी गुफ़्तुगू के बाद वो सब इस्लाम में दाख़िल हो गये।

सदा के लिए छुटकारा : हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﵀ ने रहीम पुर का सफ़र किया यहॉ अफ़रियत और शयातीन आबाद थे कुछ इल्मे तस्ख़ीर के माहिर थे जिन्हों ने इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाया और आप पर सहर किया जब कोई असर न हुआ तो तौबा की और इस्लाम में दाख़िल हुए और अर्ज़ किया हमको इबालीस, मुर्दा, कुफ़रा, ताइयत और क़दामीसी के ज़रर से बचा लीजिए आपने दुआ फ़रमाई जिससे सदा के लिए छुटकारा हो गया।

बच्चा ज़िन्दा हो गया : बंगाल, चटागांग, बर्मा, हाईनान, ताईवान, चम्पा, कम्बोडिया, चीन, जापान, रूस, मंगोलिया और फिर रूस,चीन, तिब्बत, नेपाल, आसाम, बर्मा, बंगाल होते हुए हज़रत ज़िनदा शाह मदार ﵀ बिहार पहुँचे रास्ते में सॉप के काटने से एक बच्चा मर गया था जिसकी मॉ बिलख रही थी आपने बच्चे को सामने रखवाकर दुआ की बच्चा जिन्दा हो गया।

बच्चे ने ऑखें खोल दी : फिर एक जोड़ा अपने मरे बेटे को उठाए बिलख्ता हुआ आया आपने उस लाश को सामने रखा और दुआ की बच्चे ने ऑखें खोली और अर्ज़ किया या सय्यदी दुनिया की ज़िन्दगी में कुछ भलाई नहीं आपने फ़रमाया ऐशे दुनिया नेकी और परहेज़गारी के साथ बेहतर है उस मौत से जो बिला अमल हो आख़िर तुझे लौटना है अपने परवरदिगार की तरफ़।

ख़ानदान वालों से मुलाक़ात : एक मुद्दत तक तबलीग़ो इशाअत फ़रमाते हुए और हिन्दुस्तान के बे शुमार शहरों का दौरा फ़रमाते हुए आप अरब रवाना हो गये हज्जो ज़्यारते हरमैन के बाद आप अपने वतन हलब तशरीफ़ ले गये यहॉ अपने हक़ीक़ी भाई हज़रत मतलूब उद्दीन उर्फ़ महमूद के पिसर ज़ादे हज़रत अबू सईद के आख़िरी अय्याम में मुलाक़ात की और उनके

परपोते मुहम्मद इस्माईल को गोद में लेकर दुआयें दीं । फिर आप यहाँ से करबला और काज़मैन होते हुए बग़दाद में जलवा अफ़रोज़ हुए ।

बीबी नसीबा की दरख़्वास्त : हज़रत बीबी नसीबा हमशीरह महबूबे सुब्हानी ग़ौसे समदानी अब्दुल क़ादिर जीलानी बिन्ते हज़रत अबू स्वालेह ज़ौजेह सैयद महमूद औलाद से महरूम थीं साहबे मिर्रतुन्निसाब लिखते हैं कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ जब बग़दाद पहुँचे तो बीबी नसीबा ने आपसे औलाद के लिए दुआ की दरख़्वास्त की आपने उन्हें दो बच्चों की बशारत दी ।

पत्थर वापस लौट गये :ख़ुरासान में तबलीग़ के दौरान अफ़ग़ानिस्तान के सरहदी इलाक़े में जब आप दाख़िल हुए तो आपका क़ाफ़िला चन्द अफ़्राद पर मुश्तमिल था आपने देखा कुछ लोग शोर मचाते हुए हाथों में पत्थर और तलवारें लिए हुए आपकी तरफ़ आ रहे हैं क़रीब आते ही उन्हों ने पत्थर फेंकना शुरू कर दिया आपका असा हवा में लहराते ही पत्थर वापस लौट कर उन्हीं को जा लगे । ये देख कर वो अपने सरदार को बुला लाए माफ़ी माँगते हुए सरदार ने कहा आपने ये कमाल कहाँ से हासिल किया और मुझे कैसे हासिल होगा ? आपने इस्लाम में दाख़िल होने की दावत दी उसने अपने साथियों के साथ इस्लाम क़ुबूल किया आपने इसका नाम अब्दुल लतीफ़ रखा जो बाद में शेख़ ज़ाहिद के नाम से मशहूर हुए।कुतबुल मदार ﷺ ने क़ादसिया ईरान का सफ़र किया काबुल वग़ैरह का दौरा फ़रमाते हुए दर्रे ख़ैबर के रास्ते से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए ।

कुए से पानी उबला :जब आप काबुल से गुज़र रहे थे कि आपका एक ख़ादिम कुए से पानी भरने गया उस से किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो गया लोगों ने पानी भरने से मना कर दिया जब ये बात आप को मालूम हुयी तो आपने कहा कुए से कहना नबीरए साक़िये कौसर ने पानी तलब किया है कहना था कि पानी उबलने लगा और गाँव में फेलने लगा लोग आपके पास आकर माफ़ी के ख़्वास्तगार हुए फिर आपने यहाँ क़याम किया एक मस्जिद और कुए की तामीर करायी ।

हिन्दुस्तान का चौथा सफ़र

शाह वाला,फ़क़ीर का पेड़,मंगूपीर :हज़रत ज़िनदा शाह मदार रज़ि० मौजूदा लाहौर में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए बहुत से लोग हल्क़ा बगोश हुए यहाँ से आपने साहीवाल के लिए कूच फ़रमाया जिस जगह क़याम किया उसका नाम शाह वाला पड़ा जो कसरते इस्तेमाल से साहिवाल रह गया ये चक नं० 90 दरबारे शाह मदार के नाम से मर्जय ख़ासो आम है। यहाँ से बहावल पुर और फिर मौजूदा हैदराबाद तशरीफ़ लाए और जिस जगह क़याम फ़रमाया वो फ़क़ीर के पेड़ के नाम से जाना जाता है । इसके बाद आपने कराची में क़याम किया यह मुक़ाम सिलसिलए मदारिया के अज़ीम बुज़ुर्ग शेख़ अबुल हसनात ज़िन्दानी शाह मलंग उर्फ़ मंगूपीर के नाम से मशहूर है ।

सातवाँ बादशाह :आप शर्फ़ नगर पहुँचे कुछ रोज़ क़याम के बाद दिल्ली के रास्ते बग़ैर दिल्ली में बिना ठहरे भरत पुर के लिए रवाना हुए इस वक़्त हिन्दुस्तान पर ग़ज़नवी हुकूमत का सातवाँ बादशाह सुल्तान इब्राहीम हुकमराँ था

बालापीर :आप रुश्दो हिदायत फ़रमाते हुए डेग में क़याम पिज़ीर हुए यहाँ आज भी मदार की छड़ियों का मेला होता है ।यहाँ से आप ग्वालियार तशरीफ़ ले गये जिस जगह आपने क़याम किया वो मदार का चिल्ला कहलाता है यहाँ से कोई बीस फ़र्लांग पर मदार टीकरी है इस मुक़ाम को बालापीर कहते हैं । यहाँ से आप झाँसी तशरीफ़ ले गये यहाँ बाद में मदार गेट की तामीर हुयी ।

मदारस बनाम मद्रास :झाँसी, ललितपुर, मौदहा, जबलपुर होते हुए होशंगाबाद पहुँचे और भण्डारा में जम कर रुश्दो हिदायत की मदार का भण्डारा की निस्बत से यह जगह भण्डारा हो गयी। हैदराबाद(ए०पी०)में आपने जिस जगह मोतकिफ़ हुए वो दरगाह मदार शाह के नाम से मशहूर है यहाँ से आप चेन्नई जलवा अफ़रोज़ हुए आपके साथी कसरत से यहाँ बस गये और इस जगह का नाम मदारस हो गया (जो अंग्रेज़ों के दौर में मद्रास हो गया) तमाम मुद्दत के बाद आप पाण्डीचरी तशरीफ़ ले गये और मख़्लूक़ की हिदायत के लिये एक अर्से तक कोशाँ रहे । फिर आप लंका चले गये ।

बड़ी ज़्यारत गाह :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने जाफ़ना, ट्रंकोमिली, अनुरोधपुरा और कोलंबो में क़याम फ़रमाया आज भी आपकी चिल्लाह गाहें मर्जय ख़ासो आम हैं चिल्लाह मदार शाह कोलंबो में एक बड़ी ज़्यारत गाह है आप लंका से रुश्दो हिदायत फ़रमाते हुए लाल सागर के रास्ते जद्दा पहुँचे ।

ऐसे ज़िन्दा हुए जानेमन जन्नती :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ का सिर्फ़ हिन्दुस्तान से ही यह पाँचवाँ हज था हज्जो ज़्यारते हरमैन से फ़ारिग़ होकर नजफ़ अशरफ़ होते हुए आप एक बार फिर बग़दाद में रौनक़ अफ़्रोज हुए। मिर्रतुन्निसाब वग़ैरह में है कि बीबी नसीबा हमशीरा ग़ौसे पाक अपने फ़रज़न्द सैयद अहम जो आप ही की दुआ से पैदा हुए थे की लाश उठाये ख़िदमत में हाज़िर हुयीं आपने लाश को सामने रखा और कहा उठो जानेमन कहना था कि लाश में रूह दौड़ गयी फिर आपने फ़रमाया जानेमन जन्नती अस्त। आपने इनको जमाल उद्दीन का ख़िताब इनाएत फ़रमाया ।

ग़ौसे पाक के जलाल को जमाल में बदलना :साहबे सम्रातुल कुद्स फ़रमाते हैं कि यही वक़्त था कि ग़ौसुस्सक़लैन अबू मुहम्मद मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी हज़रत मदारुल आलमीन सैयद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार ﷺ से मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ लाये इस वक़्त अब्दुल क़ादिर जीलानी पर कैफ़ियते जलाली का ज़हूर था आपने कमाले रहमत से इनकी इस कैफ़ियत को जमाल में बदल दिया । हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ जमाल उद्दीन सैयद अहम और सैयद अहमद बायापा फ़रज़न्दान बीबी नसीबा को हमराह लेकर इस्तम्बोल की जानिब निकल गये ।इस्तम्बोल के लिये ये आपका दूसरा सफ़र था आपने शेख़ अता की क़ायम कर्दा ख़ानक़ाह में क़याम फ़रमाया

घमण्ड चूर हो गया :ख़ुरासान के दौरान जानेमन जन्नती की मुलाक़ात नसीरुद्दीन शाह से हुयी जो मर्तबय क़ुतुब पर फ़ायज़ थे उन्हों ने क़ुतबुल मदार ﷺ से मिलने में घमण्ड दिखाया । जानेमन जन्नती की शिकायत पर आपने नसीहतन उन्हें क़ुतबियत से माज़ूल कर दिया और मिन्नत करने पर माफ़ नहीं किया बल्कि ख़िलाफ़त भी अता फ़रमाई ।ख़ुरासान से चलकर आप अस्फ़हान में क़याम पिज़ीर हुए ।यहाँ मुकर्रम मक्की ग़ाज़ी ने फ़रज़द होने की

ख़ुशख़बरी दी कि आपकी दुआ से मुझे अल्लाह ने बेटा इनएत फ़रमाया जो इस वक़्त शबाब पर है आप ने कहा कहाँ है मेरा बेटा? हज़रत असलम गाज़ी हाज़िर हुए सरकार ने शफ़क़त फ़रमाई और बैयतो ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

क़हक़हा मार कर हँसने का इबरतनाक वाक़्या :अस्फ़हान और दीगर मुक़ामात को रौनक़ बख़्शते हुए आप करमान में रौनक़ अफ़रोज़ हुए । आप यहाँ मख़्लूक़ की हिदायत में मसरूफ़ थे कि हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती भी करमान पहुँचे मुलाक़ात की और अर्ज़ किया मुझे कुछ नसीहत फ़रमा दीजिए कुतबुल मदार ﵁ ने इनको दुनिया में क़हक़हा मार कर हँसने का इबरतनाक वाक़्या सुनाया और फ़रमाया दुनिया हँसने की जगह नहीं है फिर हिन्दुस्तानी माहौल से रूशिनास कराया ।

तुनतुन मदार :एक हुजूम के साथ आप दमिश्क़ पहुँचे दमिश्क़ से तुर्की और फिर काला सागर का सफ़र तय करते हुए कुसतुनतुनियाँ में जलवा अफ़्रोज़ हुए आपकी क़यामगाह को तुनतुन मदार के नाम से याद किया जाता है । यहाँ से बुख़ारिस्ट, रूमानिया होते हुए पेरिस की जानिब निकल गये और स्पेन जा पहुँचे स्पेन में इस वक़्त मोहिदीन ख़ानदान की हुकूमत थी आपका बड़ी गर्म जोशी से इस्तेक़बाल किया गया यहाँ से आप इटली, रूम, मोरक्को, लीबिया होते हुए क़ाहिरा में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए ।

यतीमों का माल :क़ाहिरा में हकीम अहमद मिस्री जो वहाँ फैली वबा का इलाज कर रहे थे और नाकाम थे हज़रत जिन्दा शाह मदार ﵁ से मिलने को आये आपने फ़रमाया ये अज़ाबे इलाही है जब तक अहले शहर यतीमों का माल वापस नहीं करें गे वबा दूर न होगी। हकीम साहब के मशवरे पर अहले शहर ने ऐसा ही किया और वबा से निजात पायी । हकीम साहब बैयतो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए। यहाँ से आप सूडान तशरीफ़ ले गये यहाँ आपको चार सौ मुक़ामात पर बयक वक़्त तबलीग़ करते देखा गया।सूडान से ईथोपिया पहुँच कर हमराहियों को हिन्दुस्तान जाने का हुक्म दिया और आप माल द्वीप के लिये रवाना हो गये।

हिन्दुस्तान का पाँचवाँ सफ़र

समन्दरी अजाएबात :माल द्वीप में आपने सिर्फ़ 40 रोज़ क़याम किया तमाम अफ़्राद के अलावा शेख़ अबू तुराब को बैयतो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया फिर आज़िमे हिन्द हुए। समन्दरी अजाएबात ब गुराएबात का मुआइना व मुशाहिदा और तहक़ीक़ फ़रमाते हुए कोकिन (मुम्बई) में जलवा अफ़्रोज़ हुए एक दिन एक सालिम लाश का समन्दर के किनारे तैरते हुए आने का चर्चा सुना आप लाश के क़रीब गये और हाथ लगाया लाश से आवाज़ आई ऐ इब्ने अली आपने मुझे छूकर साहिबे करामत कर दिया ।यहाँ से आप सूरत तशरीफ़ ले गये (बम्बई में छेः मुक़ामात पर आपके चिल्ले हैं)सूरत में ये आपका दूसरा सफ़र था आपने तक़रीबन 55 मुक़ामात पर क़दम रंजा फ़रमाया 30 मुक़ामात पर चिल्ला गाहें बतौर निशानी आज भी मौजूद हैं ।

वो इल्म जो कभी सुना न हो :हज़रते ख़िज़्र عليه السلام के इशारे पर शेख़ इलियास गुजराती जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه गुजरात पहुँचे तो ख़िदमत में हाज़िर हुए एक दिन आपने फ़रमाया ये दुनिया गुज़श्तनी व गुज़ाश्तनी है शेख ने कहा भला मैं फ़क़ीर नहीं हो सकता और मिलना तर्क कर दिया कुछ दिन गुज़रे कि बर्स के मर्ज़ में मुबतिला हो गये फ़ौरन ख़िदमत में हाज़िर होकर तौबा की और तमाम उम्र ख़िदमते मदार में गुज़ार दी।

तवाफ़े मदारुल आलमीन :शेख़ मुहम्मद लाहौरी हज के लिए जा रहे थे गुजरात में क़याम हुआ ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه का चर्चा सुना सूरत पहुँच कर ख़िदमत में हाज़िर हुए इत्तेफ़ाक़न चेहरे अनवर पर नज़र पड़ गयी बेहोश हो गये और यहीं के होकर रह गये मुरीद हुए और ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए मालो असबाब गुरबा व मसाकीन में तक़सीम कर दिया जब इनको हज न करने का मलाल दिल में आया तो हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه ने कहा कि मेरा तवाफ़ करलो हज हो जाएगा शेख़ ने तवाफ़ शुरू किया अपने को हुज्जाज़ में पाया और बहुत सी मख़लूक़ के साथ हज के फ़रायज़ अंजाम दिये ।बादाह अपने को क़ुतबुल मदार की ख़िदमत में पाया ।

आप सूरत से खम्बात की जानिब तशरीफ़ ले गये और भरोच होते हुए अजमेर निकल गये ।

ख़्वाजा मुईन उद्दीन चिश्ती फिर बारगाहे मदार में : शहन्शाहेऔलियाए किबार हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार ﷺ एक मर्तबा फिर वारिदे अजमेर हुए ये शहर पृथ्वी राज की राजधानी थी इसको पिथौरा भी कहते थे आप कोकला पहाड़ी पर जलवा अफ़्रोज़ हुए आप की तशरीफ़ आवरी के कुछ ही अर्से के बाद हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती संजरी رحمة الله تعالى عليه पंजाब और दिल्ली वग़ैरह का दौरा करते हुए आपकी आमद की ख़बर पाकर मख़सूस हज़रात को साथ लेकर अजमेर पहुँचे साथियों को पहाड़ के नीचे ठहराकर तन्हा तशरीफ़ ले गये और तीन शबाना रोज़ अपने मदारिज को मुन्दरिजये मदारियत फ़रमाकर नीचे उतरे और अना सागर की जानिब निकल गये ।

उधर हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ भी मालवा चले गये । मालवा (उज्जैन व रतलाम वग़ैरह) पंच महल (गोधरा वग़ैरह) खेड़ा (साबर मती व वरंगम वग़ैरह) सुरेन्द्र नगर राजकोट (वीरपुर वग़ैरह) जूनागढ़ (शाहपुर व पोरबन्दर वग़ैरह) में तबलीग़े इस्लाम फ़रमाते हुए हज के लिए आज़िमे सफ़र हुए।

आग से कपड़े साफ़ करना : पोरबन्दर से फ़ारस की खाड़ी होते हुए आप नीमरोज़ में जलवा अफ़रोज़ हुए हज़रत लुत्फ़ उल्लाह को हुज़ूर ﷺ ने आलमे रोया में हुक्म दिया कि कुतबुल मदार की ख़िदमत में जाकर सआदत दारैन हासिल करो । लिहाज़ा आप एक ताजिर के साथ नीमरोज़ पहुँच कर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए एक दिन मदारे पाक की निगाहे करम ने इनको माला माल कर दिया। ये आपके साथ नजफ़ अशरफ़ तशरीफ़ ले गये इनका ये हाल था कि कपड़ों को आग में डाल कर धो लिया करते थे । आप इनको लुत्फ़े मदार के नाम से पुकारते थे ।

एक दिल चस्प तक़रीर :मौलाना याहया जो हज़रत जिन्दा शाह मदार ﷺ के मशहूर ख़लीफ़ा हैं हज़रत क़ाज़ी मसूद की दस्तार बन्दी करने के बाद कुतबुल मदार की ख़िदमत में लेकर नजफ़ अशरफ़ हाज़िर हुए आपके दस्ते

मुबारक में एक सेब था जो आपने क़ाज़ी मसूद को देते हुए फ़रमाया,“ ऐ अज़ीज़ इन्सान के वुजूद में भी ख़ुशबू है अगर वह ज़ाहिर न हो तो कुछ भी नहीं हसीन सूरत और इबाक़ियात से कुछ फ़ायदा नहीं। क़ाज़ी साहब ने पूछा,“ मार्फ़ते ख़ुदा वन्दी किस तरह हासिल होती है ? आपने फ़रमाया,“ऐ मसूद अव्वल अपने आपको पहचानों ख़ुदा को पहचान लोगे आपको ये ख़्याल करना चाहिए कि आप कौन हैं यहाँ किस लिए आये हैं और आपको कहाँ जाना है । नेक बख़्ती और बद बख़्ती क्या है, आपकी बाज़ सिफ़ात हैवानी, बाज़ शैतानी, बाज़ मलकी । आपको ये मालूम होना चाहिए कि आपकी असली सिफ़त कौन सी है, याद रखिये खाना पीना सोना फ़र्बा होना गुस्सा करना हैवानी सिफ़ात हैं मकरो फ़रेब करना फ़ितना बरपा करना शैतानी सिफ़ात हैं अगर इन सिफ़ात के ताबे हो तो अल्लाह तआला की मार्फ़त कभी हासिल नहीं हो सकती हाँ अगर सिफ़ाते मलकूती हासिल करलो गे तो क्या अजब है कि मुआर्फ़ते ख़ुदा वन्दी से क़ल्ब रौशन हो जाए, देखिए अल्लाह तआला ने आपको दो चीज़ों से बनाया है एक बदन दुसरी रूह, रूह की दो क़िस्में हैं हैवानी और इंसानी, रूहे हैवानी तमाम जानवरों को इनायत की गयी और रूहे इंसानी इंसान के लिए मख़सूस है जब तक रूहे इंसानी से काम न लिया मुआर्फ़ते ख़ुदा वन्दी हासिल नहीं हो सकती। 42 बरस तक क़ाज़ी मसूद ख़िदमत में रहे और ख़लीफ़ा हुए।

बशारत : हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ नजफ़ अशरफ़ से करबला और दमिश्क़ में क़याम पिज़ीर रहे साहिबे मुनतख़बल अजाएब फ़रमाते हैं कि दमिश्क़ में आपसे बहुत सी करामात ज़हूर पिज़ीर हुयीं यहाँ से आप अपने वतने पहुँचे तो आपकी मुलाक़ात हज़रत दाऊद से हुयी जो 80 बीघा ज़मीन के मालिक थे ख़ानदान के दूसरे अफ़्राद भी जमा हो गये और शर्फ़े बैयत हासिल की हज़रत दाऊद के परपोते अब्दुल्लाह को आपने गोद में लेकर दुआयें दीं और बशारत दी कि इस बच्चे को मेरे वालिद जैसी कुरबानी पेश आये गी । शेख़ मुहम्मद फ़रीद जैसे बाकमाल बुज़ुर्ग भी इस मौक़े पर बैयतो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए

ख़िरक़ए मुहब्बत : इसी सफ़र में मख़दूमे पाक मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी किछोछवी ﷺ भी शरीके सफ़र रहे जज़ाएरे फ़िलिस्तीन, क़ुस्तुनतुनिया और रूम का सफ़र भी तय फ़रमाया अर्से 12 बरस के बाद जब जुदा हुए तो

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने मख़दूमें पाक को ख़िरक़ये मुहब्बत (ख़िलाफ़त) अता फ़रमाकर आपका क़ाफ़िला रूम से पूरब की जानिब कूच कर गया और मख़दूमे पाक रूम से अरब बग़दाद काशान होते हुए समनान पहुँच(लतायेफ़े अशरफ़ी)

न फ़रामोश कर्दा निशानी :यूरोप के शहर वारसा,मस्क, और लंकाड में आपने क़याम फ़रमाया क़दीम कुतुब मदारिया के ऐतबार से कसीर तादाद में लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए फ़िन लैण्ड के लोगों की ज़बान से आपके साथी कुछ ज़्यादा परीशान होते थे और आप जब उन्हीं की ज़बान में गुफ़्तुगू करते तो वो अपना रहबर मान कर इस्लाम में दाख़िल होजाते। स्वेडन में कुछ दिन क़याम के बाद आपने आइस लैण्ड के लिए बहरी सफ़र इख़्तियार किया यहाँ हवा ने आपके चेहरे से नक़ाब उलट दिये लोग ताब न ला सके और बेहोश हो गये । हो आया तो कहा बेशक आप अल्लाह की न फ़रामोश कर्दा निशानी हैं। तारीख़े बदी में है कि आप डेनमार्क तशरीफ़ ले गये और गोडथाब में क़याम फ़रमाया यहाँ लोग ख़ामोशी से इस्लाम में दाख़िल होते और चले जाते जब आप ने तब्लीग़ को आम किया तो मुबाहिसा हुआ और वो लोग नादिम हुए कहते हैं कि दुआए बश्मुख़ के विर्द से आपने तक़्ते हवाई पर सवार होकर चाँद का सफ़र यहीं से किया।लोमास में आपने काफ़ी वक़्त गुज़ारा यहाँ आपके नाम से मदार गेट है जार्ज शिकागो वाशिंगटन और न्यूयार्क क्यूबा और हबश के जंगलों में आपके चिल्ले बतौर निशानी आज भी मौजूद हैं ।

आदम का पुल :नामीबिया, मोज़म्बिक,मारिशस ठहरते हुए हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुए और लंका पहुँच कर तामरापारड़ी में क़याम फ़रमाया फिर आदम का पुल होते हुए हिन्दुस्तान में दाख़िल हुए इस वक़्त हिन्दुस्तान में मुहम्मद तुग़लक़ की दौरे हुकूमत का आग़ाज़ था ।

हिन्दुस्तान का छटा सफ़र

हल्लल मुश्किलात :कावेरी नदी के किनारे आपका क़ाफ़िला फ़रोकश हुआ आपकी आमद की ख़बर हर तरफ़ फैल गयी हर वक़्त आपके हमराह एक हुजूम रहता आप यहाँ से हल्लल मुश्किलात फ़रमाते हुए बंगलौर के लिए रवाना हो गये और कोलार में ख़ेमाज़न हुए यहाँ से फैज़ान की बारिश फरमाते

हुए हैदराबाद, गोलकुण्डा, विजएबाड़ा, आलमपुर, वरंगल और गुल बर्गा में इरफ़ान की दौलत ख़ूब लुटाई। बेशुमार मख़लूक़ सिलसिलए इरादत में दाख़िल हुई । गुलबर्गा इस वक़्त बहमनी सल्तनत का पाये तख़्त था और अलाउद्दीन बहमन शाह हसन नया नया बादशाह बना था उसने आपकी ख़िदमत में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया और फ़ैज़याब हुआ।आपने यहाँ से राएपुर भिलाई का सफ़र किया और अपने ख़ुलफ़ा व मुरीदीन को चहार जानिब घूम घूम कर तबलीग़ करने का हुक्म दिया ये लोग चारो तरफ़ फेल गये और तबलीग़ में चार चाँद लग गये । आप चन्द हज़रात को साथ लेते और बक़िया को फेल जाने का हुक्म देकर एक जगह से दूसरी जगह जलवा अफ़्रोज़ होते । इस्लाम निहायत सरहत के साथ फेलने लगा। इस्लाम की लासानी तालीमात को आम करते हुए ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने राँची की तरफ़ कूच किया ।

बदरीनाथ का क़ुबूले इस्लाम :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ अक्सर बस्तियों के बाहर क़याम फ़रमाते आपके ख़ुल्फ़ा व मुरीदीन पत्थरों और ढेलों को चुन कर हुजरा और मस्जिद तामीर कर दिया करते और जहाँ ज़्यादा अर्सा क़याम होता वहाँ बा क़ायदा तामीर का काम होता जिसमें बादशाह, राजा नव्वाबीन वग़ैरह बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते । जब कोई ख़ुतबा इरशाद फ़रमाते तो लाखों की तादाद के मजमें में हर शख़्स यक्साँ सुनता और आप अक्सर बयक जुमला बयक इशारा मुख़ातिब होकर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाते और सालिक ख़्वाह किसी मंज़िल पर हो मंज़िले कमाल पर पहुँचा देते थे। पाटलीपुत्र(पटना) में आप उस मुक़ाम पर ठहरे जिस जगह जत्तीनगर बसा हुआ है। बदरीनाथ जो इस्तेदराज का मालिक था अपने शागिरदों के साथ आपकी ख़िदमत में कमाल दिखाता हुआ हाजिर हुआ उसने दो तश्त पानी से भरे लिए एक में अपने चेले को खड़ा किया मंत्र पढ़ना शुरू किया जैसे जैसे पढ़ता चेला पानी में घुलता जाता उसने मदारे पाक से कहा क्या आप ऐसा कर सकते हैं ?आप ने जानेमन जन्नती को इशारा किया वह तश्त में खड़े होते ही घुल गये फिर मदारे पाक ने रुई तलब की उसको दो हिस्सों में तक़सीम करके दोनो तश्तों में डाल कर बद्रीनाथ से सूँघने को कहा बद्रीनाथ ने अपने चेले की रुई सूघी तो दिमाग़ परागन्दा हो गया फिर जानेमन की रुई सुँघी तो दिमाग़ मोअत्तर होगया

मदारे पाक ने फ़रमाया,"बद्रीनथ! आपने अपने कमाल को कमाल पर तो ज़रूर पहुँचा दिया मगर निजासत इसमें बाक़ी है और मेरे जमाल उद्दीन में ईमान की ख़ुश्बू है ये सुनते ही बद्रीनाथ ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया आपने इनका नाम बद्रउद्दीन रखा इनके सिलसिले के मुसल्मान जोगी आज भी मौजूद हैं। तारीख़े मदार की कुतुब क़दीम में लिखा है कि हज़रत कुतबुल मदार इस्लाम की क़न्दीलें रौशन करते हुए छपरा, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती और फ़ैज़ाबाद में क़दम रंजा फ़रमाया मुहम्मद साबिर मुल्तानी को ख़िलाफ़त देकर गोरखपुर और असीर कबीर को कुण्डा के लिए रवाना किया। .

मुजाहिदे आज़म का ख़िताब :तवारीख़े महमूदी व करामाते मसूदिया में है कि हज़रत असलम ग़ाज़ी को ख़्वाजा मुईन उद्दीन हसन चिश्ती ने एक हफ़्ता महमान रखने के बाद हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी की रहनुमाई में बहराईच के लिए रवाना किया चन्द रोज़ क़याम के बाद वतन वापसी का इरादा किया ही था कि सैयद सालार मसूद ग़ाज़ी की मज़ारे मुकद्दस से आवाज़ आयी,"सरवरपुर मुहाल के क़रीब नहवी अलीपुर (जलालपुर) में तुम्हारे पीरो मुर्शिद हज़रते कुतबुल मदार तुम्हारे मुन्तज़िर हैं।आप फ़ौरन ख़िदमत में हाज़िर हुए और तालिबे दुआ हुए हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने दुआ फ़रमाई और मुजाहिदे आज़म का ख़िताब इनायत फ़रमाया अपने चिल्ले शरीफ़ पर मोतकिफ़ फ़रमाकर आप फ़ैज़ाबाद होते हुए लखनऊ की जानिब निकल गये। .

आख़री सफ़रे हज :आपने लखनऊ में बस्ती के बाहर क़याम फ़रमाया रमज़ान का चॉंद अब्र की वजह से नज़र नहीं आया लोगों के पूछने पर आप ने फ़रमाया मालूम कीजिए शेख़ कुतबुद्दीन के नौमौलूद बच्चे ने अगर मॉं का दूध नहीं पिया है तो चॉंद होने में कोई शुब्ह नहीं मालूम हुआ कि बच्चे ने दूध नहीं पिया । रमज़ान के आख़िरी महीने में मौलाना शहाब उद्दीन परकाला आतिश और उनकी हमशीरा बीबी फ़ैज़न क़िदवाई बड़े गॉंव से लखनऊ पैदल सफ़र करके हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की ख़िदमत में हाज़िर हुए गुफ़्तुगू में हिस्सा लिया कुतबुल मदार का हर जुमला हर्फ़े आख़िर का हुक्म रखता था । बैयत हुए और आगे चलकर ख़िलाफ़त से नवाज़े गये । लखनऊ से चलकर सण्डीला, हरदोई और फ़र्रुख़ाबाद में जिस जगह मदारबाड़ी है क़याम फ़रमाया

यहाँ से शम्साबाद और क़ायम गंज को रौनक़ बख़्शी यहाँ मेहदियों के मेले होते हैं यहाँ चिल्ले थे जो इन्क़िलाबे ज़माना की नज़्र हो गये। यहाँ से शाहाबाद जो आपके क़दमों की बरकत से आबाद हुआ और फ़िर बरेली तशरीफ़ ले गये यहाँ सात मुक़ामात पर आपकी मजालिस मुनअक़िद हुयीं क़िला, बाँस मण्डी, शहामत गंज, नरयावल, फ़रीदपुर और पीर बहोड़ा रुक्न तालाब व मदारी गेट हैं आज भी इन मुक़ामात पर मदार के मेले बड़ी धूम से मनाये जाते हैं। यहाँ से आप काठगोदाम, नैनी ताल, राम नगर उस जगह जिसे आज पीरू मदारा कहते हैं क़याम फ़रमाया यहाँ दफ़्ली शाह को मुक़र्र किया गया फिर मख़सूस हज़रात को लेकर कैलासपर्वत पर जलवा अफ़्रोज़ हुए फिर आपने यहाँ से शिमला, मनाली, जम्मू में क़याम फ़रमाया शाह विलायत को ख़िलाफ़त देकर एक चुनार के बाग़ और एक मस्जिद की बुनियाद रखने के बाद उत्तरी कश्मीर में क़याम का हुक्म दिया और आप श्री नगर, रावल पिण्डी और पेशावर को रौनक़ बख़्शते हुए दर्रे ख़ैबर की जानिब निकल गये चन्द हज़रात को साथ लिया और बक़िया को हिन्दुस्तान के चप्पे चप्पे में इस्लाम की इशाअत का हुक्म फ़रमा कर अरब के लिए रुख़्सत हुए। दौराने सफ़र अफ़्ग़ानिस्तान शेख़ फ़रीद उद्दीन शाह और फ़रीद उद्दीन सूफ़ी को ख़िलाफ़त देकर क़याम का हुक्म दिया और आप बड़ा मैदान ईरान में क़याम पिज़ीर हुए यहाँ शेख़ अब्दुल क़ादिर ईरानी और शेख अबू नस्र मक्की को ख़िलाफ़ते सिलसिला देकर क़याम का हुक्म दिया। सीस्तान में आपका क़याम हुआ इस वक़्त मख़दूम जहाँनियाँ जहाँ गश्त सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी सीस्तान के मज़ाफ़ात में क़याम फ़रमा रहे थे और शेख़ुल इस्लाम के मंसब पर फ़ायज़ थे सरकार मदार ﷽ की आमद की ख़बर पाकर आये और नेमते सिलसिला से माला माल हुए। तारीख़ी ऐतबार से यूँ तो हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷽ ने एक सौ बहत्तर ज़ाहिरी हज फ़रमाये लेकिन हिन्दुस्तान से वक़्तन फ़ वक़्तन सात मर्तबा हज का फ़रीज़ा अंजाम दिया हिन्द में आप ﷽ मुख़्तलिफ़ रास्तों से तशरीफ़ लाये कभी कराची ख़लिज खम्बात कभी भरौच कभी सूरत कभी मालाबार कभी कोलम्बो कभी मद्रास बम्बई अलग़रज़ हिन्दुस्तान से ये आपका सातवाँ और आख़िरी हज था आपने ख़ुलूसे दिल से हज का फ़रीज़ा अंजाम दिया और मदीनतुर्रसूल ﷺ में हाज़िर हुए ।

आख़री आराम गाह की निशान देही :आलमे बे ख़ुदी में बैठे थे कि हुज़ूरी की दौलत नसीब हुयी सरवरे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ,''हिन्दुस्तान में आपको मुस्तक़िल क़याम करना है सर ज़मीने हिन्द में क़न्नौज के जुनूब में एक जंगल है जिसमें तालाब है तालाब से या अज़ीज़ की आवाज़ आती है वही आप की आख़री आराम गाह है आप के पहुँचने पर ये आवाज़ बन्द हो जायेगी। .

हलब की आख़री ज़्यारत : हिन्दुस्तान में मुस्तक़िल क़याम का हुक्म पाते ही क़ुतबुल मदार अपने वतन हलब की आख़री ज़्यारत के लिए तशरीफ़ लेगये इस वक़्त ख़्वाजा मुहम्मद अरग़ून बैरूत के मदरसे इब्राहीमिया ख़ानक़ाहे बदिया मदारिया में तालीम हासिल कर रहे थे ख़बर मिलते ही घर तशरीफ़ ले आये हज़रत सैयद अब्दुल्लाह رحمة الله تعالى عليه अपने तीनो फ़रज़न्दान सैयद मुहम्मद अरगून अबुल हसन तैफ़ूर और अबू तुराब फ़न्सूर को सरकार मदार के हुज़ूर पेश किया आपने उन्हें अपनी मानवी फ़रज़न्दगी में क़ुबूल फ़रमाया बड़ी नवाज़िशें फ़रमायीं और तक़र्रुबे ख़ास अता फ़रमा कर अपने साथ रखना पसन्द फ़रमाया मक्के में क़साम के दौरान आपने मुहम्मद बासित पारसा और मुहम्मद शाह ज़फ़र को ख़िलाफ़त देकर मक्के में ही क़याम का हुक्म दिया और अब्दुल्लाह को बे बहा नेमात से नवाज़ कर शेख़ मुहम्मद फ़रीद के साथ शाम के लिए रवाना किया और ख़ुद अब्दुल अज़ीज़ मक्की को हमराह लेकर मदीना होते हुए हिन्दुस्तान के लिए आज़िमे सफ़र हुए। .

क़ुतबियत से माज़ूरी :हज़रत ताहिर जो हर वक़्त आपके हमराह रहते थे बुख़ारा में क़याम के दौरान आपने कहा क्यूँ न आपको यहाँ का क़ुतुब बना दिया जाए ताहिर ने कहा इस ग़ुलाम को तमाम आलम की क़ुतबियत मिले और हुज़ूर से मुफ़ारक़त तो ऐसी क़ुतबियत से मैं माज़ूरी चाहता हूँ। एक दिन आपने सैयद ताहिर से कहा आपसे बूए त्वाम कब तक गवारा करें हज़रत ताहिर की ख़ुराक़ एक तिरंज की थी उन्हों ने वो भी तर्क कर दी। बुख़ारा के मश्हूर बुज़ुर्गों में सैयद अब्दुल्लाह बुख़ारी का भी नाम आता है इनके फ़रजन्द दाऊद ने एक बार ख़्वाब में एक नूरानी बुज़ुर्ग को देखा वह जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه के क़ाफ़िले में शामिल हुए तो उन्हें अपना ख़्वाब याद आ गया । मदारे पाक

ने इनके सर पर हाथ रख कर कहा दाऊद मैंने तुम्हें कुबूल किया यहीं आप ने पीर मुहम्मद हनीफ़ और जलाल उद्दीन दाना(शाहदाना)को बैयतो ख़िलाफ़त से नवाज़ा और साथ लेकर हिन्दुस्तान के लिए आज़िमे सफ़र हुए ।

ख़ैबर में क़याम :ईराक़, ईरान, समरकन्द, ताशक़न्द, बीकानूर, काशग़र, बग़दाद, बुकाम, तबरिस्तान, ख़िरक़ान, जरजान, आबेसुकून, उस्तराबाद, ताज़ जिदान, बरतानिया, अस्फ़हान, फ़ारस, हमदान, बुर्जो कर्ज, ख़रबादक़ान, मियॉं जी सुल्तानिया ज़नजान, सुहरवर्द, तबरेज़, बदख़्शान, हरात, फ़राह, क़न्धार, ग़ज़नी वग़ैरह में इरफ़ान की दौलत लुटाते हुए कुतबुल मदार ख़ैबर में क़याम पिज़ीर हुए। चन्द हज़रात को हमराह लिया और बक़िया को वापस लौटने का मशवरा दिया लेकिन लोगों ने ज़िद की और हमराह हो लिये। आपने ख़्वाजा सैयद हुसैन, शेख़ अबू दाऊद सिद्दीक़ी और शेख़ अब्दुल वहीद को बलख, हज़रत ख़्वाजा मारूफ़ और इस्माईल ख़िलजी बिन सैयद दाऊद को सीस्तान, हज़रत अब्दुल लतीफ़ और अब्दुल्लाह वाहिद को नजफ़ अशरफ़, हज़रत शेख़ साहब और शाह नज्म उद्दीन को ताश्क़न्द, हज़रत कमाल उद्दीन को बग़दाद शेख़ नूरुद्दीन शाह को सन्जर, शेख़ मुहम्मद को कोहिस्तान, शेख़ मुहम्मद को ज़िन्दान, क़ाज़ी इनायत उद्दीन और शेख़ ज़ाहिद बिन ख़ालिद को शीराज़,शेख़ सुलेमान यमनी को बग़रजितान और यूसुफ़ औताद को बुख़ारा के लिए ख़िलाफ़ते सिलसिला से सरफ़राज़ फ़रमाकर रवाना किया। इस मर्तबा जब आप बग़दाद से गुज़र रहे थे तो आपने मीर शम्स उद्दीन हसन अरब और मीर रुक्न उद्दीन हसन अरब को जो अब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ تعالی علیہ के हक़ीक़ी भाई हज़रत अब्दुल हय्यी के साहबज़ादों को अपने साथ ले लिया और एक हुजूम के साथ समर क़न्द में पहुँचे तामीरात का काम कई साल तक जारी रहा मगर आप अफ़ग़ानिस्तान के लिए रवाना हो गये।

हिन्दुस्तान का सातवाँ सफ़र

इस मर्तबा जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضی اللہ عنہ ने बहुक्मे रसूल ﷺ हिन्दुस्तान की धर्ती पर क़दम रंजा फ़रमाया तो एक तादाद के मुताबिक़ आपके हमराह तक़रीबन एक लाख का हुजूम था जैसा कि काशिफ़े असरारे हक़ में मरक़ूम है

आप काबुल में रुकते हुए लाहौर में जलवा अफ़्रोज़ हुए यहाँ आपने मजमे को एक तवील ख़िताब किया फ़िर अपने ख़ुलफ़ा व मुरीदीन में से बेशतर को दूर दराज़ मुमालिक में इसलाम की तबलीग़ो इशाअत के लिए हुक्म फ़रमाया। जिस में हज़रत शेख़ शहाब उद्दीन को चीन, शेख़ शम्स उद्दीन को उन्दलस, शेख़ अबुल हसन शम्सी को संग द्वीप, क़ाज़ी फ़ख़्र उद्दीन अली को लाल कोयत, शेख़ सख़ी और अब्दुल फ़ज़ल बुख़ारी को रूस, शे चिरात्री को इण्डो नेशिया, शाह गुला अली को समरक़न्द, महा बली को कम्बोडिया, शेख गुरू गौतम बली को जापान, शेख़ दरबारी शाह को मंगोल, शेख़ कबीर उद्दीन अरबी को उत्तरी रूस, शेख़ मुहम्मद अली दरबन्द को रूम, शाह वली अल्लाह को जज़ाएरे क़ौक़ शेख़ ख़ाकसार ख़ाकमीज़ को नेपाल, शाह अब्दुल करीम को जुनूबी अफ़्रीक़ा के लिए रवाना किया कुछ को हिन्दुस्तान में फैल जाने का हुक्म दिया और कुछ को वतन वापस लौटने का मशवरा और चन्द मख़्सूस हज़रात को साथ लेकर शर्फ़ नगर और भण्डारा में ठहरते हुए पानीपत में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए। .

मसला हल हो गया :हयात पानीपती और उनके ब्रादर अम मुहम्मद असग़र हयात अबदी है और ये नुफ़ूस चन्द रोजा मुस्तआरी हैं पर बहस हो रही थी ग़रज़ कुतबुल मदार ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए आप उनसे बे हिजाब म्लिे और फ़रमाया जब तक हम अपने आप में हैं ख़ुदी में मुबतिला हैं जब अपने आप में नहीं रहें गे बे ख़ुदी ज़ाहिर होगी बल्कि वो ज़ात ही बाक़ी रह जायेगी जो हय्यी है मसला हल हो गया। यहाँ से आप मुज़फ़्फ़र नगर और मेरठ में क़याम फ़रमाते हुए देहली में रौनक़ अफ़्रोज हुए और इरफ़ान की दौलत ख़ूब लुटाई। इस वक़्त फ़ीरोज़ तुग्लक़ हिन्दुस्तान पर हुकमराँ था जिसने आपका ज़बरदस्त ख़ैर मक़दम किया और मोत्तक़िद हुआ बैयत से सरफ़राज़ हुआ फिर क्या था हज़ारों की तादाद में लोग आप से मुन्सलिक ब सिलसिला हुए इनमें इलाह दाद ख़ाँ तो ऐसा शेफ़्ता व फ़रेफ़्ता हुआ कि उसने मंसबे वज़ारत से दस्तबरदारी हासिल की और आपकी गुलामी में रहना पसन्द किया जब आप देहली से चले तो फ़ीरोज़ तुग्लक़ ने बेश क़ीमती तहायफ़ नज़्र किये।

एक अज़ीम लशकर :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ देहली से रवाना हुए तो आपके हमराह हज़ारों अफ़्राद का एक अज़ीम लश्कर था । हाथी थे

जिन पर माही मरातब (वो एज़ाज़ी निशान जो ब मुश्किल सय्यारात बादशाहों की सवारी के आगे हाथियों पर चलते थे) डंका (नक़्क़ारा, एक शख़्स हाथी पर बड़ा सा नक़्क़ारा लिए आपकी सवारी के गुज़रने का एलान करता) निशान (झंडा, अलम, हाथियों पर ही मख़सूस अलम लिए लोग चलते) मौजूद थे। घोड़ थे पैदल थे जिधर निकल जाते या जहाँ ठहर जाते शहर आबाद हो जाता । शिकारपुर में दो रातें गुज़ारीं और चन्दौसी एक हफ़्ता ठहरने के बाद आपने कई वफ़्द क़रीबी गाँव व क़स्बात के लिए रवाना किये और ख़ुद बस्ती होते हुए बदायूँ के क़रीब एक गाँव में और फिर शाहजहाँ पुर एक माह चार रोज़ क़याम के बाद बिलग्राम और सण्डीला ठहरते हुए लखनऊ में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए।

जाएनमाज़ की बरकत :लखनऊ दरियाये गोमती के किनारे आपका एक बुलन्द और वसीअ टीले पर जिसे शाह मुहम्मद पीर का टीला कहते हैं क़याम हुआ। आपके मंज़ूरे नज़र शेख़ शाह मीना मंज़िले सुलूक तय करने में गामज़न थे । यह जानकर आपने मौलाना शहाब उद्दीन परकालए आतश के मार्फ़त अपनी जाएनमाज़ भेजी जिसको सर पर रख कर शाह मीना ने हाज़रीन के लिए दुआ की तारीख़ी ऐतबार से जैसे ही आपने जाएनमाज़ सर पर रखी मर्तबए क़ुतुब पर फ़ायज़ हो गये।

घमण्ड पर नदामत :लखनऊ मुख़्तसर क़याम के बाद आपने काल्पी के लिए इरादा किया और मावर में क़याम हुआ हज़रत क़ाज़ी मुतहर आपके अजीबो ग़रीब हालात सुनकर मुबाहिसे के लिए आये आपने चेहरे से नक़ाब हटा दिये वो और उनके शागिर्द बेहोश हो गये होश आया तो अपने घमण्ड पर नादिम हुए बैयत हासिल की फ़िर ख़लीफ़ा हुए ।

तमाशाइयों का हुजूम :ज़िन्दा शाह मदार﷿ कालपी में जलवा अफ़्रोज़ हुए और जमुना के किनारे क़याम फ़रमाया। क़ाज़ी सैयद सद्र उद्दीन मुहम्मद ने एक नूरानी बुज़ुर्ग को तमाम क़ुतुब को दरहम बरहम करते देखा शेख़ कालू ने बताया कि क़ुतबुल मदार कालपी में तुम्हारे मुन्तज़िर हैं क़ाज़ी साहब ख़िदमत में हाज़िर हुए एक दिन काज़ी साहब को आपने हुजरे में बुलाकर मताये इल्मे बातनी से माला माल कर दिया और इश्क़े इलाही की आग तमाम जिस्म में रौशन कर दी फ़िर क्या था तमाशाइयों का हुजूम इस दीवाने के पीछे पीछे था

मुहब्बत का असर : मौलाना शेख़ फ़ौलाद काल्पवी ख़िदमत में हाज़िर होकर बैयत का शरफ़ हासिल किया कैफ़ियते जज़्ब में कदम शरीअत से बाहर होने लगता एक रोज़ अर्ज़ किया कि बातिन में तो मुहब्बत ने पूरा असर कर लिया मगर ज़ाहिर में सुस्ती आ गयी सरकार ने फ़रमाया आप अपने हाल में रहिये। मोल्वी शेख़ मुहम्मद और हज़रत शेख़ इलियास गुजराती हर वक़्त इश्क़े इलाही में महव रहते थे आपने ख़िलाफ़त देकर मज़ाफ़ात में भेज दिया। .

गुलाब के फूल के मानिन्द :शेख़ सिराज उद्दीन अपने बेश्तर मुरीदीन के साथ ज़िन्दा शाह मदार से मुलाक़ात को आये और प्याला शरबत का आप की ख़िदमत में पेश किया इनका मतलब था कि ये दुनिया औलिया अल्लाह से लबरेज़ है जिनके गुफ़्तारो किरदार ने इस दुनिया को शीरीं बना दिया है।मदारे पाक ने इस शरबत के प्याले में गुलाब का फूल डाल दिया मतलब ये था कि मैं इनमें ऐसा हूँ जैसे ये फूल तैरता है और मैं इस गुलाब की मानिन्द हूँ जिस में ख़ुश्बू भी है और मिठास भी । जब शेख़ सिराज उद्दीन वापस हुए तो तन्हा थे उनके मुरीद तो कुतबुल मदार के होकर रह गये। .

बे अदबी का नतीजा : क़ादिर शाह बिन महमूद शाह फ़र्द औलाद फ़ीरोज़ शाह बादशाह देहली में से था और कालपी में बतौर गवर्नर के मुक़ीम था और हज़रत सिराज उद्दीन का मुरीद था जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के ख़्वारिक़ो आदात और कश्फ़ो करामात का शोहरा और रूहानी अज़्मत के चर्चे हुए तो क़ादिर शाह को भी मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुआ और उसका इज़्हार अपने मुर्शिद से किया चूँ कि वो इसे भी खोना नहीं चाहिते थे इस लिए इजाज़त नहीं दी। आख़िर कार एक दिन मदारे पाक की ख़ानक़ाह पर लाव लश्कर लेकर पहुँचा। जलाल का वक़्त होने की वजह से अन्दर जाने की इजाज़त न मिली क़ादिर शाह ने अपनी तौहीन सम्झी और घोड़े को हुजरे की चहार दीवारी तक पहुँचा दिया। दीवार बुलन्द हो गयी उसने हाथी से देखना चाहा दीवार और बुलन्द हो गयी क़ादिर शाह नाकामी के बाद ख़ुद्दाम से कह कर चला गया कि अपने शेख़ से कह देना कि वो फ़ौरन यहाँ से चला जाए और मेरी सल्तनत के हुदूद में नज़र नहीं आये।(क़याम गाह मदारपुरा के नाम से मौसूम है) हज़रत ज़िन्दा शाह मदार जमुना के दूसरे किनारे (उदयपुर) पर

क़याम पिज़ीर हुए ज्यों ही आपने दरिया उबूर फ़रमाया क़ादिर शाह के जिस्म पर आबले पड़ गये।

क़हरे इलाही का मुक़ाबला : सबा तराक़, सबा सनाबिल, आईनए कालपी वग़ैरह में मरक़ूम है कि अतिब्बा के इलाज से नाकाम क़ादिरशाह मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। अगरचे ये काम मुर्शिद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किया था फिर भी उनको रहम आ गया और उन्हों ने अपना पैराहन पहना दिया। जिसकी बरकत से क़ादिर षाह के जिस्म की सोज़िश तो कम हो गयी मगर जब कुतबुल मदार ﵁ को मालूम हुआ कि सिराज उद्दीन क़हरे इलाही का मुक़ाबला कर रहे हैं तो आपकी ज़बान से निकला, "सिराज उद्दीन क्यों नहीं जला।" ये फ़िक़रा आपकी ज़बाने मुबारक से निकलते ही सिराजुद्दीन का ज़ाहिरो बातिन जलकर ख़ाक हो गया और जब वो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो गये तो उन्होंने अक़ीदतमन्दों और अयादत को आये लोगों के सामने कहा, " मेरे मरने के बाद मुझे ग़ुस्ल मत देना।" बाज़ लोगों ने इस वसीयत को ख़िलाफ़ते शरा मानते हुए उँगली पर पानी डाल कर देखा पानी पड़ते ही उँगली बह गयी और यूँही दफ़्न हुए।

हुकूमत में फ़ुतूर :क़ादिर शाह भी अच्छा न हो सका उसकी हुकूमत में भी फ़ुतूर पड़ गया इब्राहीम शर्क़ी ने जौनपुर से चलकर कालपी पर हमला करने का इरादा किया और दूसरी तरफ़ शाह होशंग ने मालवा से बग़रज़ तसख़ीरे कालपी फ़ौज कशी की क़ादिर शाह मुक़ाबला न कर सका और भाग गया कालपी पर शाह होशंग का कब्ज़ा हो गया। इब्राहीम शर्क़ी रास्ते से ही वापस हो गया। इस के बाद ब इसरारे तमाम ज़िन्दा शाह मदार ﵁ कालपी बुला लिया गया। अभी आप कालपी में ही मुक़ीम थे कि दूर दराज़ इलाक़ों से आपके पास ख़ुतूत आने लगे।

अरीज़ा : मीर सदरे जहाँ के दादा चंगेज़ ख़ानी में तिरमिज़ के बाशिन्दे थे पहले देहली फिर जौनपुर में मुक़ीम हुए। इब्राहीम शर्क़ी की तालीम इन्हीं के मुताल्लिक़ हयी जब इब्राहीम शर्क़ी बरसरे हुकूमत हुए तो मीर साहब को इल्मे मंसबे वुज़ारत पर सरफ़राज़ फ़रमाया। जब मीर सदरे जहाँ को इल्मे बातिन के हुसूल का शौक़ दामनगीर हुआ तो ये मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी किछोछवी

की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बैयत की दरख़्वास्त की हज़रत मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी ने फ़रमाया आपका हिस्सा हमारे यहाँ नहीं है अन क़रीब हज़रत जिन्दा शाह मदार ﷺ हिन्दुस्तान तशरीफ़ लायें गे उनसे बैयत हो जाना अलग़रज़ जब सरकार मदारे पाक कालपी में रौनक़ अफ़्रोज़ हुए और आपकी शोहरत फैली तो मीर सैयद सदरे जहाँ ने एक अरीज़ा आपकी ख़िदमत में ब तमन्नाये हुसूले क़दम बोसी इरसाल फ़रमाया। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने इन्हे हिन्दुस्तान में मुस्तक़िल क़याम, इनका नाम अपनी फ़ेहरिस्त में होना और जौनपुर आने के बारे में बताया तो ख़ुशी का ठिकाना न रहा और एक लाख का सरमाया ख़ैरात कर दिया। थोड़े के बाद ज़िन्दा शाह मदार ﷺ पुखरायाँ और बारा में क़याम करते हुए जौनपुर पहुँचे। .

इस्तिग़ासए क़त्ल :ज़िन्दा शाह मदार जौनपुर पहुँचे शहर के बाहर क़याम फ़रमाया। आपका एक मुरीद अपनी मतलूबा शय ख़रीदने दुकान पर गया वहाँ वज़ीरे सलतनत का मुलाज़िम दुकानदार पर जब्र कर रहा था इनको उसके ज़ालिमाना अन्दाज पर जलाल आ गया जलाल आते ही उसके जिस्म में सोज़िश हुयी और वो हलाक हो गया। इसकी ख़बर वज़ीरे सल्तनत को पहुँची तो उसने लाश, दुकानदार और इन बुज़ुर्ग को गिरिफ़्तार करके इब्राहीम शर्क़ी के दरबार में पेश किया और इस्तिग़ासए क़त्ल दायर कर दिया। सुल्तान ने इन बुज़ुर्ग से दर्याफ़्त किया कि उन्हों ने इसका क़त्ल क्यों किया? उन्हों ने कहा जो मरता है अपनी मौत मरता है मैंने किस कुत्ते को मारा? लाश से कपड़ा हटाया गया तो वाक़ई उसमें कुत्ते की लाश निकली। फिर सुल्तान ने इनका हाल दरयाफ़्त किया उन्हों ने क़ुतबुल मदार से वाबस्तगी और जौनपुर में क़याम का ज़िक्र किया तो मीर सदरे जहाँ, अशरफ़ ख़ाँ ब्रादर इब्राहीम शर्क़ी, सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी ओर दीगर अमायदीन निहायत ख़ुज़ू ओर ख़ुशू के साथ बुला लाए। .

एक लाख का मजमा :एक दिन आपने मीर सदरे जहाँ को हुजरे में तलब फ़रमाया और चेहरे से नक़ाब हटा दिये सदरे जहाँ ग़लबए मुहब्बत में सरशार होकर बेख़ुद हो गये। आपने इनकी पेशानी को बोसा दिया और बाहर जाकर नशिस्त दुरस्त करने को कहा। तक़रीबन एक लाख का मजमा इकट्ठा हो गया था। क़ुतबुल मदार बाहर तशरीफ़ लाये नक़ाब चेहरे से हटा दिये मख़्लूक़

बेताब होकर सजदे में जा पड़ी आपने एक हिकायत ब्यान फ़रमाई जिससे हर शख़्स अपने मतलब का जवाब पा लिया लोग दरियाये करामत से फ़ैज़याब हुए मीर सदरे जहाँ सबसे पहले बैयत हुए और घर पहुँच कर जो कुछ उनके पास था ख़ैरात कर दिया।

तौहीद का समन्दर :जौनपुर में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ की जाय क़याम मर्जए ख़ासो आम हो गई हर वक़्त एक मेला सा लगा रहता इन्हीं अय्याम में मीर हुसैन मग़्ज़ बल्ख़ी बिहार से हाज़िरे ख़िदमत हुए सरकार मदार ने इनको अपने क़रीब बुलाकर नेमात उज़्मा से माला माल कर दिया और कहा अब आप तौहीद का समन्दर हो गये।

मुख़ालफ़त फिर बैयत :मलेकुल उल्मा क़ाज़ी शहाब उद्दीन दौलताबादी फ़ुज़लाए जौनपुर में शुमार किये जाते थे उनका असली वतन ग़ज़नी था।सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी इनका बहुत मोतक़िद था। ग़ुरूरे इल्म कुतबुल मदार में शर्फ़याबी से रोक रहा था और वो ख़वारिक़ो तसर्रुफ़ात और कश्फ़ो करामात को महज़ हवाई क़रार देते थे। जब उन्हें ये ख़दशा हुआ कि कुतबुल मदार से अक़ीदत में कहीं सुल्तान उन्हें छोड़ न दे तो उन्हों ने सुल्तान से कहा,"अपने रुतबे के ख़िलाफ़ नवारिद अशख़ास से इतना इज़हारे अक़ीदत फ़रमायें गे तो अन्देशा है कि सल्तनत के वक़ार को नुक़सान पहुँच जाए। बाद शाह ख़ामोश रहा। उन्होंने दोबारा ऐसा कहने की जसारत तो न की लेकिन बाला बाला कुतबुल मदार ﷺ का इम्तेहान लेने में जुट गये ताकि इनको शहर से निकाला जा सके। अव्वल क़ाज़ी शहाब उद्दीन ने चन्द अफ़्राद पर मुश्तमिल एक वफ़्द हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ की ख़िदमत में चन्द सवालात समझाकर भेजा ये लोग कुतबुल मदार ﷺ से मिलने की जसारत तो न कर सके मगर अपने सवालात हज़रते ताहिर सुना कहा,"आपने निकाह नहीं किया ये तो तर्के सुन्नत है?खाने पीने से परहेज़ करते हैं ये भी तर्के सुन्नत है? लिबास मैला नहीं होता ये भी किसी जादू के सबब हो सकता है जो हराम है? नक़ाब किसी मर्द को ज़ेब नहीं देते? जंगलों और पहाड़ों पर ही क़याम करना रहबानियत मालूम होता है? हज़रते ताहिर ने जवाबन इरशाद फ़रमाया,"मोजिज़े पर दावा करना कुफ़्र को

दावत देना है मेरे अज़ीज़ ये जो कुछ तुम देख रहे हो ये मोजिज़ए रसूलﷺ है जो ज़हूर में आ रहा है हदीस शरीफ़ है، خیرالناس فی خیرالزمان خفیف الحاذ . الذی لا اهل له ولا ولد له سیر واسبق له فردون आख़िर जमाने में सबसे बेहतर है जो ख़फ़ीफ़ुल हाज़ हैं बीवी हैं न बच्चे और ये बीवी बच्चे वालों पर सिबक़त ले गये। दोयम ये कि जिस तरह अस्हाबे कहफ़ को अल्लाह तआला ने 300 बरस तक ग़ार में सुलाए रखा और तमाम ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से बे बहरा रखा और एक रात या उसका कुछ हिस्सा मालूम हुआ। ठीक इसी तरह अल्लाह तआला ने आपको तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बेनियाज़ करके मुक़ामे समदियत पर फ़ायज फ़रमा आपके नज़्दीक दुनिया एक दिन है जिसमें आप रोज़ेदार हैं। अब ख़ाने और शादी का क्या मामला। रोज़ा नफ़्स को मग़लूब करता है और ख़्वाहिशात को नेस्तो नाबूद कर देता है जैसा कि हदीस में है

اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ بِجَمَاعَةٍ مِّنَ الشَّبَانِ وَهُمْ يَرْفَعُوْنَ الْحِجَارَةَ فَقَالَ يَامَعْشَرَ الشَّابِ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَلْيَصُمْ فَاِنَّ الصَّوْمَ لَهُ وِجَاء

रसूल अल्लाह ﷺ नौजवानों की एक जमाअत के पास से गुज़रे वो लोग पत्थर उठा रहे थे हुजूर ने फ़रमाया, ''नौजवानों! तुममें से जो निकाह कर सकता है वो निकाह करे और जो निकाह नहीं कर सकता वो रोज़ा रखे क्यों कि रोज़ा शहवत के लिए वजा का हुक्म रखते हैं।'' फिर कुरआन का हवाला देते हुए फ 'اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ .
बेशक तुम्हारी बीवियाँ और तुमहारी औलाद तुम्हारी दुश्मन हैं पस इनसे बचते रहो। जानना चाहिए कि आप इन्सानों के अलावा दूसरी मख़्लूक ''जिन'' जिन्हें पहाड़ों और जंगलों में खदेड़ दिया गया था के लिये भी हुक्में रसूल ﷺ लाये हैं फिर आपने फ़रमाया اَلْعِبَادَةُ فِى الْغَارِ وَالصَّحْرَاءِ وَفِى الْخَلْوَتِ وَعَلَى . الْجِبَالِ هٰؤُلَاءِ كُلُّهُمْ مِنَ السُّنَنِ الْمَاثُوْرَة गार, जंगल, तन्हाई और पहाडों पर इबादत करना ये सब कुछ सुनन मासूरह से है। जहाँ तक नक़ाब का ताल्लुक़ है तो ये निस्बते मूसवी है जिस तरह तजल्लिये तूर के बाद मूसाعليه السلام नक़ाब डाले रहते थे इसी तरह आलमे मिसाल में हुजूर ﷺ के चेहरे पर हाथ

मस फ़रमाने के बाद कुतबुल मदार को नक़ाब अता किये गये। इसी तजल्ली की बिना पर आदम को मस्जूदे मलायक और कुतबुल मदार मसजूदे ख़लायक़ हैं । जहाँ तक लिबास के न मैला होने का सवाल है और जवान बने रहने की बात है तो ये भी आदम, यूसुफ़ और ख़िज़्र वग़ैरह की निस्बतें अताए रब्बी और एजाज़े रसूल है। वैसे भी परिन्दों के पर अगर सफ़ेद हैंतो उन पर मैल नहीं चढ़ता। फिर ये लोग सरकार मदार की ज़्यारत के लिए गये मगर एक शख़्स ने आप से दरयाफ़्त किया हुज़ूर रात होने को आई है इसमें तो रोज़ा हराम है ? आपने उस शख़्स का हाथ बग़लगीर किया ही था कि सूरज अपनी पूरी आबो ताब के साथ चमकता हुआ नज़र आया। फिर किसी ने पूछा अल इल्मे हिजाबुल अकबर से क्या मुराद है? आपने फ़रमाया,''तजल्लिए इल्म के साथ ख़ाकसारी और आजिज़ी हो तो अल्लाह तआला के इरफ़ान का दरवाज़ा खुल जाता है ओर वहबी इल्म से इन्सान मुतमत्ता होता है फिर पूछा गया उलमा जो उमरा और बाद शाहों की साहबत में रहते हैं उनकी हक़ीक़त क्या है? आपने फ़रमाया अगर वो जाहो हश्मत हासिल करने के लिए रहते हैं तो उनकी मिसाल ऐसी है जैसे ख़िन्ज़ीर की हड्डी मजज़ूब के हाथ में ये सभी मदारे पाक के हाथ पर बैयत हो गये मगर शम्सुल उलमा इम्तेहान में लगे रहे।

नौबत ब ईंजा रसीद क़ाज़ी साहब ने एक मसनोई जनाज़ा आपकी ख़िदमत में भेजा सोचा अगर आप रौशन ज़मीर हैं तो नमाज़ नहीं पढ़ायें गे वरना आपकी मसनोई बुज़ुर्गी का पोल खुल जायेगा। आपने नमाज़ पढ़ा दी। मसख़रों ने जब कपड़ा हटाया तो वो शख़्स मरा हुआ था।

अलग़रज़ घबराये क़ाज़ी साहब मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी किछोछवी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और तमाम हालात से आगाह किया। उन्हों ने हज़रत बदी उद्दीन कुतबुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के कमालाते सूरी व मानवी जलालतो कुदरत उलूए मर्तबा से क़ाज़ी शहाब उद्दीन को आगाह करते हुए फ़रमाया,'' तुम्हारे वास्ते इसमें फ़लाह है किबिला तवक़्क़ुफ़ बसद हज़ार अक़ीदत व नियाज़ मन्दी और इख़्लास के साथ हुज़ूरे अक़्दस की ख़िदमत में हाज़िर होकर तक़सीरात की माफ़ी के ख़्वास्तगार हो। उन्हें मालूम है कि तुम मेरे पास आये हो। अब वो कमाले मेहरबानी फ़रमायें गे। क़ाज़ी साहब ने ऐसा ही किया और सिलसिलए आलिया में दाख़िल होकर ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए।

एक दरियाए नापैद किनार :हज़रत शाह फ़ज़्लुल्लाह बदख़्शानी ख़ुदा तलबी का शौक़ लिए मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी के पास पहुँचे उन्होंने ये कहते हुए कि आपका हिस्सा मेरे यहाँ नहीं है कुतबुल मदार की तरफ़ रुजू किया। ख़िदमत में पहुँचे मदारे पाक ने कहा ये एक दरियाए नापैद किनार है जिसमें आप कदम रख रहे हैं फिर बैयत किया फिर इस मर्तबे पर पहुँचे कि ख़लीफ़ा हुए।

हज़रत सैयद अजमल जौनपुरी निस्बते बातनी से तर्को तजरीद की मानिन्द मुस्फ़ीद हुए इल्मुन्निसाब में आपको कमाल हासिल था मख़्दूम अशरफ़ समनानी को जब कोई मसला इसके मुताल्लिक़ पेश आता तो इन्हीं से दरियाफ़्त करते हज़रत कुतबुल मदार के ख़ुल्फ़ा में हज़रत अजमल ही थे जो तसव्वुफ़ की किताब पढ़ा करते थे और डहाड़ें मार कर रोया करते थे।

मैं ख़ुदा तक पहुँ चगया : हज़रत मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती जौनपुरी ने कुतबुल मदार से शर्फ़े बैयतो ख़िलाफ़त हासिल किया। जब मदारे पाक हुजरे में तन्हा होते तो नक़ाब हटा देते। एक दिन शौक़े दीदारे मदार का ग़ल्बा हुआ और बिला इजाज़त मौलाना हुजरे में दाख़िल हो गये और ज्यों ही नज़र रूए जमाल पर पड़ी पूरे बदन में सोज़िश का ग़लबा हुआ और तड़पने लगे मदारे पाक ने फ़रमाया सलामती सलामती चेहरा ढाँकते हुए कहा कोई बे अदब ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता मौलाना ने कहा अगर मैं अदब करता जमाले ख़ुदा से महरूम रह जाता।

बदी उद्दीन कुतबुल मदार ने चार साल छेः माह सत्रह दिन जौनपुर में क़याम किया। यहाँ आपका मामूल था कि मख़लूक़ की फ़ायदा रसाई के लिए जुमेरात के दिन लोगो वाज़ो नसीहत फ़रमाते हर क़िस्म की गुफ़्तुगू में हिस्सा लेते चेहरे से नक़ाब हटा देते। तमाम दुनिया आपकी मोतक़िद थी हर वक़्त आप की बारगाह में हाजतमन्दों का मजमा रहता जौनपुर में ये शोहरत हो गयी थी कि बाक़ी की ज़िन्दगी आप जौनपुर में ही गुज़ारें गे। एक रोज़ आपको हिदायते ग़ैबी हुयी उस मुक़ाम के लिए इशारा किया गया जिसकी बशारत हुज़ूर ने फ़रमाई थी। आपने उसी वक़्त जौनपुर से रवानगी का एलान कर दिया।

हर चन्द इब्राहीम शर्क़ी, सैयद सदरे जहाँ, क़ाज़ी शहाब उद्दीन दौलताबादी और तमाम शहर वालों ने बसदज़ारी इल्तिजा की अलग़रज़ आपने दोबारा आने का वादा किया और सुल्तानपुर होते हुए किन्तूर में क़याम किया यहाँ मौलाना क़ाज़ी महमूद काश्ग़री की क़यादत में आपने नमाज़ अदा की और दूसरी रकअत में जमात से अलग हो गये पूछने पर आपने बताया मेरी नमाज़ अल्लाह के हुज़ूर होती है इमाम साहब जब घोड़ी बछड़ी तलाश करने लगे तो क़यादत से हटना पड़ा क़ाज़ी साहब ये क़ल्बी राज सुनकर मुतास्सिर हुए इस्मे ग्रामी मालूम होते ही क़ाज़ी साहब को शेख़ अबुल फ़तेह शत्तारी का क़ौल याद आया कि आप बड़े नसीब वाले हैं आपको हज़रत बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार से फ़ैज़ हासिल होगा। फौरन बैयत हुए और शजरा तलब किया। आपने फ़रमाया,'' اکتب اسمک ثم اسمی ثم رسول الله ﷺ अपना नाम लिखिये मेरा नाम लिखिये फिर रसूल अल्लाह ﷺ का लिख दीजिये। फिर क़ाज़ी साहब ने औलाद के लिये दुआ को कहा आपने अपनी पीठ इनकी पीठ से मस फरमाते हुए कहा बच्चे का नाम मीठे मदार रखना। फिर आप लखनऊ चले आये।

लखनऊ में शाह मीना और उनके मुताल्लिक़ीन ने बेहद इसरार किया तमाम रात लोगों का ताँता लगा रहा। मगर सुब्ह होते ही आप मोहान असेवन सफ़ीपुर बॉगरमऊ ठहरते हुए कन्नौज में जलवा अफ़्रोज़ हुए।

कमाले मुहब्बत और गंगा से हाथ नमूदार हुआ : हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान बिन सैयद अकमल माज़िन्दानी मुकर्रम व मख़दूम शेख़ अख़ी जमशेद क़िदवाई ख़लीफ़ा मख़दूम जहाँनियाँ जहाँ गश्त सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी को जब अपने दादा पीर की तशरीफ़ आवरी की ख़बर हुयी तो कमाले मुहब्बतो इख़्लास ख़िदमत में हाज़िर हुये और बैयतो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए क़न्नौज में दो महन्त रोज़ मदारे पाक की क़यामगाह के सामने से होकर गंगा स्नान को जाया करते थे एक दिन आपने उन्हें अपनी अंगूठी देकर फरमाया कि ये अंगूठी गंगा को दे देना। जब ये स्नान से फ़ारिग़ हुए तो अज़राहे तमस्ख़ुर उन्होंने गंगा को अंगूठी दिखाते हुए कहा लो ये बाबा ने भेजी है कहना था कि गंगा से हाथ नमूदार हुआ ये अंगूठी गंवाना नहीं चाहते थे मगर एक ने कहा जिसका कहना गंगा मानती है उसे यह नहीं पता कि तुमने अंगूठी का क्या किया जब अंगूठी देकर लौटे तो मुसल्मान हो गये ।

जदीद मदारे आज़म

तालाब की लहरों से आवाज़ आयी :कन्नौज से आप जुनूब की तरफ़ रवाना हुए जिस क़दर बढ़ते जंगल और घना होता जाता यहाँ तक कि आप उस तालाब तक पहुँच गये जिसकी निशानदही हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायी थी जब आप तालाब के क़रीब हुए तालाब की लहरों से तीन मर्तबा "या अज़ीज़" की आवाज़ आकर ख़त्म हो गयी। आपने हाज़रीन से इरशाद फ़रमाया,"ये मेंरी आख़री आराम गाह है।" रफ़्ता रफ़्ता तालाब ख़ुश्क हो गया और पानी की क़िल्लत बढ़ गयी अलग़रज़ हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه ने अपने ख़लीफ़ा हज़रते यासीन को अपना असा मुबारक देते हुए कहा कोई कुशादा जगह देख कर मग़रिब से मशिरक़ की जानिब एक लकीर खींच दीजिए लकीर खींचना थी कि चश्मा जारी हो गया। (मुग़लिया दौरे हुकूमत में इस चश्में को मैंनपुरी झील से मग़रिब में और गंगा से मशिरक़ में मिला दिया गया इस चश्में का नाम यासीन से अंग्रेज़ों के दौर में ईसन हो गया) एक रवायत के मुताबिक़ जन्नत से चार नदियाँ निकली हैं नील मिस्र में, फ़ुरात ईराक़ में, जैहून तुर्किस्तान में और सैहून मकनपुर शरीफ़ में जिसको यूँ समझा जा सकता है क़ुरआन कहता مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वादा किया जाता है उसकी कैफ़ियत ये है कि उसमें बहुत सी नहरें ऐसे पानी की हैं जिनमें ज़रा तग़य्युर नहीं होगा और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिसका ज़ाएक़ा ज़रा न बदला होगा और बहुत सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिये बहुत लज़ीज़ होंगी और बहुत सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होंगी और उनके लिये वहाँ हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

और तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि फ़रमाया हुज़ूर ﷺ ने कि बिला शुबह जन्नत में पानी का दरिया है शहद का दरिया है दूध का दरिया है और शराब का दरिया है फिर उनसे और नहरें फूटी हैं।

जैसा कि क़ुरआनो हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में दूध के दरिया हैं और उनसे नहरें निकली हैं। मकनपुर शरीफ़ में भी ईसन से दूध की धार का निकलना बहुत मशहूर है।

इस जगह का तारीख़ी नाम :तालाब के ख़ुश्क होते ही ज़िन्दा शाह मदार ﷺ के हुक्म से तालाब में ही एक हुजरा तामीर कर दिया गया जिसमें आप आराम फ़रमा हुए आपके बाज़ हमराहियों ने भी हुजरे के क़रीब में ही झोपड़ियाँ डालना शुरू कर दीं। क़ाज़ी सद्र उद्दीन जौनपुरी ने इस मुक़ाम का नाम ''ख़ैराबाद'' रखा चूँ कि आप 818 हिजरी में यहाँ पहुँचे थे जिसके अदद इतने ही होते हैं।

पर्दा मर्दों से होता है :बीबी बहोर मजज़ूबा इसी जंगल में बरहना रहती थीं लोगों के पूछने पर कहती पर्दा मर्दों से होता है जब शाह मदार का रुख इधर को हुआ तो आपने कपड़े पहन लिए सरकार की तशरीफ़ आवरी पर बैयत का शरफ़ हासिल किया ।(मज़ार देवहा में है)

जिन्नात सख़्त परीशान हुए :हज़रत जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती चन्द हमराहियों के साथ टहलने निकले (इन मुक़ामात के नाम आज देवहा,और देवकली हैं) आपने देखा कि इस जंगल में जिन्नात खाना बना रहे हैं। जिन्नात बोले आप लोग भी खाना ले लीजिए इन्हों ने अपना कश्कोल आगे बढ़ा दिया तमाम खाना इस बर्तन में डाल दिया गया मगर बर्तन ख़ाली रहा ये देख कर जिन्नात सख़्त परीशान हुए और कहा ये तो ज़माने भर के पीर मालूम होते हैं जानेमन ने कुतबुल मदार के पास लाकर इन्हें दाख़िले सिलसिला करा दिया । (आज भी इनके कमालात ख़ानक़ाह शरीफ़ पर आये दिन मुशाहिदे में आते हैं)

मखना देव : माखन सिंह अपने गिरोह के साथ इसी जंगल में रहता था डील डौल बड़ा होने की वजह से वो मखना देव के नाम से मशहूर था। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने जब इस जंगल में क़दम रंजा फ़रमाया तो आपके हमराह एक तादाद के मुताबिक़ पचास हज़ार का मजमा था इतनी बड़ी तादाद और आपके अजीबो ग़रीब हालात देख कर इसे हैरानी हुयी इसने किशन सिंह उर्फ़ किशनू को आपकी टोह के लिए भेजा किशनू को उस वक़्त हैरानी हुयी जब आपने उसका नाम लेकर पास आने को कहा फिर मदारे पाक ने पूछा कि माखन सिंह क्यों नहीं आया? माखन सिंह को जब ये हालात मालूम हुए तो वो भागा हुआ ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया बाबा अगर आप इजाज़त दें तो आपकी कुटिया का कलस सोने का बनवा दूँ। आपने अपने ख़लीफ़ा

चुनैन शाह लंका पति को इशारा किया उन्हों ने इसकी आखें बन्द करके खोल दीं अब वो जिधर देखता हर चीज़ सोने की नज़र आती आपने फरमाया कि हमें सोने चॉनदी की ज़रूरत नहीं तुम ये लूटा हुआ माल वापस करके मेरे पास आना अलग़रज़ माखन सिंह अपने गिरोह के साथ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए इनका इस्लामी नाम ख़ैरुद्दीन रखा गया और मक्कन सरबाज़ के लक़ब से मुलक़ब हुए अब इनका ये हाल था कि घास छीलते और पेट पालते इनके ज़िम्मे सरकारी ख़िदमत ये थी कि लंगर के लिए लकड़िया फाड़ते और खाना तक़सीम करने में हाथ बटाते।(बाद अर्से दराज़ इन्होंने सोने का कलस बनवाया जब लेकर आये तो लुटेरों ने इन्हें घेर लिया ये एक इमली में समा गये चोरों के जाने के बाद बाहर आये इमली बरसों फटी खड़ी रही इनका उर्स चैत की पहली सोमवार को होता है मज़ार शरीफ़ मकनपुर रसूलाबाद रोड पर है) .

मौत उनकी मुट्ठी में :इसी असना में शहर क़न्नौज में हैज़ा शुरू हुआ यहॉ तक कि एक को जला कर लौटते तो दूसरा तैयार। बिलआख़िर मख़्क़ का एक जम्मेग़फ़ीर हिन्दुओं के बड़े गुरू बाबा गोपाल के पास पहुँचा और दुआ के लिए दरख़्वास्त की उन्होंने कहा ये मेरे बसकी बात नहीं। और इन लोगों को बाबा मदार शाह के पास भेज दिया। आपने हज़रत भीका और शहाब उद्दीन परकाला आतिश को उनके साथ रवाना किया। रास्ते में तलबा ने इनका मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा जब बाबा गोपाल हार गये तो ये क्या करेंगे और ये तय हुआ कि अगर चालीस दिन तक कोई न मरा तो हम सब इस्लाम में दाख़िल होजायें गे। इनके पहुँचते ही मौत पर रोक लग गयी और उन्तालीसवें दिन उन लोगों ने एक बुढ़िया को मारने का मनसूबा बनाया इस पर बाबा गोपाल ने कहा कि क्या उनको पता नहीं होगा कि तुम मार कर लाये हो या अपने आप मर गयी मौत तो जैसे उनकी मुट्ठी में हो चलो सबसे पहले हम इस्लाम कुबूल करते हैं काफ़ी तादाद में लोगों ने कुतबुल मदार की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम कुबूल किया और बाबा गोपाल आगे चलकर ख़लीफ़ा हुए।इनको बाबा भीका के हवाले किया गया। दोनों बुज़ुर्ग भीकारैन के लक़ब से मशहूर हुए। (इनके दोनों के मज़ारात ज़ेरे क़िला कन्नौज ज़्यारत गाहे ख़लायक़ हैं) .

लोथड़े में हाथ पॉव निकल आये : क़न्नौज के क़रीब गिरामऊ में

पुल राए भाट रहता था। मदारे पाक की ख़िदमत में हाज़िर होकर औलाद के लिए दरख़्वास्त की। आपकी दुआ से जब बच्चा पैदा हुआ तो बेदस्तो पा गोश्त का लोथड़ा था। आपके हुज़ूर लाकर डाल दिया। आपने आसमान की तरफ़ देखा देखते ही लोथड़े में हाथ पॉव निकल आये। आपने बच्चे का नाम दीन मुहम्मद रखा ये अल राए के लक़ब से मशहूर हुआ।

अस्ल मंज़िल :इसी असना में एक वफ़्द जौनपुर और क़न्नौज ढूँढता हुआ आया और मैनपुरी के लिए इसरार किया। आपने मैनपुरी का सफ़र किया फिर मुस्तफ़ाबाद पहुँचे। यहाँ अहमद एराज घोड़े से गिर गये कुतबुल मदार ﵁ ने इनके ज़ख़्मों पर अनार के छिलके जो वहीं पड़े हुए थे लगाते हुए कहा तौबा करो इस झूटी बेहोशी से अल्लाह को ग़ुरूर पसन्द नहीं। फ़ौरन बैयत हुए और हमसफ़र हुए। यहाँ से आपने आगरा, भरतपुर, बाँदीकुई, जयपुर, टोंक, देवली, बूँदी, और कोटा का सफ़र किया और केशव राव पाटन में जलवा अफ़्रोज़ हुए इस मर्तबा क़याम के दौरान हज़रत पीर सैयद शाह दाऊद और शेख़ अब्दुल अज़ीज़ मक्की से इरशाद फ़रमाया कि ये ज़मीन आप दोनों के लिए वक़्फ़ है। ज़रूरी हिदायत करने के बाद आप सिवाई करौल, शिकोहाबाद, जसवन्त नगर और भर्थना होते हुए कन्चौसी के क़रीब रौनक़ अफ़्रोज़ हुए। आपके सफ़र का रुख़ अचानक तब्दील हुआ था। यहाँ आपने चालीस दिन क़याम किया। एक दिन एक शख़्स ने हड्डी के कुछ मसनोई दाने पेश किये आपने एक दाना ज़मीन में दफ़्न कर दिया जो फ़ौरन उग आया। (आज भी मौजूद है इसे अनचिनार कहते है) यहाँ से आप अपनी क़याम गाह पर वापस आ गये।

मकनपुर नाम और जौनपुर का सफ़र : ख़ैर उद्दीन मक्कन सरबाज़ के नाम पर मक्कनपुर तजवीज़ किया गया और इनके दो साथियों नूर उद्दीन पहाड़ खाँ के नाम से पहाड़िया व शर्फ़ उद्दीन इलियास खाँ के नाम से इलियासपुर ये दोनों आबादियाँ भी मौजूद हैं।

सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी, मीर सदरे जहाँ, क़ाज़ी शहाबुद्दीन वग़ैरह की दरख़्वास्तों पर आप अपना वादा पूरा करने के लिए एक बार फिर जौनपुर के लिए रवाना हुए जगह जगह ठहरते और तबलीग़े दीन फ़रमाते हुए जौनपुर पहुँचे सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी, मीर सदरे जहाँ, क़ाज़ी शहाबुद्दीन दौलताबादी व दीगर अमायेदीन

व रोसाए शहर ने आपका ज़बरदस्त इस्तेक़्बाल किया यहाँ आपने इरफ़ान की दौलत ख़ूब लुटाई।

आख़री आरामगाह का एलान :हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ को जब ये यक़ीन हो गया कि हुक्म पूरा हो गया और मेरा काम ख़त्म हुआ और ज़रूरत बाक़ी न रही तो आपने अपनी आख़री आरामगाह का एलान फ़रमाया ये सुनते ही लोगों का अम्बूह शर्फ़े हमरकाबी के लिए उमण्ड पड़ा ।आपने एक अज़ीम बे मिसाल ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया। फिर मकनपुर के लिए रवाना हुए।

नूर का मसकन :हज़रत बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार ﷺ का क़ाफ़िला जौनपुर से रवाना होने ही वाला था कि मौलाना क़ाज़ी महमूद काश्ग़री तेग़ बरहना गर्ग दानिशमन्दाँ अपने बेटे मीठे मदार को लिए हाज़िरे ख़िदमत हुए आपने मीठे मदार को गोद में लेकर तमाम नेमात से सरफ़राज़ फ़रमाया। बादहू आपका क़ाफ़िला वाराणसी होता हुआ विन्ध्याचल के इलाके में फ़रोकश हुआ एक दिन एक शख़्स आपके पास भागता हुआ आया और कहा दरिया में एक कश्ती डूब गयी है आपने एक मुट्ठी ख़ाक देते हुए कहा ये दरिया में डाल दो मिट्टी डालते ही कश्ती बाहर आ गयी कसीर तादाद में लोग सिलसिलए इरादत में शामिल हो गये। आप प्रयाग फ़तेहपुर के रास्ते से मकनपुर तशरीफ़ लाये आपके क़दमों की बरकत से यहाँ नूर ही नूर फैल गया और मकनपुर शरीफ़ दारुन्नूर हो गया।

मुहम्मद अरग़ून का निकाह : एक दिन आपने हाज़रीन से इरशाद फ़रमाया मैंने इनकी शादी का फ़ैसला लिया है जानेमन जन्नती ने अर्ज़ किया सैयद अहमद जैथरावी ख़ानदाने फ़ात्मी में बहुत मुमताज़ शख़्सियत के मालिक हैं इनकी साहबज़ादी जन्नत बीबी निहायत ख़ूबसूरत नेकसीरत हैं।सरकार ने फ़ौरन पैग़ाम पहुँचाने का हुक्म फ़रमाया। अलग़रज़ सैयद मुहम्मद अरगून का निकाह जैथरा के सादात घराने में सैयदा जन्नत बीबी बिन्ते सैयद अहमद बिन सैयद विलायतउल्लाह सब्ज़दारी जैथरावी से 824 हिजरी बरोज़ जुमा क़रार पाया

अबू तुराब फ़न्सूर का निकाह :आपने दो अक़्द फ़रमाये पहला अपने ख़ानदान में सकीना बानों से 826 हिजरी इनसे कोई औलाद न होने की वजह से दूसरा निकाह देवहा से हज़रत बुरहान की साहबज़ादी शकर मेहर उर्फ़ शकर

पारा से 831 हिजरी में किया।

अबुल हसन तैफ़ूर का निकाह : आपने भी दो निकाह किये पहला इस्लाम नगर (बिल्हौर) से बीबी अच्छी से 828 हिजरी में दूसरा महरुन्निसॉं बहराइच से 842 हिजरी में।

मकनपुर शरीफ़ में मुस्तक़िल क़याम : जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ मुस्तकि़ल तौर पर दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ में क़याम पिज़ीर हो गये तो ख़ल्क़े ख़ुदा शर्फ़े ज़्यारत और अहले हाजत हुसूले मुरादात के वास्ते हर वक़्त जमा रहते एक मेला सा लगा रहता और बड़ी बड़ी मजालिस मुनअक़िद होतीं।

हुक्म : विसाल शरीफ़ से क़ब्ल जमादिउल अव्वल की 6 तारीख़ को हज़रत जिन्दा शाह मदार ﷺ ने अपने मौजूद ख़ुलफ़ा को अलग अलग बुला कर फ़ैज़ाने ख़ास से मामूर फ़रमाया और हर एक की निस्बत को मुस्तहकम फ़रमाकर एक जगह जमा होने का हुक्म फ़रमाया इसी रोज़ आपने एक ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया ये मशहूरो मारूफ़ ख़ुत्बा तारीख़े इस्लाम में ''ख़ुत्बए हुज्जतुल मदार'' के नाम से मशहूर है। अल मुख़्तसर आपने ख़्वाजा मुहम्मद अरग़ून को तलब फ़रमाया और ज़ोर देकर कहा ये मेरे जानशीन हैं मेरे बाद इन्हीं से रुजू करना अक़ीदा कुशाई होती रहेगी आपने मुहम्मद अरग़ून, अबूतुराब फ़न्सूर और अबुल हसन तैफ़ूर को कनफ़्से वाहिदा का ख़िताब इनायत फ़रमाया।

साकिने बेहिश्त 838 हिजरी :17 जमादिउल अव्वल(जमादिउल मदार) 838 हिजरी बरोज हफ़्ता सात साल आठ माह छेः दिन मकनपुर शरीफ़ में मुस्तकि़ल क़याम के बाद आपने फ़रमया 9 घड़े पानी से भरे हुजरे में लाकर रख दीजिए आज विसाले महबूब दरपेश है। लोगों ने पूछा,'' हुज़ूर तजहीज़ो तकफ़ीन के बाबत क्या हुक्म है? आपने इरशाद फ़रमाया,'' ये काम हिसाम उद्दीन सलामती के हाथों अंजाम होगा।'' लोग हैरान थे कि हिसाम उद्दीन इस वक़्त जौनपुर में थे इतनी जल्दी आना मुश्किल था। आप हुजरे में तशरीफ़ ले गये और दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लियाऔर मशग़ूले बेहक़ हो गये। इधर यका यक हिसाम उद्दीन सलामती मकनपुर शरीफ़ हाज़िर हुए जैसे ही हुजरे के क़रीब हुए दरवाज़ा ख़ुद ब ख़ुद खुल गया। देखा कि हज़रत सैयद बदीउद्दीन

अहमद कुतबुल मदार ﷺ गुस्ल और कफ़न से आरास्ता हैं ये काम मर्दाने ग़ैब ने अन्जाम दे दिया है। जनाज़े को बाहर लाया गया हिसाम उद्दीन सलामती ने नमाज़े जनाज़ा के फ़रायज़ अंजाम दिये जिसमें तक़रीबन एक लाख़ से ज़ायद लोगों ने शिरकत की। जब आपके जसदे मुबारक को क़ब्र में उतारा गया तो आपने ऑख खोल दी और आवाज़ आई "النفس لاضرب"ये सुनते ही हिसाम उद्दीन ने कहा हाज़ा हयातुल वली ।

इन्ना लिल्लाहे व इन्नाइलइहे राजेऊन

انا للہ و انا الیہ راجعون

विरदे ज़बान हर कसे पैहम मदारे मा
दम दम ब हर क़दम हमा दम दम मदारे मा
गोयन्द मुर्शिदाने तरीक़त बसद यक़ी
मा तालिबाने मुर्शिदे कामिल मदारे मा
"आमिर"

चार पीर सात गिरोह चौदह ख़ानवादे

चार पीर हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा ने 70 हज़रात को ख़िरक़य ख़िलाफ़त अता फ़रमाया इन में चार पीर मुक़र्रर फ़रमाये-

1-सैयदना इमाम हसन عليه السلام 2-सैयदना इमाम हुसैन عليه السلام 3-ख़्वाजा कमील इब्ने ज़्याद رضي الله عنه 4-हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه

सात गिरोह मौला अली शेरे ख़ुदा से सात गिरोह जारी हुए

1.गिरोहे कमीलिया- कमील बिन ज़्याद رضي الله عنه से 2.गिरोहे बसरिया- ख़्वाजा हसन बसरी رضي الله عنه से 3.गिरोहे उवैसिया- ख़्वाजा उवैस क़र्नी رضي الله عنه से 4.गिरोहे क़लन्दरिया - ख़्वाजा बद्र उद्दीन क़लन्दर رضي الله عنه से 5.गिरोहे सुलेमानिया-सुलेमान फ़ारसी رضي الله عنه से 6.गिरोहे नक़्शबन्दिया-क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه से 7.गिरोहे सर्रिया- ख़्वाजा सरी सक़्ती رضي الله عنه से।

चौदह ख़ानवादे हज़रत हसन बसरी के ख़लीफ़ा ख़्वाजा हबीब अजमी हैं जिनसे दुनिया में 9 ख़ानवादे हैं -

1.ख़ानवादये हबीबिया-ख़्वाजा हबीब अजमी से 2.ख़ानवादये तैफ़ूरिया-बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी से 3.ख़ानवादये कर्ख़िया-4.ख़ानवादये सक़तिया-ख़्वाजा सरी सक़्ती से 5.ख़ानवादये जुनैदिया-जुनैद बगदादी से 6.ख़ानवादय गारनिया-ख़्वाजा इस्हाक़ गारनी से 7.ख़ानवादय तौसिया-ख़्वाजा अबुलसरह तौसी से 8.ख़ानवादय फ़िरदौसिया-शेख़ नजीब उद्दीन कुबरा फ़िरदौसी से 9.ख़ानवादय सोहरवर्दिया-शहाब उद्दीन सोहर वर्दी से।और पॉच ख़ानवादे अब्दुल वाहिद बिन ज़्याद से जारी हुए।

10.ख़ानवादय जैदिया- ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन जैद से 11.ख़ानवादय अयाज़िया- ख़्वाजा फ़ज़ल बिन अयाज़ से १२.ख़ानवादय अधमिया- इब्राहीम बिन अधम से 13.ख़ानवादय हुबैरिया- ख़्वाजा हुबैरतुलबसरी से 14.ख़ानवादय चिश्तिया- अबू इस्हाक़ चिश्ती से गिरोहे तैफ़ूरिया हजरत बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ से जारी हुआ आप बायज़ीदे पाक बुस्तामी उर्फ़ तैूर शामी के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं इसलिये ख़ानवादय दोम से आपका ताल्लुक़ है।

कुतबुल मदार की रूहानी निस्बतें

आप رضي الله عنه हुज़ूर ﷺ से सलासिले ख़मसा की निस्बतों जाफ़रिया, तैफ़ूरिया, सिद्दीक़िया, मेहदविया, उवैसिया से मुन्सलिक व मरबूत हैं

निस्बते जाफ़रिया हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ رضي الله عنه हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी رضي الله عنه हज़रत सैयद बहाउद्दीन رضي الله عنه हज़रत सैयद ज़हीर उद्दीन رضي الله عنه हज़रत सैयद अहमद उर्फ़ इस्माईल सानी رضي الله عنه हज़रत सैयद मुहम्मद رضي الله عنه हज़रत सैयद इस्माईल رضي الله عنه हज़रत सैयद इमाम जाफ़र सादिक़ رضي الله عنه हज़रत सैयद इमाम मुहम्मद बाक़र رضي الله عنه हज़रत सैयद इमाम ज़ैनुल आब्दीन رضي الله عنه हज़रत सैयद इमाम हुसैन عليه السلام हज़रत सैयद अली करमुल्लाह वज्हुलकरीम

निस्बते तैफ़ूरिया हज़रत बदी उद्दीन शाह अहमद ज़िन्दाने सौफ़ رضي الله عنه हज़रत बा यज़ीदे पाक बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी رضي الله عنه हज़रत हबीब अजमी رضي الله عنه हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه हज़रत अली करम उल्लाह वज्हुलकरीम .

निस्बते सिद्दीक़िया हज़रत मदारुल आलमीन सैयद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه हज़रत बायज़ीदे पाक बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी رضي الله عنه हज़रत ऐन उद्दीन शामी رضي الله عنه हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार رضي الله عنه हज़रत अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह ﷺ .

निस्बते मेहदविया हज़रत बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार رضي الله عنه को रूहे पाक हज़रत मउद मेहंदी आख़िरुज़्ज़माँ عليه السلام से रूहानी वाबस्तगी हासिल हुई और कुर्बेक़यामत जो सिलसिला बाक़ी रहेगा वह मेहदविया मदारिया ही होगा

निस्बते उवैसिया हज़रत बदी उद्दीन अहमद मदारुल आलमीन رضي الله عنه रास्त क़ल्बे रहमतल्लिल आलमीन नूरे मुजस्सम ﷺ ब ईं निस्बते कुतबुल मदार -फ़रमाते हैं- اکتب اسمک ثم اسمی ثم اسم رسول الله ﷺ

हज़रत बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार ﷺ से सलासिले ख़मसा की निस्बतें तमाम सलासिले आलिया मदारिया में जारी व सारी हैं।

अजराये सलासिल

सही तादादः– हज़रत मदारुल आलमीन सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार ﷺ से जिन बेशुमार मशायख़े किबार को फ़ैज़ हासिल हुआ और जिन लोगों को आपने ख़िलाफ़त व इजाज़ते सिलसिला से सरफ़राज़ फ़रमाया पूरी दुनिया के गोशे गोशे और चप्पे चप्पे में मौजूद हैं ये हज़रात जब तक ज़िन्दा रहे इस्लाम की तबलीग़ो इशाअत और फ़रोग़े सिलसिलय आलिया मदारिया में कोशाँ रहे इनकी सही तादाद बता पाना बहुत मुश्किल है जो आप की इस तवील हयाते मुक़द्दसा से अलग अलग ताल्लुक़ रखते हैं।

शाख़ें:- ख़ुतबय हुज्जतुल मदार की तादाद के मुताबिक़ एक ही दिन में एक हज़ार चार सौ बयालीस मुरीदीन को ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया इस से अन्दाज़ा होता है कि लाखों और करोड़ों की तादाद में आपके ख़लीफ़ा थे जिनसे बे शुमार सिलसिलों का अजरा हुआ और हर सिलसिले की शाख़ें भी निकलीं।

मसलन

सिलसिलय ख़ादिमान हर सह ख़्वाजगान हज़रत अबू मुहम्मद अरग़ून रह० हज़रत अबुल हसन तैफ़ूर रह० और हज़रत अबूतुराब फ़न्सूर रह० से सिलसिलय ख़ादिमान का अजरा हुआ जिससे 7 शाख़ें निकलीं जैसे-अरगूनी' फ़नसूरी' तैफ़ूरी' सलोतरी' सरमूरी' सिकन्दरी' ऐनी वग़ैरह

सिलसिलय दीवानगान हज़रत जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती रह० से सिलसिलय दीवानगान का अजरा हुआ जिससे 72 शाख़ें निकली मसलन- दीवानगान हुसैनी' दीवानगान सुल्तानी' दीवानगान रशीदी' दीवानगान दरियायी' दीवानगान सरमूरी' दीवानगान ज़िन्दादिली' दीवानगान आतिशी' दीवानगान

कामिली' दीवानगान जमशेदी' दीवानगान मद्दाही' दीवानगान शरीफ़ी' दीवानगान अबुलउलायी' दीवानगान माईपोस्त' दीवानगान करीमी' दीवानगान क़ादरी' दीवान गान लौलंगर लंकापती' दीवानगान सुद्दूशाही' दीवानगान मक़बूलशाही' दीवानगान ख़ाक नूरी' दीवानगान जाम नूरी' दीवानगान लक्कड़ शाही वग़ैरह मशहूर हैं।

सिलसिलय आशिक़ान हज़रत क़ाज़ी मुतहर कल्ला शेर रह० से सिलसिलय आशिक़ान का अजरा हुआ जिससे 48 शाख़े निकलीं इनमें आशिक़ान इमाम नौरोज़ी' आशिक़ान सोख़्ता शाही' आशिक़ान कमरबस्ता' आशिक़ान लाल शहबाज़ी' आशिक़ान बाबा गोपाली' आशिक़ान मक्खा शाही' आषिक़ान क़ादरी' आशिक़ान करीम शाही' आशिक़ान कलामी' आशिक़ान कारख़ोरी वगैरह बहुत मशहूर हैं।

सिलसिलय तालिबान हज़रत क़ाज़ी महमूद उद्दीन गर्ग दानिशमन्दाँ तेग़ बरहना काश्ग़री से सिलसिलय तालिबान का अजरा हुआ जिससे 36 शाख़ें निकलीं-इस सिलसिले के लोग समरक़न्द' ताशक़न्द' चीन' अफ़ग़ानिस्तान' तबरिस्तान वग़ैरह में कसरत से पाये जाते हैं।

सिलसिलय अजमलियान हज़रत सैयद अजमल बहराइची से सिलसिलय अजमलियान का अजरा हुआ -तमाम सलासिले चिश्तिया क़ादरिया सोहरवर्दिया नक़्शबन्दिया वग़ैरह इस सिलसिले से वाबस्ता हैं।

सिलसिलय हिसामियान हज़रत सैयद हिसामुद्दीन सलामती से सिलसिलय हिसामियान का अजरा हुआ जिससे 32 शाख़ें निकलीं इसी तरह शेख़ ज़मीरी से ज़मीरिया, शेख़ हमीद से हमीदिया, शेख़ अहमद उद्दीन चीन से अहमदिया, ज़हीर उद्दीन इलियास गुजराती से ज़हीरिया, शाह दाना वली बरेली से दानिया, अब्दुल हमीद तहमद से तहमदिया, ज़हीर उद्दीन कुरलानी चीन से कुरलानिया, सैयद रौशन बरेलवी से रौशनिया, सैयद निज़ाम उद्दीन अबदी बकताबी से बकताबिया सैयद इमाम से इमामिया वग़ैरह

सिलसिलय मलामतिया वह तरीक़ याफ़्ता बुज़ुर्ग जो फ़नाफ़िल्लाह के मुक़ाम पर फ़ायज़ होकर दीवानगी की हालत में अपने तन बदन का होश नहीं रखते ऐसी हालत में दुनिया उन पर तान करती है - इनमें निहंग धड़ंग जोगन वग़ैरह सिलसिले आते हैं।

फ़ैज़ाने रूहानी तमाम सलासिले आलिया पर

इस जहाने मुआर्फ़त में तुझसे कुफ्त्बे दो सरा
कौन है जिसको नहीं फ़ैजाने रूहानी मिला

हज़रत मदारुल आलमीन ﷺ के ख़ुलफ़ाय किराम की तादाद सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही 1442 हुई है इसके अलावा दीगर सलासिल के 3000 बुज़ुर्गों ने आपसे इस्तेफ़ादा हासिल किया चन्द मुशाहीर बुज़ुर्गों का ज़िक्र तायराना तौर पर किया जा रहा है।

सिलसिलय क़ादरिया मदारिया हज़रत अबुल हसन रह० हज़रत आले रसूल अहमदी रह० हज़रत अच्छे मियॉं रह० हज़रत सैयद हमज़ा रह० हज़रत आले मुहम्मदुलबरकात अलमारहरवी रह० हज़रत सैयद फ़ज़्लुल्लाह रह० हज़रत सैयद मुहम्मद रह० हज़रत क़याम उद्दीन रह० हज़रत शेख़ कुतुबुद्दीन रह० हज़रत अब्दुल क़ादिर रह० हज़रत सैयद मुबारक रह० हज़रत सैयद अजमल बहराइची रह० हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार ﷺ

अन्नूर वल बहा फ़ी असानेदुल हदीस

सिलसिलय अशरफ़िया मदारिया सैयद अब्दुल हय्यी अशरफ़ ★ वजह उद्दीन अशरफ़ ★ तक़ी उद्दीन अशरफ़ व याहया अशरफ़ ★ नेमत उल्लाह अशरफ़ ★ जमाल अशरफ़ ★ शाह मुहामिद मक्की ★ जाफ़र उर्फ़ शाह महमूद ★ शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ★ सैयद अशरफ़ समनानी कछोछवी ★ सैयद जलाल उद्दीन बुख़ारी मख़दूम जहानियॉं जहॉंगश्त ★ सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार ﷺ

लतायफ़े अशरफ़ी व अनवारे अशरफ़ी

सिलसिलय चिश्तिया मदारिया हज़रत इमदाद उल्लाह महाजिर मक्की ★नूर मुहम्मद झंझानवी ★शाह अब्दुर्रहीम शाह अब्दुल बारी अमरोही ★शाह मुहम्मद मक्की ★शाह मुहम्मदी ★शेख़ मुहिब उल्लाह इलाहबादी ★शेख़ अबू सईद गंगोही ★शेख़ निज़ाम उद्दीन बलख़ी ★शेख़ जलाल उद्दीन थानेश्वरी ★शेख़ अब्दुल कुद्दूस गंगोही ★इदरीस मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी ★बुद्धन बहराईची (अजमल बहराईची) ★बदी उद्दीन कुतबुल मदार

कुल्लियाते इमदाद.

सिलसिलय नक़्शबन्दिया मदारिया शाह मुहम्मद शेर पीली भीती ★ अहमद अली शाह ★ दर्गाही शाह राम पुरी ★ शाह हाफ़िज़ जमाल उल्लाह रामपुरी ★ कुतुबुद्दीन ★ ख़्वाजा ज़ुबैर मुहम्मद नक़्शबन्द ★ ख़्वाजा मासूम ★ शेख़ अहमद मुजद्दिद अल्फ़सानी ★शेख़ अब्दुल वाहिद ★शेख़ रुक्न उद्दीन गंगोही ★ अब्दुल कुद्दूस गंगोही ★ शेख़ दरवेश बिन क़ासिम अवधी ★ शेख सैयद बुद्धन बहराइची ★ शेख़ सैयद अजमल बहराइची ★ हज़रत सैयद बदी उद्दीन शाह मदार मकनपुरी जवाहिरे हिदायत

सिलसिलय अबुल उलाइया मदारिया शेख़ बुरहान उद्दीन मलिहाबादी ★ शेख़ मुहम्मद फ़रहाद देहल्वी ★ शेख़ ख़्वाजा दोस्त मुहम्मद ★शेख़ सैयदना अमीर अबुलउला ★ शेख़ अब्दुल्लाह एहरार ★ शेख़ याक़ूब चुर्खी ★शेख़ हिदायतुल्लाह सर मस्त ★ शेख़ क़ाज़िन ★ मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती ★ सैयद बदी उद्दीन कुतबुल मदार ﵁ तज़किरा

सिलसिलय साबिरया मदारिया मोलवी मुहम्मद हसन ★अमीर शाह तैफ़ूरी ★ मियाँ ग़ुलाम शाह ★ शाह अब्दुल करीम ★ शाह इनायत उल्लाह मीराँ ★ शाह सैयद भीका ★ शाह अबुल मुआली ★ शेख़ दाउद गंगोही ★ शाह अबू सईद गंगोही ★ शाह निज़ाम उद्दीन बलख़ी ★ शाह जलाल उद्दीन थानेश्वरी ★ शाह अब्दुल कुद्दूस ★ शाह इदरीस मुहम्मद अवधी ★ शाह बुद्धन बहराइची ★ शाह अजमल बहराइची ★ शाह बदी उद्दीन मदार ﵁ आइनये तसव्वुफ़

सिलसिलय फ़ारूक़िया मदारिया शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सर हिन्दी ★ शेख़ अब्दुल अहद ★ शेख़ रुक्न उद्दीन ★ शेख़ अब्दुल कुद्दूस गंगोही ★ इदरीस मुहम्मद क़ासिम अवधी ★ शाह बुद्धन बहराइची ★ शाह अजमल बहराइची सैयद बदी उद्दीन मदार ﵁ तज़किरा

वलीउल्लाह मोहददिस देहल्वी और सिलसिलय मदारिया शाह वली उल्लाह मोहद्दिस देहल्वी★शेख़ अबू ताहिर मदनी★शेख़ इब्राहीम★शेख़ अहमद तशाशी★शेख़ शतावी★शेख़ सैयद सिब्ग़तुल्लाह★शेख़ वजह उद्दीन गुजराती★शेख़ मुहम्मद ग्वालयरी ★शेख़ तहूर हाजी ज़हूर★शेख़ हिदायत उल्लाह सरमदी★शेख़ मुहम्मद क़ाज़ी★शेख़ हिसाम उद्दीन सलामती★शेख़ुलवक़्त बदी उद्दीन मदार ﵁ मक़ालाते तरीक़त

बुज़ुर्गाने सफ़ीपुर और सिलसिलय मदारिया मख़दूमुल अनाम शाह अमीर उल्लाह सफ़वी★शाह हफ़ीज़उल्लाह व शाह मुहम्मदी उर्फ़ ग़ुलाम पीर ★शाह इफ़हामुल्लाह★शाह अब्दुल्लाह★शाह यूनुस★शाह ज़ाहिद★शाह अब्दुर्रहमान ★शाह अकरम★शाह बन्दगी मुबारक★शाह सफ़ी★शाह सादू★शेख़ सैयद बुद्धन बहराइची★अजमल बहराइची★सरकार क़ुतबुल मदार सैयद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार मकनपुरी ﷺ तज़्क्रतुल मुत्तक़ीन

साहबाने चौरा और सिलसिलय मदारिया हाफ़िज़ सुल्तान अहमद चौरा★शाह ख़ैरात अली★शाह सैयद हुसैन अली★शाह अहमद सईद★शाह सुल्तान अबू सईद★शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी★शाह सैयद अहमद★शाह सैयद मुहम्मद★शाह जमाल अलऔलिया★शाह क़याम उद्दीन★शाहक़ुतुबुद्दीन★सैयद जलाल अब्दुल क़ादिर★सैयद मुबारक★सैयद अजमल बहराइची★शेख़ुल मशायख़ शाह बदी उद्दीन अहमद क़ुदबुल मदार ﷺ मिनहाजे तरीक़तुन्नबी

सिलसिलय शम्सिया उवैसिया मदारिया शेख़ अरशद मुहम्मद रशीद मुस्तफ़ा अबू यज़ीद★शाह फ़ख़्र उद्दीन ज़िन्दा दिली★सैयद मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती★हज़रत सैयद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार। गंजे अरशदी

सिलवन शरीफ़ और सिलसिलय मदारिया शाह मुहम्मद नईम अता ★ शाह मुहम्मद मेंहदी अता ★ शाह मुहम्मद अता ★ शाह करीम अता ★ शाह मुहम्मद पनाह ★ शेख़ मुहम्मद अशरफ़ सलोनी ★ शाह अब्दुल करीम मानक पुरी ★ ख़्वाजा शाह सुल्तान मुहम्मद ★ शेख़ लाड मदारी ★ शेख़ त्वाहा मदारी ★ सैयद शाह मीठे मदार ★ ख़्वाजा सैयद महमूद उद्दीन किनतूरी ★ सुल्तानुल आरिफ़ीन वल मुत्तक़ीन सैयदना व मुरशिदना सैयद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार ﷺ .

बिलग्राम और सिलसिलय मदारिया पीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी ★मख़दूम शेख़ हुसैन बिन मुहम्मद सिकन्दराबादी ★मख़दूम शेख़ सफ़ी उद्दीन अब्दुस्समद सफ़ीपुरी★ मख़दूम शेख़साद उद्दीन बुद्धन ख़ैराबादी★ शेख़ मुहम्मद शाह मीना लखनवी★शेख़ सारंग राजू क़त्ताल सैयद जलाल उद्दीन बुख़ारी मारूफ़ ब मख़दूम जहाँ नियाँ जहाँगश्त मुरीद व ख़लीफ़ा सैयद बदी उद्दीन शाह मदार असाहुत्तवारीख़

सिलसिलए रज़्विया मदारिया आले रहमान मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ ★ हज़रत सैयदना अबुल हसन अहमद नूरी ★ हज़रत सैयदना आले रसूल हज़रत सैयदना अच्छे मियाँ ★ हज़रत सैयदना हमज़ा ★ हज़रत सैयदना आले मुहम्मद ★ हज़रत सैयदना बरकत उल्लाह ★ हज़रत सैयदना फ़ज़्ल उल्लाह कालपवी ★ हज़रत सैयदना अहमद ★ हज़रत सैयदना मुहम्मद ★ हज़रत सैयदना जमालुल औलिया ★ हज़रत सैयदना क़याम उद्दीन ★ हज़रत सैयदना कुतुब उद्दीन ★ हज़रत सैयदना जलाल अब्दुल क़ादिर ★ हज़रत सैयदना मुबारक ★ हज़रत सैयदना अजमल बहराइची ★ हज़रत सैयदना बदी उद्दीन कुतबुल मदार ﷺ

तज़किरए मशायख़े क़ादरिया रज़्विया

सिलसिलए वारसिया मदारिया हज़रत अलहाज हाफ़िज़ सैयद वारिस अली शाह देवाह शरीफ़ ★ हज़रत शाह यतीम अली शाह नौरोज़ हैदराबादी हज़रत शाह तालिब अली ★ हज़रत शाह बख़्शिश अली ★ हज़रत शाह मिस्कीन अली ★ हज़रत शाह नूर अली ★ हज़रत शाह क़ायम अली ★ हज़रत शाह हैदर अली ★ हज़रत शाह करम अली ★ हज़रत शाह दरबार अली ★ हज़रत शाह बन्दा अली ★ हज़रत शाह अब्दुल वाहिद ★ हज़रत शाह कमाल ★ हज़रत शाह जमाल ★ हज़रत शाह तबक़ात अली ★ हज़रत शाह अब्दुल ग़फ़ूर ग्वालियारी ★ हज़रत शाह राजे ★ हज़रत शाह अब्दुल हमीद ★ हज़रत शाह क़ाज़ी मुतहर कल्ला शेर मावरुन्नहरी ★ हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार

गुलज़ारे वारिस

वाज़ेह हो कि सलासिले क़ादरिया,चिश्तिया,सोहरवर्दिया,नक़्शबन्दिया,क़लन्दरिया, अशरफ़िया,वग़ैरह इन चार बुज़ुर्गों से मनसूबो मरबूत हैं हज़रत शाह अजमल बहराइची,हज़रत मख़्दूम जहाँनियाँ जहाँगश्त,हज़रत मख़्दूम अशरफ़ समनानी, हज़रत हिसाम उद्दीन सलामती मानकपुरी, यह चार बुज़ुर्ग क़ादरिया,चिश्तिया, सोहरवर्दिया,नक़्शबन्दिया,क़लन्दरिया वग़ैरह के साथ साथ मदारी भी हैं। इन हज़रात ने हुज़ूर सरकारे सरकाराँ सैयद बदी उद्दीन शाह अहमद ज़िन्दाने सौफ से बराहे रास्त सिलसिलय मदारिया हासिल किया और क़ादरियों,चिश्तियों,सोहर वर्दियों,अशरफ़ियों,वग़ैरह को तक़सीम फ़रमाया जो आज भी जारी और सारी है।

सिलसिलय मदारिया के चन्द मशहूर बुज़ुर्ग

यह बुज़ुर्गाने मोहतरम तज़्करतुलमुत्तक़ीन, गुलिस्ताने सैयदुल फुक़रा, कमाले बदी, जमाले बदी, इसरारे बदी, जुल्फुक़ारेबदी, हुसूले समदियत, तोहफ़तुल अबरार, बोस्ताने अहमदी, ज़हीरुल अबरार, सिराजुल औलिया, गुलज़ारे अबरार वग़ैरह से माख़ूज़ हैं । इसके अलावा कुतुबे सादेक़ा से यह भी वाज़ेह है कि सिर्फ़ हिन्दुसतान में ही दीगर सलासिल के तीन हज़ार से ज़ायद बुज़ुर्गों ने इस्तेफ़ादा हासिल फ़रमाया ।

सैयद मुहम्मद अरगून,सैयद अबुल हसन तैफ़ूर,सैयद अबू तुराब फ़न्सूर,दादा अली शेर मावरुन्नहरी,मीर हसन उर्फ़ बग़दादी,ख़ैर उद्दीन मक्कन सरबाज़,बाबा लाड दरबारी,ख़ैर उद्दीन दूल्हा शहीद,फ़िदाय रसूल,इनाम रसूल,अताए रसूल, शाह मुहम्मद यासीन,अल अव्वल शाह, ख़्वाजा मख़दूम शाह,शाह रिज़्क़ुल्लाह,मुहम्मद अब्दुल हमीद, ख़्वाजा मुहम्मद दरिया सईद,शाह अब्बास मन्सूरी वग़ैरह''दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़''मीर शम्स उद्दीन हसन अरब व मीर रुक्न उद्दीन हसन अरब ''गूजेपुर''जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती''हिलसा बिहार''शाह कंगन दीवान''बिहार'' हाजी मुहम्मद सुलेमान''मटौरा बिहार''महमूद उद्दीन गर्ग दानिशमन्दाँ''किन्तूर'' मीठे मदार''किनतूर''अहमद बिन मसरूक''खुरासान''अबू अली दरबारी''मिस्र'' शेख़ अब्दुल्लाह''मिस्र''ज़हीर उद्दीन दमिश्क़ी''मिस्र''मोहम्मद शाह ज़फ़र''मक्का''

मुहम्मद बासित पारसा“मक्का”ख़्वाजा सैयद हसन“बलख़”शेख़ हुसैन “बलख़” अबू दाउद सिद्दीक़ी“बलख़”शेख़ अब्दुल वहीद“बलख़”ख़्वाजा अबू नस्र मक्की “ईरान”शेख़ अब्दुल क़ादिर ईरानी“बड़ा मैदान ईरान”ख़्वाजा मारूफ“सीसतान” ख़्वाजा मारूफ“गाज़ौनी”ख़्वाजा इस्माईल“गाज़ौनी”ख़्वाजा तैफ़ूर“हलब”अबू सईद “हलब”मुहम्मद इस्माईल“हलब”सैयद दाउद“हलब”सैयद अब्दुल्लाह“हलब”क़ाज़ी नूर उद्दीन“खम्बात”अब्दुल ग़नी“खम्बात”अब्दुलल्तीफ“नजफ़अशरफ”शेख़अब्दुल वाहिद “नजफ़अशरफ़”लुत्फ़ उल्लाह“नजफ़अशरफ़”शेख़ महमूद“ज़िन्दरानी”शेख़ मुहम्मद फ़रीद“शाम”शेख़ फ़रीद उद्दीन शाह“अफ़ग़ानिस्तान”मौलाना फ़ख्रउद्दीन सूफ़ी “अफ़ग़ानिस्तान”शेख़ नूर उद्दीन“संजर”क़ाज़ी शहाब उद्दीन“बड़ा गॉव बाराबंकी”क़ाज़ी हमीद उद्दीन“नागौर”शाह इल्ला“क़िलानागौर”क़ाज़ी षहाब उद्दीन दौलताबादी“जौनपुर”सुल्तान मुबारक षाह षर्क़ी “जौनपुर”मीर सै० सदरे जहॉ “जौनपुर”वज़ीर मीर सैयद समद जमॉ“जौनपुर”सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी“जौनपुर” शेख़ शहाब उद्दीन गाज़ौनी“चीन कलॉ”क़याम उददीन जलालाबादी“चीन कलॉ” इमाम मीर शाह“करारी”कमाल उद्दीन बादयापा“उन्दलस” शेख़ शम्स उद्दीन सययाह“उन्दलस”शेख़ अबुल हसन शम्सी “संगद्वीप सीलौन”शेख़ निहाल उद्दीन‘ ‘संगद्वीप”अब्दुल क़ादिर ज़मीरी“संगद्वीप सीलौन”मख़दूम शाह मीना“लखनऊ”शम्स सानी“लखनऊ”शेख़ शाह कुतुब“बंगाल”शेख़ अली उर्फ़ अला“बंगाल”शेख़ ताशक़न्दी सुल्तान“बंगाल”शेख़ फ़रीद“बंगाल”ख़्वाजगान हफ़्तुम पर दरे पहरान“बरेली”बाबा नाव शाह“बरेली”बेला मियॉ “बरेली”जलाल उददीन शाह दाना“बरेली”शाह बर्क़ दीवाना“बरेली”शेख़ फ़रीद“बरेली”चुनैन शाह लंका पति“बहेड़ी बरेली”शेख़ अबू तुराब बरेल्वी“मालद्वीप”क़ाज़ी फ़ख़्र उद्दीन उसमान अर्बी“लाल कोयत”शाह अब्दुल्लाह चहार सुद्ध“मेवात”शेख़ शाह मुहम्मद“लाहौर”पीर बाबा बुख़ारी“कराची” जलाल उददीन बुख़ारी जहॉगश्त“पाकिस्तान”अबुल हसनात मंगू पीर“कराची” शेख़ ज़ाहिद बिन ख़ालिद“शीराज़”शेख़ झण्डा अवतार“बदायॅू”शाह हमीद मियॉ मुख़तार“बदायॅू”शेख़ सख़ी“रूस”अबुल फ़ज़ल बुख़ारी“रूस”शेख़ कबीर उददीन अर्बी“शुमाली रूस”शेख़ चिरातरी“इण्डो नेशिया”शाह गुलाम अली“एशिया”शेख़ महाबली“कम्बोडिया”शाह विलायत“शुमाली कश्मीर”शाह ज़ियारत“बिलोचिस्तान” शेख़ गुरू गौतम बली“जापान”दरबारी शाह“मंगोल”शेख़ अली बग़दादी“गुजरात” चैरोमन पैरोमल सामुरी“पता नहीं”शाह अहमद उददीन“गुजरात”सैयद शाह

इलियास‘‘गुजरात’’अब्दुल्लाह कुद्दूसी‘‘गुजरात’’शेख़ हमीद उद्दीन‘‘काठियावाड़’’ मुहम्मद अली राजा जसवन्त सिंह‘‘नवाही काठियावाड़’’मौलाना अबू अली दरबन्द ‘‘रूम’’ज़ाहिदसजिस्तानी‘‘रूम’’शाह नज्म उद्दीन‘‘कुर्तबा’’शेख़ भीका‘‘कन्नौज’’बाबा गोपाल‘‘कन्नौज’’शेख़ अब्दुल क़ादिर हिन्दी‘‘दकन’’शेख़ कबीर उद्दीन‘‘नवाही दकन’’ शेख़ मुहम्मद अली‘‘यूनान’’शेख़ सरवर हयात‘‘पंजाब’’शाह वली‘‘जज़ायरे कौक़’’ शाह अमीर कबीर‘‘गोंडा’’ख़ाकसार ख़ाकमीज़‘‘नेपाल’’शेख़ चराग़ अली शाह‘‘सम्भल’’ शाह अब्दुर्रहीम‘‘जुनूबी अफ़रीक़ा’’राजा ज़ोर आवर‘‘पालनपुर’’सै० अहमद‘‘कल आबन’’सैयद ख़ासा‘‘बहराइच’’लक्कड़ शाह‘‘बहराइच मोतीपुर’’झक्कड़ शाह‘‘बहराइच’’ फक्कड़ शाह‘‘बहराइच’’असलम ग़ाज़ी असफ़हानी‘‘गुलरॉं शरीफ’’सै० सालार साहू ‘‘मदायन’’शाह राजे‘‘दिल्ली’’सैयद ख़ाने आलम मियॉं जाफ़री‘‘गुड़ गॉव’’सद्र उद्दीन ‘‘ईगतपुरी’’ अब्दुल ग़नी ‘‘नासिक’’ सुल्तान शाह ‘‘नासिक’’ दलील शाह ‘‘नासिक’’ मुहम्मद ग़ज़नवी‘‘ज़फ़राबाद’’शेख़ मुहम्मद करम‘‘मण्डवा’’बाबा मान दरियायी ‘‘बड़ौदा’’शाह अता उल्लाह‘‘किन्तूर’’ख़्वाजा गुलाम बदी उद्दीन‘‘किन्तूर’’मुज़फ़्फ़र हब्शी‘‘कलकत्ता’’क़ाज़ी सैयद अहमद‘‘मनहोना अवध’’क़ादिर अली शाह सत्तारी ‘‘शर्फ़ाबाद’’ सैयद शम्स उद्दीन‘‘उदयपुर’’सैयद नज्म उद्दीन‘‘उदयपुर’’मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती‘‘मानकपुर’’यूसुफ़ औतार‘‘बुख़ारा’’ सैयद ताहिर‘‘अरब’’ शाह अब्दुल अज़ीज़ शेरी‘‘माल्वा’’ इस्माइल ख़िल्जी बिन सैयद दाउद‘‘सीसतान’’ हाजी अब्दुल नज्म सालिक‘‘नेशापुर’’महमूदशेरी बिन ख़्वाजा ग़यासउददीन‘‘बर्मा’’ साबिर मुल्तानी उर्फ़ शाह बुद्धन‘‘गोरखपुर’’शाह फ़ज़्लुल्लाह बदख़्शानी‘‘सितारा’’ शेख़ नसीर उद्दीन शीराज़ी‘‘कोह हिमालय’’ शेख़ सुलेमान यमनी‘‘बगरजिस्तान’’ हकीम अहमद मिस्री‘‘तौस’’ अब्दुर्रहमान बिन सैयद अकमल‘‘महमूदाबाद’’अहमद एराज‘‘मुस्त फ़ाबाद’’शाह हयात‘‘पानीपत’’मीर अशरफ़ जहॉंगीर समनानी ‘‘कछोछा शरीफ’’मीर सै० दाउद‘‘केशवराव पाटन’’शेख़ अब्दुल अज़ीज़ मक्की‘‘केशव राव पाटन’’थपली शाह‘‘राम नगर’’ आदम सूफ़ी,शम्स उद्दीन सानी चोबदार,शाह बुद्ध, क़ाज़ी लहरी, क़ाज़ी त्वाहा, मंझले सौदागर, सुल्तान शहबाज़, क़ाज़ी सद्र, मियॉं सैफ़ उल्लाह, शेख़ फ़रीदउद्दीन, क़ाज़ी अहमद, शेख़ फ़रीद उद्दीन ’’काबरी;; शेख़ महमूद ’’मग़रिबी;; सुल्तान हसन’’अर्बी;; हाजी अब्दुर्रहमान बाबा मलंग ’’मुम्बई;; कुतबे ग़ौरी’’कोलार;;शाह अब्दुल ग़फ़ूर बाबा कपूर’’गवालियर;; शाह रिज़्क़ उल्लाह,शाह ख़लीक़उल्लाह वग़ैरहुम .

शाने मदारियत के इमाम

तन के चार इमाम

हज़रत जिब्राईल عليه السلام, हज़रत मीकाईल عليه السلام,
हज़रत इसराफ़ील عليه السلام, हज़रत इज़राईल عليه السلام

हक़ीक़त के चार इमाम

हज़रत आदम عليه السلام सफ़ी उल्लाह, हज़रत मूसा عليه السلام कलीम उल्लाह,
हज़रत इब्राहीम عليه السلام ख़लील उल्लाह, हज़रत मुहम्मद रसूल उल्लाह ﷺ

मुआरफ़त के चार इमाम

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه, हज़रत उमर इब्नुलख़त्ताब رضي الله عنه,
हज़रत उसमान बिन अफ़फान رضي الله عنه, हज़रत अली इब्ने अबी तालिब عليه السلام

तरीक़त के चार इमाम

हज़रत इमाम हसन عليه السلام, हज़रत इमाम हुसैन عليه السلام,
हज़रत अकमल बिन ज़्याद رضي الله عنه, हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه

शरीअत के चार इमाम

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رضي الله عنه, हज़रत इमाम मालिक رضي الله عنه,
हज़रत इमाम शाफ़ई رضي الله عنه, हज़रत इमाम अहमद हम्बल رضي الله عنه

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की गै़र मामूली मक़बूलियत का बययन सुबूत

नामो लक़ब से मंसूब मुक़ामात के नाम जैसे मदारपुर, मदारपुरा, मदारीपुर, मदार खेड़ा, मदार चिल्ला, मदार टीकरी, मदार पहाड़ी, मदार बस्ती, मदार पाड़ा, मदार बाड़ी, मदार गेट, मदार डेरा,मदार कोट, मदार घाट, मदार पीठ, पीरूमदारा, दरबारे शाह मदार, शाहे ज़िन्दाँ, मदारस, मदारन वग़ैरह नूरपुर, नूरगंज, नूरबाड़ी, नूरकोट, नूरखेड़ा, नूरानीशाह, ज़िन्दाशाहवली, शाहकोट, हईपुर, शाहपुर, शाहघाट, शाहबन्दर, शाहगंज, शाहजमाल, जमालगंज, जमालखेड़ा, ज़्यारत दादा मदार, दाता मदार, दाता जमाल, दादा हयात, शाहवाला, दादा पीर, पीरू मदारा, पीर बहोड़ा वग़ैरह

मदार के नाम पर लोगों के नाम जैसे बदीउज़्ज़माँ, बदीउल मदार,बदीउल हसन, बदीउर्रहमान, बदीउल हक़, अज़मतुल मदार, ख़िदमतुल मदार, नूरुल मदार, मदार बख़्श, मदारी लाल,मदारू, मदार वाला, मदारी शाह, शफ़ीकुल मदार, अच्छे मदार, मीठे मदार वग़ैरह

चन्द ज़र्बुल मिसाल पर तायराना नज़र

मरे को मारें शाहमदार:- यह मिसाल ज़बान ज़द ख़ासो आम है इससे मुराद हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ﷺ को यह कुदरत हासिल थी कि वह काफ़िर को कुफ़्र से निकाल कर फ़ना के मुक़ाम पर पहुँचा देते थे आरै जो सूफ़ी मर्तबय फ़ना में होते थे उनको इस मुक़ाम से निकाल कर मर्तबय फ़ना अलफ़ना में पहुँचा देते थे फिर इस से निकाल कर बक़ाबिल्लाह अता फ़रमा देते फिर तानियात और तानियात से निकाल कर लातईन के मुक़ाम पर फ़ायज़ फ़रमा देते।

गंगा मदार का साथ क्या? यह मिसाल अवाम में सबसे ज़्यादा मक़बूल हुयी क्यूँ कि हज़रत बदी उद्दीन कुतबुल मदार ﷺ की आफ़ाक़ी तालीमात हुज़ूर अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ की सीरतो किरदार के मुताबिक़ कुरान पर मबनी थी जब कि गंगा से जुड़ी हुई कहानियाँ कुफ़्र पर मबनी हैं।

दम मदार बेड़ा पार :- इससे मुराद हज़रत मदारुलआलमीन ﷺ से मदद तलब करना है।

बर दोशे मदार अर्शे आज़म पर गया परवरदिगार

यह मिसाल भी फुक़रा की जमाअत में ख़ूब मक़बूल है इनका दावा है कि नफ़ी असबात का तरीक़ा सबसे पहले हज़रत बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार ﷺ ने रायज किया । हदीसे मुक़द्दसा है क़ल्बे मोमिन अर्शुल्लाह "मोमिन का क़ल्ब अल्लाह का अर्श है" लिहाज़ा कुतबुल मदार ﷺ ने जबीं को नाफ़ की तरफ़ ख़ुम करके "ला" को बयक साँस मुक़ामे सिर को मुक़ामे रूह की मंज़िल तय कराते हुए दाहिने शाने से गुज़ारते हुए "इलाह" को मुक़ामे ख़फ़ी से मुक़ामे अख़फ़ी तक लाए फिर "इल्लल्लाह" की ज़र्ब क़ल्ब पर लगायी। यानी "ला" को नाफ़ से उठाया "इलाह" को दोशों से गुज़ारते हुए "इल्लल्लाह" को क़ल्ब, अर्शे आज़मद्ध तक पहुँचाया। फिर यह तरीक़ा नफ़ी असबात का बाक़ायदा सिलसिलय आलिया मदारिया में रायज हो गया और दूसरे सलासिल के बुज़ुर्गों ने भी इसको पसन्द किया और यह मिसाल क़ायम हो गयी।

मदार की कश्ती हदीसे मुक़द्दसा है

يا ايهّاالناس!انى تركت فيكم ما ان اخذ تم بهٖ لن تضلوا كتاب الله و عترنى أهل بيتى

ऐ लोगो! मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ एक अल्लाह की किताब और दूसरे अपने अहले बैत। और एक जगह इरशाद फ़रमाया;

مثل اهل بيتى كسفينة نوح मेरे अहले बैत नूह की कश्ती की मानिन्द हैं और कुतबुल मदार ﷺ के लिये सल्फ़े स्वालेहीन फ़रमाते हैं,"

ان المدار مصباح الهدىٰ و سفينة النجات मदार हिदायत के चराग़ और निजात की कश्ती हैं। मकनपुर शरीफ़ का "शग़्ले दम्माल" इन अहादीस के एलान की ताईद के लिये हर साल इस अम्र को दोहराता है अव्वल "कष्ती" जिसमें कुरआने करीम रखा होता है जिसे अम्बूहे इंसॉं, इंसानों के सैलाब से गुज़ार कर कश्तिय नूह की मिस्ल दूसरे "अहले बैत" की नस्ल पाक से सज्जादा नशीन को तख़्त नशीन करके सताइश बयान करते हुए। जिनके रू ब रू "मलंगाने ज़ीशान" फ़रहतो मसर्रत और मुहब्बत में दमल करते हुए उस अहद की यादगार का डंका बजाते हैं और नक़ीब एलान करता है कि अगर इन दोना कुरआन और अहले बैत से जुड़े रहे तो गुमराह न होगे।

मदारुल आलमीन

जिस तरह रब्बुल आलमीन ने अपने महबूब ﷺ को रहमतल्लिल आलमीन से ख़िताब फ़रमाकर तमाम अम्बिया عليهم السلام में अफ़ज़लियत बख़्शी ठीक इसी तरह रहमतल्लिल आलमी ﷺ ने अपने चहीते हज़रत बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दाने सौफ़ को मदारुल आलमीन से ख़िताब फ़रमाकर तमाम औलिया अल्लाह में मुमताज़ क़रार दिया। सरवरे कायनात ﷺ ने आलमे मीसाल में बदी उद्दीन अहमद رضي الله عنه को 9 लुक़्मे शीर व ब्रंज के खिलाये जिसमें आलमों का मदार ठहरा कर मदारुल आलमीन का ख़िताब इनायत फ़रमाया मसलन-पहला लुक़्मा खिलाया तो आलमे नासूत का मदार ठहराया-दूसरा लुक़्मा खिलाया तो आलमे मलकूत का मदार ठहराया-तीसरा खिलाया तो आलमे जबरूत का मदार ठहराया-चौथे से आलमे लाहूत का- पॉंचवें से आलमे हाहूत का-छटे से आलमे बाहूत का-सातवें से आलमेसियाहूत का-

आठवें से आलमे महमूद शाही का और नवें लुक्मे से आलमे नसीर अनाक का मदार ठहरा कर मदारुल आलमीन का ख़िताब इनायत फ़रमाया।

ख़ानक़ाहे क़ुतबुल मदार का तामीरी जायज़ा

इस्लामी तहज़ीब का तारीख़ी मर्कज़ ''दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़'' ब लिहाज़े कमालाते फ़ज़्ले यज़दानी ''मक्का'' कमालाते रहमानी ''मदीना'' कमालाते इल्मी ''शीराज़'' के मिस्ल है जो क़दीम रवायात का आईनादार है चूँ कि मकनपुर शरीफ़ हमेशा से हर मज़हबो मिल्लत का मर्कज़ रहा है इस लिये इस मुक़द्दस मुक़ाम पर बे शुमार औलिया अल्लाह ने अपने सर ख़ुम किये, ख़ुश नसीब बादशाहों, राजा, महा राजा और नव्वाबीन ने अक़ीदतें पेश कीं और ख़ानक़ाह शरीफ़ की तामीर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

आस्ताने शरीफ़ की शान इस रवायत की मुस्दाक़ है कि इस मुक़ाम पर तालाब था क्यूँ कि आस्ताने शरीफ़ की सतह क़स्बे की सतह से 10 /12 फ़ुट नीची है। आस्ताने शरीफ़ की आमदो रफ़त के लिये 5 बलन्द फाटक और 4 दर्वाज़े हैं 2 फाटक 2 दर्वाज़े जुनूब में 2 फाटक 1 दर्वाज़ा शुमाल में और 1 फाटक 1 दर्वाज़ा मशरिक़ सिम्त पर है। आस्ताने शरीफ़ को 7 हिस्सों में तक़सीम किया गया हैजो 7 ''हरमों'' के नाम से मौसूम हैं।

हरमे अव्वलः- इस हरम शरीफ़ में क़ाबिले ज़िक्र रौज़ह शरीफ़ और तुरबते अक़दस है। रौज़ह शरीफ़ 30.50 मुरब्बा फ़ुट पत्थर की चौकोर इमारत है जिसे ''इब्राहीम शर्क़ी'' शहन्शाह जौनपुर ने सन् 1417 ई० में तामीर कराया था। इस पर 5 सुन्हरे कलस हैं। गुम्बद वाला कलस सोने का है जिसे मक्कन सरबाज़

मदारी रह० ने नज़्र किया था। इस पर टाइल का काम हाजी मज़हर उद्दीन गुरसहाय गंज ने सन् 1990 ई० में कराया था इब्राहीम शर्क़ी का नज़्र करदा ताँबे का कलस शोरूम में महफ़ूज है इस पर गुलपोशी के लिये 6 जमादिउल मदार को मख़सूस हज़रात रोज़ा रख कर चढ़ते हैं। रौज़ह शरीफ़ के ऊपर से परिन्दे नहीं गुज़रते और जब किसी परिन्दे या कबूतर को बैठे देखा गया तो यह निशानी अहले मकनपुर शरीफ़ पर मुसीबत के पहाड़ टूट ने की है अक्सर ऐसा ही हुआ है। मक़बरा शरीफ़ के चारो तरफ़ औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह की नज़्र करदासंग मरमर की जालियाँ नसब हैं इसमें आमदो रफ़्त के लिये जुनूबी जाली के नीचे एक तंग खिड़की है इस पर टायल का काम मकराने वाली अम्मा ने कराया है यह काम हाजी बाबू शाह मकराना की देख रेख में हुआ। रौज़ेह शरीफ़ की ख़ूबी यह है कि इसका साया ज़मीन पर नहीं पड़ता। इसी में मदारुल आलमीन ﵁ आराम फ़रमा हैं। आपकी तुरबते अक़्दस को हमा वक़्त 2 सादा और 5 रेशमी ग़िलाफ़ छुपाये रहते हैं। तुरबत तक़रीबन 2.50 फुट ऊँची और 9 फुट लम्बी है हर नीचे वाला ग़िलाफ़ अपने ऊपर वाले ग़िलाफ़ से इतना बड़ा होता है के नीचे ग़िलाफ़ों के सिर्फ़ कोने ही दिखाई देते हैं। नीचे के दोनो ग़िलाफ़ इस तरह बदले जाते हैं कि दो हज़रात पड़े हुए ग़िलाफ़ के सर हाने वाले दोनो कोने पकड़ते हैं और दो हज़रात बदले जाने वाले ग़िलाफ़ के साथ पड़े हुए ग़िलाफ़ के कोने पकड़ कर आगे की तरफ़ बढ़ जाते हैं इस तरह कि बिना इसके कि मज़ारे अक़दस खुले दोनो ग़िलाफ़ बदल जाते हैं। इस पर 5 ज़र्रीं चादरें चढ़ाकर उनके चारों सिरों पर संग मर मर के वज़्न रख दिये जाते हैं। मज़कूरा रोज़ादार हज़रात तुरबत की तरफ़ बग़ैर पीठ किये बाहर निकल आते हैं।

हरमे दोम :- जिसे दारुल अमान कहते हैं जिस अहाते में रौज़ह शरीफ़ है उसे हरमे दोम कहते हैं इसमें गाना,बजाना,पका हुआ खाना,रौशनी और मस्तूरात का जाना ममनू है। यह पुख़्ता फ़र्श का 90 फुट चौकोर 120 फुट संगीन चहार दीवारी से महदूद है यह इब्राहीम शर्की शाह जौनपुर की तामीर कर्दा है इसके फ़र्श की नव तामीर 1985 ई० में उत्तर प्रदेश के साबिक़ वज़ीरे आला जनाब नारायन दत्त तिवारी ने करवायी थी और इस पर टायल का काम मुहम्मदआरिफ़ महमूद नगर हैदराबाद ब मुनसलिक सैयद तकबीर अहमद मदारी ने कराया है।

इसमें 2 फाटक और 1 दरवाज़ा है। जिसे जन्नती दर्वाज़ा कहते हैं साल में एक मर्तबा 17 जमादिउल मदार को खुलता है। सल्फ़े स्वालेहीन ने इस से दाख़िल होने वालों के लिये निजात का दावा किया है। अहाते के मग़रिबी फाटक पर दो छोटी मीनारें हैं और नीचे लम्बी सी ज़ंजीर लटकी हुयी है जिसमें लोग गॉठ लगा कर अपनी मन्नत मानते हैं और पूरी होने पर गॉठ खोलते हैं अहाते का जुनूबी फाटक मिस्टर हियर्ट सन कलक्टर कानपुर 1876 ई० की अक़ीदत मन्दी का शाहिद है। 1923 ई० में मिस्टर गिले साहब कलक्टर कानपुर ने इस फाटक पर एक दीदा ज़ेब बराम्दा तामीर कराया इन दोनों फाटकों की निकास हरमे सोम में है।

हरमे सोमः- इस हरम शरीफ़ में आमदो रफ़्त के लिये **2** फ़ाटक और **2** दर्वाज़े हैं एक फाटक जुनूबी दीवार में पुश्त ख़ाना के नाम से मौसूम है इस फाटक के शर्क़ी पहलू में शेख़ रहमत अली ख़ॉ बरेल्वी का बनवाया हुआ दालान है इसको आइने वाला दालान कहते हैं इसमें कलस की ज़्यारत के लिये ''आइना'' लगा हुआ था अब इस के आगे टिन पड़े हुए हैं ये आहनी सायबान मोल्वी सैयद अली शिकोह रह० के नज़्र कर्दा है इसके शर्क़ी पहलू में **2** मंज़िला इमारत संजूबाबा सिंधी **2009** में तामीर कराया हैं। मग़रिबी दीवार में दरवाज़े और बलन्द फाटक है इसी दीवार में रौशनी के लिये छोटे छोटे गुलदस्ते नुमा ताक़चे हैं जिन्हें ''मेंहदियॉं'' कहते हैं फाटक पुश्त ख़ाना के मग़रिबी पहलू में संगीन दालान ''जमीअत ख़ाना'' है जिसे नवाब दलेल ख़ॉ ने **1627** ई० में तामीर कराया था। इस के दोनों सिरों पर हुजरे हैं। शर्क़ी हुजरे को ''तौश ख़ाना'' और मग़रिबी हुजरे को ''सुलह ख़ाना'' कहते हैं। इसके आगे बरामदे की तामीर शेख़ मुहम्मद इस्हाक़ नासिक ने बज़रिये हाजी सैयद फ़ीरोज़ अख़्तर कराया है। सुलह ख़ाना से मिली हुई शुमाल में ''शाहजहानी मस्जिद'' है। जिसे **1603** ई० में दौलत ख़ॉ रुक्न दर्बार देहली ने तामीर कराया था। इसी से मिला हुआ संगीन फाटक है जिसे'' दारुल अमान'' कहते हैं और इसी फाटक के शुमाल में मिला हुआ एक संगीन दालान है इसे''कुरआन ख़्वानी वाला दालान''कहते हैं इसको मचल लाल पुत्तू लाल खत्री ने तामीर कराया था इसका दर्वाज़ा **1794** ई० में खोला गया था इस दालान में आज भी ''शाह ब्रादरी '' की पंचायत होती है।

इस दीवार के आख़िरी हिस्से पर ''शोरूम'' है जिसमें आसारे क़दीमा के नादिरात महफ़ूज़ हैं इसकी ज़िम्मेदारी कलीद बरदारी मौलाना अक़दस हुसैन अरगूनी के हिस्से में आई है । इस हरम शरीफ़ में दो आहनी ''चिराग़दान''रखे हुए हैं जिनके काजल को अमराज़े चश्म के लिये लोग इस्तेमाल करते हैं शोरूम से मिला हुआ एक और ज़ेरे तामीर दालान अल्हाज डाक्टर सैयद मुहम्मद मुक़तिदा हुसैन जाफ़री की गिरानी में है।

हरमे चहारुमः-दारुल अमान से बाहर आते ही हम ''पाकर दरबार''में दाख़िल होते हैं यह हरमे चहारुम है पाकर के बूढ़े दरख़्त की वजह से इस हरम को पाकर दरबार कहते हैं । इसके शुमाली सिरे पर ''कुतुब फाटक''है इससे बाहर निकलें तो षर्क़ी कोने पर ''बरहना पीर'' के चबूतरे पर ख़ानक़ाह शरीफ़ की सफ़ाई सुथराई के लिये और ज़ायरीने दरगाह के वज़ू के लिये एक पानी की टंकी है जिसको हसबुल हुक्म मुहम्मद मुजीबुल बाक़ी अरगूनी मदारी-मुहम्मद तौक़ीर खाँ गया बिहार ने **2001** में तामीर कराया फाटक के बाहर क़ाबिले ज़िक्र ''ज्योति कुआँ'' है मुस्तनद अहले सैर, मोअतबर अहले मकनपुर शरीफ़ बयान फ़रमाते हैं बल्कि राक़िमुल हुरूफ़ ने ख़ुद **1979** में मुशाहिदा किया है कि मदीने की जानिब से एक नूर का सुतून आकर रौज़ह कुतबुलमदार पर ठहर गया यही नूर सिमट कर कुएं में चला जाता है ।

कुतुब फाटक के क़रीब मग़रिबी सिरे के अन्दुरूनी हिस्से में एक दालान से सटा हुआ हज़रत अल अव्वल शाह का मक़बरा है फिर बड़ा संगीन दालान है जिसे बादशाह शाह आलम ने बनवाया था इसके क़रीब वह कोठरी है जिसमें ''तहख़ाना'' है इसे''ख़ज़ाना''कहते हैं इससे मिला हुआ आहनी''सौदागर फाटक'' है और फाटक से मिली हुयी ''मियाँ जी तालिब'' की मस्जिद है इसे ''क़ाज़ी मुतहर कल्लाह षेर'' की कोठरी भी कहते हैं। पाकर दरबार की जुनूबी दीवार में जालियाँ नसब हैं लोग इनसे ख़्वाजा सैयद मुहम्मद अरगून जानशीने कुतबुलमदार रह० के मज़ारे अक़दस की ज़्यारत करते हैं। शर्क़ी दीवार में जो दालान है वह ''वारसी दालान'' कहलाता है। हज़रत वारिस अली शाह रह० ने इसी दालान में बारह बरस गुज़ारे थे। आज भी वारसी इसी दालान में ठहरते हैं। हरमे दोम, सोम और चहारुम में अक्सर अजिन्ना की बड़ी तादाद देखी गयी है अक्सर

जिननात कुत्ते,बिल्ली,सॉंप की शक्ल में देखे जाते रहे हैं इसलिये मुजाविर इनको कुत्ते की शक्ल में देख कर धत न कहकर अदब अदब की आवाज़ निकालते हैं। ताकि अदब क़ायम रहे।

हरमे पंजुम :- सौदागर फाटक से निकलें तो हरमे पंजुम में आ जाते हैं इसे ''दम्माल ख़ाना'' भी कहते हैं चूँकि उर्स शरीफ़ के मौक़े पर मलंग हज़रात अपने शेख़ के रूबरू शग़्ले दम्माल करते हैं बईं सबब यह दम्माल ख़ाना कहलाता है। इसकी तमाम तामीरात अपने बानी बादशाह औरंग ज़ेब आलमगीर को ख़िराजे अक़ीदत पेश कर रही हैं। सौदागर फाटक के पहलू में संगीन दालान ''पेश ताक़'' के नाम से मौसूम है। इसके आगे संग मर मर का बड़ा सा टुकड़ा पड़ा हुआ है यह औरंगज़ेब तुरबत में लगाने के लिये लाये थे इजाज़त न मिलने की वजह से यह पड़ा रह गया लोग इस को मुख़तलिफ़ अमराज़ के लिये घिस कर ले जाते हैं। पेश ताक़ से मिला हुआ एक दालान और इसके शुमाली सिरे पर कोठरी है। दालान के सामने कुआ, महाराजा ग्वालियार और दबीरुल मुल्क मुंशी टिकैत राय अवध की नज़्र करदा डेगें रखी हुई हैं तॉबे वाली डेग में 8 कुन्तल चावल पकते हैं उर्स शरीफ़ के मौक़े पर इसमें ख़ीर बनाकर तक़सीम की जाती है। दम्माल शरीफ़ की शुमाली दीवार में संगीन वसी दालान है जिसके दोनों सिरों पर कोठरियॉं हैं। इसको ''मदर्सय रूहुल अमीन'' भी कहते हैं। मदर्ससय रूहुल अमीन से मिला हुआ अजीमुश्शान फाटक है जिस से बाहर निकलते ही ''बादशाही कुऑं'' है फाटक के मग़रिबी सिरे पर एक और दालान है और दालान के सामने''बारह दरी'' है जिसको अलमास अली ख़ॉं राजा भागमल के भॉंजे ने तामीर कराया था। दम्माल शरीफ़ के अज़ीमुश्शान जुनूबी फाटक के शर्क़ी सिरे पर एक संगीन दालान में ख़ानक़ाह शरीफ़ का घण्टा है जो आज भी हमारे क़ीमती वक़्त का एहसास दिलाता है इसके चबूतरे पर नक़्क़ारा रखा हुआ है।

हरमे शशुम :- हरमे शशुम में ''मस्जिदे आलम गीरी'' है जिसे जुमा मस्जिद भी कहते हैं लाल पत्थर की बनी आलीशान मस्जिद की जुनूबी और शुमाली दीवारों में संगीन दालान हुजरों के साथ बने हुए हैं इसमें 5 बलन्द आहनी दर हैं। उसी ऐतबार से इसकी तौसी नई तामीरात के ज़रिये हुयी है सहने मस्जिद में 35 फुट चौकोर एक ख़ुशनुमा हौज़ था जिसके दर्मियान दिलकश फ़व्वारा था मस्जिद के शुमाली कोने पर अंकी नुमा मीनार है जिसे शाह बनी पनाह मदारी

ने तामीर कराया है इस मस्जिद में तक़रीबन 5000 से ज़ाएद नमाज़ी बयक वक़्त नमाज़ अदा कर सकते हैं ।

हरमे हफ़्तुमः- हरमे हफ़्तुम में पहुँचने के लिये जन्नती दरवो की निकास पर पहुँचना होगा इस से निकलते ही एक शिकस्ता मस्जिद है 7वाँ हरम दूसरे हरम की जुनूबी दीवार से मिला हुआ है ये जुनूबी और शर्क़ी दो दीवारों पर ही मुहीत है इसकी शर्क़ी दीवार में एक दर्वाज़ा लगा हुआ है इसमें क़ब्रों के सिवा कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ नहीं है। अलबत्ता दम्माल शरीफ़ के जुनूबी फाटक से बाहर निकलें तो मग़रिबी पहलू पर "मदार मुसाफ़िर ख़ाना" है। जिसमें कई हज़ार लोग एक साथ क़याम कर सकते हैं इस फाटक के शर्क़ी पहलू पर नासिरुल इस्लाम मौलाना अल्हाज मुहम्मद नबी हसन जाफ़री अरगूनी तबक़ाती मदारी रह० का आस्ताने मुक़द्दस है। इसके क़रीब दादा अली शेर काज़ी लहरी रह० ख़लीफ़ा कुतबुलमदार का पुर कैफ़ मक़बरा है और इसके बाद जानशीने कुतबुल मदार ख़्वाजा सैयद मुहम्मद अरगून रह० का पुर नूरो पुर वक़ार आस्ताने मुबारक है आस्ताने शरीफ़ के सामने जो जगह पड़ी हुयी है उसे दादा का पेट कहते हैं उर्स शरीफ़ के मौक़े पर इस पर भी "शग़्ले दम्माल"होता है। यहीं पर मुहम्मद ख़्वाजा अबुल फ़ायज रह० भी आराम फ़रमा हैं। आस्ताने अबू मुहम्मद अरगून रह० से मिली हुई चहार दीवारी में बेशुमार मुशाहीर बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात है जिन मे "कमण्डी शाह" जैसे बाकमाल बुज़ुर्ग भी मौजूद हैं। इस चहार दीवारी से मिला हुआ "बाबा लाड दरबारी रह०"का मक़बरा है जिससे फ़ैज़ के चश्मे फूट रहे हैं। आस्ताने ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० के जुनूब में तक़रीबन 50 मीटर की दूरी पर आस्ताने अबू तुराब फ़न्सूर व अबुल हसन तैफ़ूर रह० का मक़बरा है इसका दीदाज़ेब बलन्द फाटक अपनी मिसाल आप है इस पर पत्थर का काम मकराने वाली अम्मा ने कराया है इसके मग़रिब की तरफ़ जामय अर्बिया मदारुल उलूम मदीनतुल औलिया मकनपुर शरीफ़ की अज़ीमुशशान इमारत है जिसमें कुरआनो हदीस फ़िकाह वग़ैरह के अलावा असरी तालीम का भी माकूल इन्तिज़ाम है।

इसके अलावा इस ख़ूबसूरत क़स्बे में 72 मुहल्ले, आबाद व ग़ैर आबाद तक़रीबन 104 मसाजिद, तक़रीबन 12 ख़ूबसूरत दीदाज़ेब मक़बरे 255 कुए, नील की कोठी के खण्डरात, मेन बाज़ार, चिकना महल, दरियाय यासीन और ईसन पर बना पुल वग़ैरह ख़ास हैं।

पहली जंगे आज़ादी और मकनपुर शरीफ़

इस वक़्त जबकि हम अपनी आज़ादी की सिलवर जुब्ली मना रहे हैं, उन कुर्बानियों को याद कर रहे हैं जो हमारे रहनुमाओं ने इस मुल्क को ग़ैर मुल्की तसल्लुद से आज़ाद कराने के लिये दी थीं इस तवील जद्दो जेहद को याद कर रहे हैं जो इस मुल्क के सभी तबक़ों और फ़िरक़ों ने मिल कर की थी जो हुसूले आज़ादी की राह में जेहदे मुसलसल और बे मिस्ल कुर्बानियों की एक शान्दार तारीख़ के अमीन हैं।

मगर अफ़सोस कि जिन अफ़राद ने अपने वतने अज़ीज़ की ग़ुलामी की जंजीरों को काटने के लिये अपने सीनों पर गोलियाँ खायीं और हंस्ते हंस्ते फॉसी के फन्दों को अपने गलों में पहन लिया अपना तन मन धन सब कुर्बान कर दिया उनको मफ़ाद परस्त सियासतदानों और तारीख़ नवीसों ने फ़रामोश करने की ही कोशिश नहीं की बल्कि इन हक़ परस्त मुजाहेदीने आज़ादी की ख़िदमात और कुरबानियों को ग़लत तरीक़े से पेश करके बाज़ को ग़द्दार तक की फ़ेहरिस्त में लाकर खड़ा करदिया और जो लोग सिर्फ़ साहिल से तूफ़ान का नज़्ज़ारा कर रहे थे या बक़ौल परवाना रुदौल्वी के''आज़ादी की अहमियत को कुरबानी की धार पर नहीं परख रहे थे बल्कि माद्दी नफ़ा नुक़सान की तराज़ू में तोल रहे थे'' यहाँ तक कि बाज़ जो चोरी, डकैती, गुण्डागर्दी करते हुए पकड़े गये और जेलों में डाल दिये गये थे उनको देश भक्ती के ताक़ों औ हुर्रियत पसन्दी के शह नशीनों की ज़ीनत बना दिया गया।''

मगर तारीख़ कभी नहीं मरती । आइये ! तारीख़ की ऐसी ही तहों को खोलते हैं जिसको जान बूझ कर छुपाने की कोशिश की गयी है और तारीख़े हिन्द की किताबों से दूर रखा गया है । मैं शुक्र गुज़ार हूँ नयी दुनिया हफ़्त रोज़ा दिल्ली **16** ता **22** अगस्त **1994** ई० का और उत्तर प्रदेश नेशनल चैनल का जिन्हों ने''जाग उठा किसान'' और ''मजनूँ षाह''जैसे सीरियल दिखा कर अवाम को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि **1857** की ''ग़दर'' ही अज़ीम हिन्दुस्तान की पहली जंगे आज़ादी नहीं है बल्कि इस ग़दर से बहुत पहले **1763** ई० में ही अंग्रेज़ों के तसल्लुत के ख़िलाफ़ आज़ादी के शोले भड़क उठे थे।

हिस्ट्री ऑफ़ द फ़्रीडम मूमेंट ऑफ़ इण्डिया वैल्यूम टोटा टारचर्ड **1967** ई० एडीशन घोष जे० एम० संयासी एण्ड फ़क़ीरैन बंगाल कलकत्ता **1930** सफ़ह **10** वग़ैरह की औराक़ गर्दानी से पता चलता है कि ज़ालिम अंग्रेज़ों के तसल्लुत के ख़िलाफ़ सबसे पहले ''बाबा मजनू शाह'' ने अलमे बग़ावत बुलन्द किया था जो सिलसिलय आलिया मदारिया के मशहूर गिरोह ''मलंगान''से ताल्लुक़ रखते थे और जो हिन्दुस्तान के बड़े ख़ित्ते बंगाल,उड़ीसा और बिहार के मुसल्मानों के रूहानी पेशवा थे । जिनसे हिन्दू भी बे पनाह अक़ीदत रखते थे आगे चलकर इस बग़ावत में ''बाबा भवानी पाठक'' ने इनका भर पूर साथ दिया ये ''साइबा पंथ '' के संनियासियों के रहनुमा थे। .

इस अज़ीम तहरीक के सबसे बड़े क़ायद तो बाबा मजनू शाह थे मगर उनके ख़लीफ़ा ''मूसा'' शाह मदारी, चिराग़ अली शाह मदारी, नूरुल हम्द मदारी,रम्ज़ानी शाह मदारी, ज़हूरी शाह मदारी, सुब्हान अली शाह मदारी,उमूमी शाह मदारी,नेकू शाह मदारी,बुद्धू शाह मदारी, इमाम शाह मदारी,फ़रग़ल शाह मदारी, मुतीउल्लाह मदारी,मेमन सिंह,भवानी पाठक,देवी चौधरानी,कृपा नाथ,पीतम्बर वग़ैरह ने**40–45** बरस तक इस तहरीके आज़ादी को चलाया। मुल्क में इनकी बाक़ायदा और मरबूत तन्ज़ीम न होने के बावुजूद ये फ़क़ीर और संयासी गॉव गॉव जाकर लोगों को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ उकसाते थे। मजनॅू शाह एक ज़बरदस्त तन्ज़ीमी सलाहियत के मालिक थे वह मुश्किल हालात में तो बे मिसाल शुजाअत का मुज़ाहिरा करते थे। उन्हों ने ''मैकनीज़ी '' की ज़ेरे कमान फ़ौज को पय दर पय हज़ी मतों से दोचार किया और **1722** ई० में फ़ैसलाकुन शिकस्त दी। **1769** ई० में ''कमाण्डर कैथ''की फ़ौज को ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त देकर उसका सर क़लम कर लिया। **1771** ई० में मजनॅू शाह ने अपने ''मस्तान गढ़'' के क़िले में मोर्चा बन्दी करके ''लेफ़्टीनेन्टटेलर'' की फ़ौज के छक्के छुड़ा दिये और बाहर निकल गये जहॉ किसानों और दस्तकारों का एक बड़ा लश्कर आपके साथ हो गया वजह यह थी कि दस्तकारों और किसानों को अपना सारा माल अंग्रेज़ सौदागरों के हाथ बेचना पड़ता था वह भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के तय किये हुए दामों पर और और जब किसान अच्छे दामों किसी और के हाथ माल बेचता हुआ पकड़ा जाता तो उसे चाबुकों से मार मार कर जेल में डाल दिया जाता था। लिहाज़ा किसान और दस्तकार मजनॅू शाह की मुहीम में शामिल हो गये। आपने

नाटूर की रानी ''भवानी'' को भी मुहिम में शामिल होने की दावत दी मगर रानी भवानी ने साथ देने से इन्कार कर दिया फिर भी आप मायूस नहीं हुए और जिहाद जारी रखा। वसायल की क़िल्लत के बावुजूद **14** नवम्बर **1776** ई० को फ़िरंगियों को एक और ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त दी जिसमें''लेफ़टीनेन्ट राबर्टसन'' शदीद तौर पर मजरूह हुआ। इसी दौरान अंग्रेज़ों ने फ़क़ीरों और संयासियों के दर्मियान मज़हबी तास्सुब को हवा देकर फूट डाल दी जिसके नतीजे में बंकिम चन्द्र चटरजी का नाविल ''आनन्द मठ'' सामने आया इसकी ख़ौफ़ नाक सूरते हाल यह है कि इस नाविल में आज़ादी के इस दीवाने मजनूँ शाह और उनके साथियों को बरबरियत का पैकर बताकर अंग्रेज़ों से मुहब्बत और मुसल्मानों से नफ़रत का खुल्लम खुल्ला इज़हार किया गया है। रूदे कौसर के मुसन्निफ़ शेख़ मुहम्मद इकराम भी इस नाविल की पुरफ़रेब इबारतों में उलझ कर गुमराह हो गये। इख़्तिलाफ़ात इतने बढ़े कि बाबा मजनूँ शाह की तहरीक मांद पड़ने लगी और संगीन ख़तरात पैदा हो गये यहाँ तक कि उनको अपनों से भी ख़तरा महसूस होने लगा। हम वतनों के इन इख़्तिलाफ़ात को ख़त्म करने और बाहमी इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ को दोबारा हासिल करने के लिये मजनूँ शाह ने पूरे शुमाली बंगाल पुरनियाँ से जमालपुर तक का दौरा किया और मुजाहिदीन की अज़ सरे नौ सफ़ बन्दी की और छापा मार तरीक़े को बेहतर समझा। अचानक किसी इलाक़े में नमूदार होते और फ़िरंगियों पर टूट पड़ते। **1786** ज़िला बागोरा के एक गाँव मोंगरा में आप अचानक नमूदार हुए और ''लेफ़टीनेन्ट बरीनान'' की फ़ौज पर इतना ज़बरदस्त हमला किया कि अंग्रेज़ फ़ौज के पाँव उखड़ गये और इसी जंग में मजनूँ शाह शदीद तौर पर ज़ख़्मी हो गये और ज़ख़्मों से चूर मकनपुर शरीफ़ चले आये और अपनी गढ़ी में क़याम किया मगर ऐसी हालत में भी मजनूँ शाह को मकनपुर शरीफ़ में आबाद अंग्रेज़ों का वुजूद ठंडी आँखों नहीं भाया और उन्होंने ''मैक्स वेल ब्रादर्स'' के एक भाई ''पीटर मैक्सवेल'' को दुनिया से रुख़सत कर दिया।

जब यह ख़बर अंग्रेज़ हुकूमत को लगी तो उसके सिपाहियों ने हज़रत रूहुल आज़म मियाँ जाफ़री, हज़रत नत्था मियाँ जाफ़री और उनके साथियों को लाइन में खड़ा करके गोलियों से भून दिया हज़रत बाँगी मियाँ जाफ़री और उनके साथियों को काले पानी की सज़ा देकर अण्डमान भेज दिया लेकिन मजनूं शाह

इस मर्तबा भी बच गये।

मजनूँ शाह को मुजाहिदे आज़म हज़रत ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री की सर परस्ती हासिल थी जो **36** मवाज़ेआत के ज़मींदार थे उनकी हवेलियों और क़िले में किसी बड़े बादशाह का जैसा निज़ाम था। हाथी,घोड़े,सैकड़ों नौकर थे हर वक़्त चहल पहल रहती थी। चूँकि इस फ़ौजी एक्शन के वक्त ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री अपने अज़ीज़ दोस्त <u>पेशवा बाजी राव बिठूर</u> के यहाँ महमान थे इसलिये उनका नुक़सान कम हुआ।

1787 ई० में मजनूँ शाह दुनिया से कूच कर गये मगर उनकी मुहिम बरक़ार रही। उधर मूसा शाह मलंग, देवी चौधरानी, चिराग़अली शाह मलंग, वग़ैरह ने फ़िरंगियों पर हमलों में शिद्दत पैदा कर दी। इधर हज़रत ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री और मुजाहिदे आज़ादी पेशवा बाजी राव के दर्मियान होने वाली ख़तो किताबत के राब्ते की ख़बर फ़िरंगियों के कानों तक पहुँचा दी गयी। यह गद्दारी तज़ीम उद्दीन, छेदा मेमार, आज़म मेमार और झब्बू ग़ुलाम वग़ैरह ने अपने ज़ाती मफ़ाद के लिये की और अंग्रेज़ो से इनाम हासिल किया।

अलग़रज़ **1817** ई० में अंग्रेज़ फ़ौज ने ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री की हवेलियों का मुहासरा करके आप के घर के **26** अफ़्राद को हथनी इमली पर फ़ाँसी दे दी। इस अचानक के हमले में ख़ाने आलम मियाँ ज़ख्मीं हो गये और अपनी तेज़ रौ घोड़ी पर सवार होकर पहले पेशवा बाजी राव के पास फिर रातो रात गुड़ गाँव इलाक़ा अलवर पहुँचे जहाँ वह वासिले बेहक़ हुए। ;मज़ारे मुबारक गुड़गाँव में मर्जय ख़ासो आम है आपके दो साहब ज़ादे इनाम रसूल जाफ़री और अताए रसूल जाफ़री फ़िरंगियों के हमले के वक़्त अपने क़िले में थे इसलिए बच गये और तीसरे साहबज़ादे फ़िदाए रसूल जिनकी उम्र **9—10**बरस की रही होगी एक वफ़ादार हिन्दू नौकर उनको लेकर भागने में कामयाब हो गया और इस इजतेमाई ख़ूँरेज़ी से बचकर लंबी मुसाफ़त तय करके कलकत्ता पहुँचे राह में हिन्दू नौकर ने दम तोड़ दिया। फ़िदाए रसूल जाफ़री भी मसायबो आलाम से दोचार रोते रोते उसकी लाष के पास बेहोश हो गये।

डॉक्टर क्लाक पाइन जो सिविल अस्पताल कलकत्ता के सिविल सार्जन थे ला वलद थे उन्हें अपने घर उठा ले गये। उनकी तालीमो तरबियत और ख़ुर्दो नोश के लिये दो मुसल्मान मीर शाकिर अली और मीर करम अली को तायनात कर

दिया। **1839** ई० में डाक्टर क्लाकपाइन दुनिया से रुख़सत हो गये और आप लखनऊ चले आये यहाँ नसीर उद्दीन हैदर बर सरे इक़्तिदार थे उनके इसरार पर आपने किताब "मुफ़ीदुल अजसाम" लिखी जो यूनान में आज भी चलती है और जिसमें उन्हों ने मुन्दर्जा बाला हालात का भी तज़किरा किया है। कुछ अर्से लखनऊ में क़याम के बाद आप मकनपुर शरीफ़ चले आये सब कुछ बरबाद हो चुका था सब कुछ नीलाम हो चुका था।

1857 ई० में हकीम सैयद फ़िदाये रसूल जाफ़री अपने कुनबे की क़त्लो ग़ारत गरी का बदला लेने के लिये नाना साहब बिठूर के साथ हो लिये और अंग्रेज़ो की सारी फ़ौज को कानपुर से खदेड़ दिया। जब जनरल हियूलॉक ने नाना साहब को नेपाल भेज दिया तो आप नासिक चले गये जहाँ आपने कुतबुल मदार ﵁ के चिल्ले शरीफ़ पर पनाह ली और फ़क़ीरों को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ भड़काया फ़क़ीरों को मुनज़्ज़म करने के बाद आप मकनपुर चले आये।

मजनूँ शाह की गढ़ी हो या बुद्धू तकिया अंग्रेज़ों की कोठी हो या ख़ाने आलम मियाँ की हवेलियाँ और क़िला हालाते ज़माना के थपेड़े बरदाश्त न कर सके आज कुछ निशानियाँ बाक़ी हैं। मसलन **26** शहीदों के मज़ारात हवेली में थे जो अब मवेशी अस्पताल के पास हैं। हवेली की जगह मकनपुर का सद्र बाज़ार, मवेशी अस्पताल, कन्या विद्यालय, पंचायत घर, दुकाने, मेला तहसील वग़ैरह बना हुआ है। मेला तहसील से मिली हुयी वह मस्जिद अभी महफ़ूज़ है जिस्में हवेली की मसतूरात नमाज़ अदा करती थीं। मकनपुर शरीफ़ के कुछ नाम नेहाद सियासत दानों ने जान बूझ कर इस धरोहर को पंचायत में देकर इन शहीदों की निशानियों की मिट्टी ख़राब कर दी है। अफ़सोस कि प्राइमरी एजूकेशन के इतिहास में आज़ादी की इस जंग को एक जुमले में ही समेंट दिया गया।

"प्लासी की जंग के दौरान संयासियों और फ़क़ीरों ने भी आज़ादी के लिये जिहाद किया।

आजके तारीख़ नवीस भी पूरा क्रेडिट अपने रिष्तेदारों वग़ैरह को ही देना चाहते हैं। ख़ुदा जाने इन्हें मदारियों, मदारी फ़क़ीरों, सिलसिलय आलिया मदारिया से मुन्सलिक आज़ादी के इन दीवानों से कौन सी दुष्मनी है जो इनका नाम आते ही भड़क उठते हैं।

शैतानी किताब

फ़ारूक़े आज़म रज़ी० से मरवी है,''फ़रमाया रसूलल्लाह सल्ल० ने
كل نسبٍ و حسبٍ يتقطع بالموت الا نسبى و حسبى

यानी मरने के बाद हर नसब व हसब मुनक़ता हो जाता है मगर मेरा नसब व हसब बाक़ी रहता है।

हम देखते हैं कि ह० मदारुल आलमीन ؓ की ज़ाते ग्रामी **5/6** वास्तों से रहमतुल्लिलआलमीन ﷺ से मुनसलिक व मरबूत है हसबी नसबी एतबार से हसनी और हुसैनी हैं कुर्बते उज़्मा के एतबार से उवैसी मुशरब हैं वलायत के आख़री आला दर्जे पर फ़ायज़ हैं ऐसी अज़ीम शख़्सियत के लिये अगर कोई शख़्स बोहतान बॉधे झूठी कहानी गढ़े और कहे कि आप का सिलसिला सोख़्त हो गया तो वह शख़्स क्या होगा जबकि रसूल ﷺ से मुनसलिक हर सिलसिला क़यामत तक क़ायम रहेगा जिसका कुरानो हदीस दोनो गवाह हैं।

इसी तरह का एक शगूफ़ा मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी ने अपनी शैतानी किताब''सबा सनाबिल''में पेश किया मैं इनकी तसनीफ़''सबा सनाबिल''जिसे बाज़

नाअहल ईमानियात में दाख़िल किये हुए हैं के दर्जाज़ैल नुकात से सख़्ती के साथ इख़्तिलाफ़ करता हूँ ताहम यह कहने में हक़ ब जानिब हूँऔर मेरा यह अन्दाज़े फ़िक्र व बेबाकी एक ज़िम्मेदाराना तर्ज़े अमल भी है। ''सबा सनाबिल''बज़बान फ़ारसी **1301** हिजरी सफ़ा **63** सुम्बुला **2** दर्मियान पीरी मुरीदी-ज़ाते बारी तआला पर बोहतान कि हज़रत मख़्दूम ने रोज़े मीसाक़ निदाय الست و بربکم. पूरबीराग में सुनी सफ़ा **217** सुम्बुला **7** रसूल ﷺ पर बोहतान लगाते हुए कहा कि मेरे पीरों के समा का इन्कार रसूल ﷺ के समा का इन्कार है, सफ़ा **61** सु **2** हज़रते ख़िज़्र علیہ السلام की अहानत इस तरह कि महफ़िले समा में लोगों के जूतों की निगह बानी करते हैं من استخف نبیاًادہانه کفر का भी ख़्याल न रखा सफ़ा **63** सु० **2** निज़ाम उद्दीन औलिया की तौहीन करते हुए कि समा की आवाज़ पर अगर मीर ख़ुसरो क़व्वालों को न रोकें तो आप जनाज़े से बाहर आकर रक़्स करने लगते, सफ़ह **213** सु० हफ़्तुम पर हज़रत अली علیہ السلام और रसूल अल्लाह ﷺ पर तोहमते समा लगाई है। सफ़ह **170** व **171** सुम्बुला हफ़्तुम पर समा को नमाज़ से बेहतर बताया है। सफ़ह **201** सुम्बुला हफ़्तुम दर मुतफ़र्रिक़ात में हज़रत मख़दूम पर इल्ज़ाम लगाया है कि उन्हों ने क़ुरआने करीम को राग गौरीजीत में सुन्ने की तमन्ना जताई। सफ़ह **19** पर चौदह ख़ानवादों के सलासिले आलिया नक़्शबन्दिया, क़लन्दरिया, उवैसिया को जड़ से ख़त्म करने की कोशिश की है। सफ़ह **40** पर मुशाहीर जलीलुल क़द्र औलियाए किराम यानी ग़ौसो क़ुतुब की औलाद को फ़रेब दहन्दा तहरीर किया। सफ़ह **83** पर अपने पीर मीर शेख़ हुसैन को शराबी व भंग नोश और न आशनाए मुआर्फ़त लिखा सफ़ह **82** पर मख़दूम शेख़ सफ़ी क़ुदस सिर्रहु के ब्रादराने तरीक़त को हासिद व चुग़लख़ोर लिखा। सफ़ह **58** पर सिलसिलए चिश्तिया के जलीलुलक़द्र बुज़ुर्ग हज़रत शेख़ अली साबरी की निस्बत और ख़िलाफ़त पर हमला किया। सफ़ह **133** पर लाइलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूल अल्लाह लिख कर अपने ईमान का इज़हार किया। हासिले मक़सद-सफ़ह **41** पर सिराज उद्दीन सोख़्ता को जो आरिफ़े बिल्लाह थे क़ुतबुल मदार के तमाम मुरीदों को गुमराह करने की ख़िदमत सिपुर्द करते हुए लिखा है.....सिराज उद्दीन ने कहा तुम्हारी तलवार का वार

मैंने अपने ऊपर लिया लेकिन अपने मुरीद को नुक़सान पहुँचाना मैं दुरुस्त नहीं समझता। शाह मदार ने कहा मैं तुम्हें सोख़्त करता हूँ। शेख़ सिराज ने कहा हमने तुम्हारे जुमला मुरीदों को गुमराह कर दिया। शाह मदार ने कहा मैंने चन्द मुरीद किये हैं आज की तारीख़ से न किसी को मुरीद करूँगा न ख़िलाफ़त किसी को दी है न दूँगा। कहते हैं सिराज उद्दीन के जिस्म में सोज़िश पैदा हो गयी और तमाम उम्र उनका बातिन जलता रहा। फिर लिखा है यक़ीन हुआ कि उन्हों ने अपना सिलसिला ख़ुद ही बरहम कर दिया। बाद के शरपसन्द नाअहल और न वाक़िफ़ लोगों ने हज़रते कुतबुल मदार पर ये इल्ज़ाम लगाया है कि उन्हों ने अपने सिलसिले को ख़ुद सोख़्त कर लिया। ग़ौर कीजिए कि जब हज़रत शाह मदार ने सिराज उद्दीन को सोख़्त कह कर उनका ज़ाहिरो बातिन जला ही डाला तो उनमें मुरीदाने ज़िन्दा शाह मदार को गुमराह करने की ताक़त कहाँ रही और अगर मान भी लें ताक़त थी भी तो क्या कोई आरिफ़े बिल्लाह अपनी ज़बान से गुमराह करदेम के अल्फ़ाज़ निकाले गा शायद नहीं क्यों कि ये काम इब्लीस मर्दूद का है। दूसरी तरफ़ एक जलीलुलक़द्र वली कुतबुल मदार जिनके सिलसिले की शान का अन्दाज़ा नहीं उन पे ये इल्ज़ाम कि उन्हों ने ख़ुद अपने सिलसिले को बरहम कर दिया। इस तरह के गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कह कर ख़ुदा और रसूल की बारगाह में मातूब होना पसन्द करेगा। (झूटों पर ख़ुदा की लानत) अब्दुल वाहिद ने ये भी नहीं तय किया कि **5–6** वास्तों में से कौन सा जला डाला। मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी की तस्नीफ़ सबा सनाबिल का वो हिस्सा जिसकी वजह से ये मुख़ासमत कुतबुल मदार से हुयी और दर्जा बाला कहानी गढ़ी गयी सफ़ह **203** वक़ाए सन् **989** हिजरी लिखते हैं कि....फ़क़ीर कांटकोला से बराये ज़्यारते मज़ार फ़ायजुल अनवार बदीउल हक़ वद्दीन शाह मदार कुदस सिर्रहु मकनपुर पहुँचा और दामे इश्क़ में गिरिफ़्तार हो गया ग़ैरते इलाही ने चन्द लोगों को जो माशूक़ के हम क़ौम थे मुसल्लत कर दिया और **9** ज़ख़्म तलवार के मुतावातिर हाथ और कान्धे पर खाये.......। ये थी अस्ल मुख़ास्मत। अलग़रज़ वो शख़्स अंधेरे में है जो ये कहे कि कुतबुल मदार का सिलसिला जो छेः वास्तों से रसूल ﷺ तक पहुँचता है मुनक़ता हो गया किसी गढ़ी हुयी कहानी के तहत उसका ठिकाना जहन्नम।

मदार के मेले और उर्स : मदार के मेले और उर्स पूरी दुनिया में मनाये जाते हैं ख़ुतबये हुज्जतुल मदार की तारीख़ 6 जमादिउल मदार से 17 जमादिउल मदार 838 हिजरी की याद में पूरी दुनिया के कोने कोने में हज़रत बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार का उर्स मनाया जाता है और यही उर्स वहाँ के रस्मो रिवाज के मुताबिक़ याद किया जाने लगा और मेलों की शक्ल इख़्तियार कर ली जैसे मेरठ भरतपुर वग़ैरह के इलाक़े में ये उर्स छड़ियों के नाम से याद किया जाता है इसे मदार की छड़ियाँ कहते हैं ये मेला भरतपुर, आगरा,मेरठ,बरेली,बदायूँ वग़ैरह शहरों से होता हुआ मकनपुर शरीफ़ आता है इस मेले में लोग मिन्नत की बद्धी पहनते हैं सवाल यानी मन्क़बत शरीफ़ पढ़ते हैं मुराद पूरी होने पर बद्धी बढ़ाते हैं फिर नज़्रो नियाज़ करते हैं। .

जिन मुक़ामात पर रात को ये मेले होते हैं वहाँ ये चरागाँ या मदार के चराग़ कहलाते हैं इसमें चिराग़ ही चिराग़ नज़र आते हैं जिन मुक़ामात पर सन्दल की रस्म राएज है वहाँ इसे सन्दल का मेला कहते हैं। क़ायमगंज,शम्साबाद,फ़र्रुख़ाबाद के इलाक़े में ये मेला मेहदियों के नाम से मौसूम है इसे मदारुलआलमीन की मेहदियाँ कहते हैं। मगर सबब इन सब का मदार के मेले या उर्स ही है। .

ग़रज़ कि जहाँ भी आपके नामो लक़ब से मंसूब निशानियाँ हैं वहाँ 6 जमादिउल मदार से 17 जमादिउल मदार तक उर्स या इन तारीख़ों के आगे पीछे मेले होते हैं। मकनपुर शरीफ़ का उर्स दो हिस्सों में तक़सीम हो गया। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की रेहलत के बाद जब पहला उर्स मनाया गया उस वक़्त अरबी महीने के हिसाब से 17 जमादिउल अव्वल और माघ की बसन्त पंचमी थी चूँकि अरबी महीने का ताल्लुक़ चाँद से है और हिन्दी महीने का मौसम से इस लिए दुसरे साल कुछ लोग 17 जमादिउल अव्वल को और कुछ लोग माघ की बसन्त पंचमी हाज़िरे आस्ताना हुए। (जमादिउल अव्वल को जमादिउल मदार और मदार का चाँद और महीने को मदार का महीना कहते हैं) .

लिहाज़ा पहला उर्स 6 जमादिउल मदार से 17 जमादिउल मदार तक मनाया जाता है उर्स शरीफ़ बड़े मेले के नाम से भी मशहूर है। मुल्क और बैरून मुमालिक से लाखों की तादाद में लोग शिरकत करते हैं। मुग़ल बादशाह दारा शिकोह ने अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया में तहरीर फ़रमाया है कि मकनपुर शरीफ़ के उर्स में पाँच छेः लाख का मजमा होता है। ये उस वक़्त की बात है

जब आने जाने के वसाएल बहुत कम थे। सोचिए इस वक़्त का हाल क्या होगा उर्स शरीफ़ के मख़्सूस मरासिम में धम्माल, कश्ती व डेग का मंज़र, इजलासे कुल वग़ैरह ख़ास हैं।

दूसरा मेला माघ की बसन्त पंचमी को होता है ये तक़रीबन एक माह तक चलता है ये उत्तर भारत का अज़ीमुश्शान मेंला है ये छोटे मेले के नाम से मशहूर है। इस उर्स ने तिजारती मेले का रूप ले लिया। ख़ास बसन्त पंचमी को कुल शरीफ़ होता है मेले की सबसे बड़ी ख़ूबी ये है कि हर क़िस्म के जानवरों और अशिया का बाज़ार अलग अलग लगता है इसमें उत्तर प्रदेश के लगभग हर ज़िले की पुलिस का माकूल इन्तिज़ाम रहता है।इस मेले के कुछ ख़ास प्रोग्राम इस तरह हैं कुल हिन्द मुशायरा, अख़िल भारतीय कवि सम्मेलन, आल इण्डिया म्युज़िक कानफ़्रेन्स, कुल शरीफ़, घुड़ दौड़ नुमाइश वग़ैरह ।

मलंग

मलंग के लुग्वी मानी मस्तो मुजर्रद ख़ुद रफ़्ता और बेबाक के हैं और ये इस्तेलाह सिलसिलए आलिया मदारिया की है इसके अलावा पूरी दुनिया जितने भी सिलसिले हैं उनमें मलंग नहीं होते मलंग हज़रात तजरीदी ज़िन्दगियॉ गुज़ारते हैं और अस्हाबे सुफ़्फ़ा की तरह ज़िक्रे फिकरे ख़ुदा वन्दी इबादते ज़ाहिरी व बातनी में मुस्तग़रक़ रहते हैं और उन्हीं की तरह शादियॉ भी नहीं करते। हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद से मलंगाने ज़ीशान के हफ़्त गिरोह ख़ादिमान दीवानगान, तालिबान, आशिक़ान, अजमलियान, हिसामयान और मख़दूमियान का इजरा हुआ। इनमें चार गिरोह ख़ादिमान, दीवानगान, आशिक़ान और तालिबान को तो ख़ास मदारी निस्बतें हासिल हैं और मलंगान हज़रात इन्हीं चार गिरोह से ताल्लुक़ रखते हैं सिलसिलए आलिया मदारिया की तारीख़ में ब्यान किया गया है कि हज़रत जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती के सर पर एक मर्तबा हज़रत सैयद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार ने अपना हाथ रख कर दुआयें फ़रमाई थी। आदाबे मुहब्बत में जाने मन ने अपने सर से बालों को तमाम उम्र जुदा न किया यही वजह है कि ये मलंग हज़रात अपने शेख़ की इत्तेबा करते हुए अपने सर से बालों को जुदा नहीं करते। इनके बालों को इस्तिलाहे फुक़रा में ‘‘भेग’’ कहते

कहते हैं। बाज़ के 36 हाथ लम्बे बाल भी देखे गये हैं। ये मलंगाने किराम बड़े ही बा कमाल होते हैं। हिन्दुस्तान में ही बे शुमार मलंगाने किराम गुज़रे हैं इनमें बहुत ही मशहूरो मारूफ़ हज़रत अब्दुर्रहमान उर्फ़ हाजी बाबा मलंग कल्यान बम्बई हज़रत शेख़ अबुल हस्नात वली ज़िन्दानी शाह मलंग उर्फ़ मंगू पीर कराची पाकिस्तान, हज़रत कुतबे ग़ौरी कोलार मैसूर, लक्कड़ शाह फक्कड़ शाह बहराइच और मोमिन मदार शिंघाई चीन वग़ैरह।

मलंग हज़रात में सबसे पहले गिरोहे दीवानगान से तर्को तजरीद की ज़िन्दगी का आग़ाज़ हुआ इससे पहले दुनिया इस इस्तिलाह के वाज़ेह मफ़हूम से वाक़िफ़ न थी बाद में दूसरे गिरोह के तरीक़ याफ़्ता बुज़ुर्ग भी इस ज़िन्दगी में दाख़िल हो गये और मलंग के लक़ब से मुलक़ब हुए।

बालों की शरई हैसियत :तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत अबू राफ़े ﷺ की एक रवाएत से मालूम हुआ कि हज़रत इमाम हसन बिन अली عليه السلام के बाल इतने लम्बे थे कि वो जूड़ा बान्धते थे।

इमाम मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه की एक रवायत से मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه के बाल काफ़ी लम्बे थे वो भी जूड़ा बान्धते थे।

अबू दाऊद में नबी करीम ﷺ ने बालों को बान्ध कर नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है मदारिजुन्नबुव्वत में है कि रसूलल्लाह ﷺ ने अबू महजूरा رضي الله عنه के बालों में तौसी के लिए दुआ फ़रमाई।

कुतुबे फ़िक़ाह मसलन शरह वक़ाया, दुर्रुल मुख़्तार, हिदाया वग़ैरह में लम्बे बालों को सर पर लपेट कर नमाज़ पढ़ने से ममानियत की गयी है।

वज़ू और गुस्ल :मलंग हज़रात अपने बालों पर भभूत (राख) मलते हैं। ये वज़ू करते वक़्त जब मसा करते हैं तो पानी राख के ज़रिए जस्ता जस्ता तमाम सर में पहुँच जाता है इसी तरह गुस्ल का पानी भी तमाम को तर करने में ये भभूत मदद करता है।

लिबास :मलंगाने किराम एक क़िस्म का एहराम पहनते हैं। ये कसौते सियाह

जो इब्राहीम عليه السلام को अता किया गया था पर मबनी होता है जो कहीं से भी सिला नहीं होता।

तरीक़ :हज़रत बायज़ीद बुस्तामी رضي الله عنه की राएज कर्दा तरीक़ पर मलंगाने किराम को तरीक़ दी जाती है मसलन सर, भौं, मूछ और दाढ़ी से दो दो चार चार बालों को रुसूम के तौर पर काटा जाता है फिर कश्कोल देकर भीख मंगवाई जाती है ताकि ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का ख़ात्मा हो जाए इसके बाद एहराम पहनाकर शाह (बादशाह) का ख़िताब इनायत फ़रमाया जाता है।

लैपालक पीर :लोग अपने बच्चों को दीन की इशाअत के लिए हज़रत कुतबुल मदार رضي الله عنه और उनके ख़ुल्फ़ा के सिपुर्द कर दिया करते थे हनूज़ आज भी ये सिलसिला जारी है। हज़रत कुतबुल मदार رضي الله عنه के नाम पर दीन की इशाअत की ख़ातिर अल्लाह की रज़ा के लिए अपने जिगर पारों को सिलसिलए तबक़ातिया मदारिया को नज़्र कर दिया करते हैं जो ख़ालिस दीने इस्लाम व सिलसिलए आलिया मदारिया के लिए वक़्फ़ हो जाता है, चूँकि आप उनके लिए मुईनो मददगार साबित होते हैं इस लिए हज़रत ज़िन्दा शाह मदार رضي الله عنه को बच्चों का लै पालक पीर भी कहा जाता है।

दुआए बश्मुख़

اَللّٰھُمَّ یَابَشْمَخُ بَشْمَخُ ذَالھاَ مُوْ شِیطِیُشْنَ ْ اَللّٰھُمَّ یَاذَانُوْ اَمَلْخُوْثُوْ اَدَمُوْثُ دَائِمُوْنَ ْ

اَللّٰھُمَّ یَاخِیُثُوْ اَمَیُمُوْنَ اَرْقِشْ دَارَ عِلّیَوْنَ ْ اَللّٰھُمَّ یَارَحُمِیُثَ رَھْلِیُلُوْنَ مَیُتَطَرُوْنَ ْ

اَللّٰھُمَّ یَارَخُتِیُثُوْ اَاخُلَاقَ اَخُلَا قُوْنَ ْ اَللّٰھُمَّ یَارَخُمُوْثُ اَرْخِیُمَا اَرُخِیُمُوْنَ ْ

اَللّٰھُمَّ یَااھیًا اَشْرَا ھیًا اَذُوْنِیُ اَصْبَاؤُث اَصْبَاوثُونَ ْ اَللّٰھُمَّ یَانُوْرُ اَرْغِشْ اَرُغِیُ تَتْلِیُثُوْنَ ْ

اَللّٰھُمَّ یَااِشْبَرُ اَسُمَآءُ اَسُمَآءُ وْنَ ْ اَللّٰھُمَّ یَامَلِیُعوثَ اَمْلِیُخَا مَلْخَا مَلْخُوْنَ ْ

اَللّٰھُمَّ یَاعَلَامُ اَرُعِدُ یَرعی یُزِنُوْنَ ْ اَللّٰھُمَّ یَامَشْمَخُ مَشْمَخِیُثَا مَثَلَامُوْنَ ْ

سبحان من جعل خزائنة بین الکاف و النون انما امرہ اذاارادشیا ان یقول لہ

کُن فیکون ْ سبحان الذی بیدہ الملکوت کُل شی و الیہِ ترجعون ْ

दुरूदे मदारी

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلیٰ سَیِّدِنَا مَوْلَانَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

وَ اٰلِہٖ الْمَدَارِ الْبَدِیْعِ الْکَرِیْمْ

सन् मदारे आज़म

सन् हिजरी का इजरा मुहम्मद साहब की मक्के से मदीने की हिजरत से हुआ और साल की पहली तारीख़ मुहर्रम महीने की पहली है इसी तरह सन् मदारे आज़म का आग़ाज़ हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की वलादत सन् 242 हिजरी से हुआ साल पहली तारीख़ यकुम शव्वाल यानी सादिरुल बदी से हुआ । सन् मदारे आज़म का आग़ाज़ा शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़मीरी बग़दादी ने किया।

जमाले बदी

अरबी महीने	मदारी महीने	चाँद के महीने
मुहर्रमुल हराम	सादिरुल बदी	मुहर्रम का चाँद
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र	क़ादिरुल बदी	तीरा तेज़ी का चाँद
रबीउल अव्वल	शाकिरुल बदी	बारह वफ़ात का चाँद
रबीउस सानी	नासिरुल बदी	हमसाये का चाँद
जमादिउल अव्वल	सायमुद्दहर	मदार का चाँद
जमादिउस सानी	यासिरुल अव्वल	शेख़ बुर्राक़ का चाँद
रजबुल मु रजब	यासिरुस्सानी	रजब का चाँद
शाबानुल मुअज़्ज़म	आमिरुल अव्वल	शबे बारात का चाँद
रमज़ानुल मुबारक	आमिरुल आख़िर	रमज़ान का चाँद
शव्वालुल मुकर्रम	तरक़ीमुल अरफ़ा	ईद का चाँद
ज़ी क़ादह	अज़बुल बयान	ख़ालिक़ का चाँद
ज़िल हज्ज	फ़ाख़िरुल जिन्नाह	बक़रा ईद का चाँद

जमादिउल अव्वल को जमादिउल मदार भी कहते हैं

जदीद मदारे आज़म

मार्फ़त का सरल तरीक़ा

मदारिया साँप सीढ़ी

फ़ैज़ अनवर, यावर अल्ताफ़,सिदरा फ़रहीन और माहिरा जाफ़रीन की ख़्वाहिश पर मारफ़त का आसान तरीक़ा पेश करते हुए फ़ख़्र हो रहा है उम्मीद है कि मुन्दर्जा बाला बच्चों के साथ दीगर बच्चे भी इस से फ़ायदा उठायेंगे।

डा०आई०एच०जाफ़री''आमिर''

अर्श	फ़नाफ़िल्लाह	तकब्बुरे शैतानी	कुतबुल मदार	कुतुब	ग़ीबत	ग़ौस	मक्र	नुक़बा	मुल्के मुहम्मद
बाहूत	सियाहूत	महमूद शाही	जन्नत	नसीर अनाक	औताद	[illegible]	अब्दाल	नुजबा	मोमिन
हुब्बे मुहम्मद	आलमे हैरत	नासूत	मलकूत	जबरूत	फ़ेले शैतानी	लाहूत	दिलआज़ारी	हाहूत	साहबे आलम
इज़्ज़त	हवस	दौलत	गुनाह	आतश	कुफ़्र	ईमान	मेहनत	उक़बा	करामत
इताबे इलाही	क़यामत	शहादत	फ़ना फ़िल्लाह	फ़ना फ़िर्रसूल	मोजिज़ा	बे इल्म	रियाज़त	अमानत	[illegible]
मारफ़त	आलमे बाला	तरीक़त	वलायत	[illegible]	सदक़ा	ख़ैरात	ज़कात	सख़ावत	शुजाअत
हक़ीक़त	हुक्म	वलादत	ख़ाक	बाद	आब	जिहालत	बुग़्ज	कीना	इश्क़े मजाज़ी
शरीअत	महव	फ़ेले बद	दोज़ख़	वहशत	आराम	सवाब	साहबे तक़वा	यक़ीन	हसरत
शहवत	ज़िल्लत	मेहनत	हसद	अमानत	मेहनत	अफ़आले हुस्ना	मस्ती	दरिया	ज़मीन
तहतुस्सरा	अदम	नस्ले आदम	सोहबते नेक	रज़ाये हक़	मसर्रत	मुक़ामें ग़ज़ब	वहदत	इश्क़े हक़ीक़ी	हादी

राक़िमुल हुरूफ़ का जद्दिया शजरा

शजरह

मय वफ़ात

यह वो पाक शजरा है जसकी जड़ ज़मीन में है शाख़ें आस्मान पर

हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम	12 रबीउन्नूर 11 हिजरी
हज़रत फ़ात्मतज़्ज़हरा रज़ीअल्लाह तआला अन्हा	3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी मंगल
हज़रत सैयदना अली मुरतिज़ा करमुल्लाह वज्ह	12 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी यकशम्बा
हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम	10 मुहर्रमुल हराम 16 हिजरी जुमा मुबारक
हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	18 मुहर्रमुल हराम 95 हिजरी
हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	7 ज़िल्हज्जा 114 हिजरी जुमा मुबारक
हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	15 रजबुलमुरजब 148 हिजरी पीर
हज़रत सैयद इस्माईल रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	6 रबीउल अव्वल 131 हिजरी मंगल
हज़रत सैयदना मुहम्मद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	17 7मादिउल अव्वल 147 हिजरी जुमेरात
हज़रत सैयदना इस्माईल सानी रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	यकुम रमज़ानुल मुबारक 221 हिजरी जुमेरात
हज़रत सैयद ज़हीर उद्दीन अहमद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	14 ज़िलहज्ज 238 हिजरी बुध
हज़रत सैयद बहा उद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	22 रजबुल मुरजब 275 हिजरी हफ़ता
हज़रत क़ाज़ी सैयद क़िदवत उद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	10 मुहर्रमुल हराम 316 हिजरी मंगल
हज़रत सैयद महमूद उद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	25 शाबान 296 हिजरी जुमा मुबारक
हज़रत सैयद जाफ़र रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	22 रजबुलमुरजब 387 जुमा मुबारक
हज़रत सैयद मुहम्मद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	25 शव्वालुल मोअज़्ज़म 392 हिजरी पीर
हज़रत सैयद अबू सईद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	यकुम सफ़रुलमुज़फ़्फ़र 400 हिजरी जुमेरात
हज़रत सैयद निज़ामुद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	17 जमादिउलऊला 414 हिजरी जुमेरात
हज़रत सैयद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	12 शव्वालुलमुकर्रम 442 हिजरी इतवार
हज़रत सैयद इस्हाक़ रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	16 जमादिउलऊला 491 हिजरी इतवार
हज़रत सैयद मुहम्मद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	12 रबीउल अव्वल 500 हिजरी पीर
हज़रत सैयद इस्माईल रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	12 रबीउल अव्वल 575 हिजरी मंगल
हज़रत सैयद इब्राहीम रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद मुहम्मद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद मुहम्मद दाउद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद मुहम्मद रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद यासीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद वजीह उद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद कबीर उद्दीन रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत सैयद अब्दुल्लाह रज़ीअल्लाह तआला अन्ह	नामालूम
हज़रत ख़्वाजा सैयद मुहम्मद अरग़ून रहमतुल्लाह अलैह	6 जमादिउस्सानी 891 हिजरी
हज़रत सैयद महमूद रहमतुल्लाह अलैह	13 रजब 922 हिजरी
हज़रत सैयद अबुल मुज़फ़्फ़र रहमतुल्लाह अलैह	सफ़र 970 हिजरी
हज़रत सैयद मुहम्मद उमर रहमतुल्लाह अलैह	25 रमज़ान 997 हिजरी
हज़रत सैयद अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह	13 शाबान 1044 हिजरी
हज़रत सैयद फ़ाज़िल फूल महल्ली रहमतुल्लाह अलैह	10 शव्वाल 1070 हिजरी
हज़रत सैयद मुहम्मद मारूफ़ रहमतुल्लाह अलैह	21 ज़ीक़ादह 1080 हिजरी
हज़रत सैयद दाउद रहमतुल्लाह अलैह	13 मुहर्रम 1101 हिजरी
हज़रत सैयद अब्दुल फतेह रहमतुल्लाह अलैह	यकुम मुहर्रम 1165 हिजरी
हज़रत सैयद अब्दुर्रसूल रहमतुल्लाह अलैह	7 शाबान 1197 हिजरी
हज़रत सैयद अज़ीज़ उल्लाह रहमतुल्लाह अलैह	25 सफ़र 1215 हिजरी
हज़रत सैयद अब्दुल ग़नी रहमतुल्लाह अलैह	25 रबीउल अव्वल 1225 हिजरी
हज़रत सैयद अब्दुल आज़म रहमतुल्लाह अलैह	17 जमादिउलऊला 1233 हिजरी
हज़रत सैयद ख़ाने आलम शहीद रहमतुल्लाह अलैह	12 मुहर्रम 1243 हिजरी
हज़रत अल्लामा हकीम सैयद फ़िदाये रसूल रहमतुल्लाह अलैह	1278 हिजरी
हज़रत हकीम क़ुतबेआलम सैयद अल्ताफ़ हुसैन रहमतुल्लाह अलैह	1371 हिजरी

रहबरे क़ौमो मिल्लत अल्हाज डा० सैयद मुरतिज़ा हुसैन जाफ़री

डा० इक़तिदा हुसैन जाफ़री ''आमिर''

मुहम्मद फ़ैज़ अनवर जाफ़री व यावर अल्ताफ़ जाफ़री

सलाम मदारे आज़म

अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम फ़ात्मा, हसनैन, अली के माह पारे अस्सलाम

लौह, कुर्सी और क़लम पर भी तुझे है इख़्तियार
और ज़मीनो आस्मॉं को तेरे दम से है क़रार
हैं सताइश कर रहे तेरी फ़रिश्ते बे शुमार

कर रहे हैं तेरी अज़मत को ये सारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

तुझ में है सिद्दीक़े अकबर की सदाक़त रूनुमा
है उमर फ़ारूक़ की तुझ में अदालत की अदा
और उसमाने ग़नी है सख़ावत बे बहा

बहरे इल्मे मुरतिज़ा के बहते धारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

ठोकरों से तुमने मुर्दों को भी ज़िन्दा करदिया
ऑंख अन्धे को मिली और बॉंझ को बेटा मिला
तेरे दर पर जो भी आया उसका दामन भर गया

ऐ ग़रीबों बे सहारों के सहारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

तू है मिफ़्ताहे अवारिज़ तू है मिस्बाहुल हुदा
तुझसा औसाफ़े हमीदा में नहीं है दूसरा
समदियत के मर्तबे ने तुझ को बाला कर दिया

ऐ क़ुराने इल्मो हिक्मत के सिपारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

बा यज़ीदे पाक से है तेरी निस्बत बिल यक़ीं
औलिया सब तेरे ताबे हैं मदारुल आलमीं
दर पे सब आमिर खड़े हैं ख़म किये अपनी जबीं

फ़ात्मा सानी अली हलबी के प्यारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

तमामशुद